1361

(322)

32

34

Add

A

1361-MS.

1361 MS.

32

३२

१. ऊषा हरण कथा (राम दत्त) - कविता

२. एकादशी माहात्म्य ([illegible]) - गद्य

३. अनन्त व्रत की कथा (मेघ राज) - कविता

सम्वत् १९२२ वि०

॥ॐ॥
॥१॥

॥श्रीकृस्नायवासुदेवायनमः॥ श्रीराधाकृस्ना
यनमः॥ श्रीगणेशायनमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥
अथऊषाहरणकथालिष्यते॥ कवितः॥ ०

जाकीसक्तिपाइब्रह्माविस्नसिवसरस्वती
जाकीसक्तिपाइसेसधरनीधरतहै॥ जाकी
सक्तिपाइससिपोषककरतजगजाकीस
क्तिपाइभानतमकोंहरतहै॥ जाकीसक्तिपा
ईसरदागणपतिगुनी जाकीसक्तिपाईजग्त
जीवतमरतहै॥ अछिरअ०निंनअभैअ
मरउपादछांडितांहिआदिसक्तिकोंप्रना
महिंकरतहै॥ चौपई॥ प्रथमहिंसुमरोंसा
रदामाई॥ लंबोदरकेपरसोंपाई॥ रिषिव्या
सकथाउनमानी॥ भाषोलालचकथाप्र
मानीं॥ जोकैसुनेधर्मअधिकाई॥ दानवजु
द्धकीवहुतवडाई॥ दोहा॥ चितदैसुनौं
न्नपतिजुधंन्यपरीछतराइ॥ व्यासहृदय
सीतलभयोहरिरसपीयोअघाइ॥ चौप
ई॥ अमरकोवकेपिंगलनहिंदेषा॥ पंचसि
धतहांसारविसेषा॥ रामदाससंतसंगत
पाई॥ भाषाकहिहरिकीरतिगाई॥ परमस
यानेवूरुतवाता॥ तुमकोंपरसनभयेवि

धाता॥ आदिदेसनु म्है रोकहहोई॥ सो मोसो
कहियै निजु सोई॥ नेमा कहत रामको दासा
॥देस मालवो अति सुषवासा॥ सहरसिरों
जनि कटसो हाउ॥ जनम भुंमि इमल्लानी
सोई गांउ॥ पिता मनोहरदास विधाता॥ वि
रमति जनम दियो है माता॥ रामदास तिन
को सुत आई॥ कृस्न नाम की भक्ति है जाही॥
॥दोहा॥ लाल दास लालच कथा सोधि भा
त गवै सातु॥ रामदास की बुधि लघु पंडित क
विन अभारू॥ तथा॥ न्रप पूछै सुषदेव सो
मुनि सनाथ कर मोहि॥ ऊषा अनुरुध की
कथा वरनि सुनावो मोहि॥ चौपई॥ कैसे वि
आह रिसे गई॥ कैसें भेट कुवर सौं भई॥ कौंन
पुंन्य वानासुर कीयो॥ घर वैठे हरि दरसन
दियो॥ सिव ब्रह्मा मुनि ध्यान लगावे॥ आ
दि पुरिष को अंतु न पावे॥ किहिं प्रताप हरि
पूजे पाई॥ सो मोसो कहिये समुझाई॥ श्री सु
षदेव उवाच॥ चौपई॥ अव मै कथा कहो
परिवाना॥ सुनों श्रवन दै न्रपति सुजाना॥
पोढे प्रभु वैकुंठ निवासा॥ कोटि भान की जो
ति प्रकासा॥ दूजे विजे पोरियार षवारा॥ ति

उ० ॥ निपे प्रभु की दया अपारा ॥ ब्रह्मा सुत सनकि
२ ॥ दिक आवैं ॥ क्रम्म कला कछु कही न जाई ॥
सो चत अंग फुरहरी आई ॥ तीनि लोक मे दे
खत सोई ॥ मो सो जुधन जीते कोई ॥ ईजे विजे
पोरिया हमारे ॥ राषत सदां पौर रषवारे ॥ ये जो
धा दोउ वली अपारा ॥ ईन कौं गर्भ वडो अ
धिकारा ॥ इन कौं प्रभु यह मंत्र विचारा ॥ सन
कादिक आए तिनि वारा ॥ छड़ी तिरछी दई
तिनी आंना ॥ विना हुकम पावो नहि जाना ॥
तब वोले सनकादिक सोई ॥ तीनि लोक मैं
छरी न होई ॥ पांच वर्ष को हम वैरागी ॥ असु
र वुधि कछू तुम कौं लागी ॥ दई सराप परो स
अधिकाई ॥ नि हवै असुर रहो हु तुम जाई ॥
अंतरजामी जानी तवहीं ॥ सनकादिक ढिग
आए जव हीं ॥ आडी छरी दई कर आना ॥ द
ई सराप वहुरि पछिताना ॥ ईजै विजै तव जो
रे हाथा ॥ हम सोक हो आपकी गाथा ॥ कैसें
मुक्ति हमारी होई ॥ सो मो सों कहिये मुनि सो
ई ॥ अहो देव हमरी वुधि ओछी ॥ कीजे षोगि
हमारी मोछी ॥ सनकादिक कहियो समुझा
ई ॥ हरि की भक्त करो चित लाई ॥ सात जनम

हरसो नितुला वहु॥ करो भक्ति निहचै हरि पावहु॥ दोहा॥ तीनि जनम मैं हरि मिलैं भूपति असुर सभाई॥ तुम कारण प्रभु वपु धरै संतनि के सुषदाई॥ चौपई॥ प्रथम जन्म हिरणाकुश भयेऊ॥ तासु बंधु प्रथवी लेगयऊ॥ दूजै रावन जो धावां कौं॥ दससिर बीसभुजा वलना कौं॥ लंका राज करै गोसाई॥ रामरूप हुर मारै सोई॥ जीतै दंत वक्र सिसुपाला॥ मारि मुक्ति करिहै नंदलाला॥ दोहा॥ सनकादिक की श्राप सुनि भये असुर प्रचंड॥ जग्य धर्म व्रत मेटि कैं जीते तीनन्यो कनो षंड॥ चौपई॥ नव ब्रह्मा की सेवा कीन्ही॥ ब्रह्मा हर्षि आसि का दीन्ही॥ घर बाहर मारो नहि मरै॥ काटे कै रैन जो रैजरै॥ सीत घाम व्यापै नहिं सीसा॥ निरभै आवु धली ये छतीसा॥ ऐसो बली हिरनाकुस भयेउ॥ त्रभुवन जीति तासु नैं लयेउ॥ सुर अरु असुर सकल भुवपाला॥ छ्योंं लोक सुरपति वेहाला॥ जग्यि धर्म हूजो करैन कोई॥ महाप्रवल हिरनाकुष होई॥ चारि पुत्र ता कै परिवाना॥ जेठो सुत पेहिलाद सुजाना॥ राजा मोहु वहु

॥३०॥ तबिधिकीन्हा ॥ चारोपुत्रपठावनदीन्हा ॥ सं-
॥३॥ ग्रामरकादीयेबुलाई ॥ तुमपहिलाहपठावोभा-
ई ॥ अतिसुंदरसोऊराजाकुवारा ॥ पढिवेकोप-
ठएचटसारा ॥ सिवसिवलिषिपाटीमेदी-
न्हा ॥ बांचतकुवरमहादुषकीन्हा ॥ सिवअ-
क्षिरसबमेटिकुवारा ॥ लिषेराममंउकसिरज-
नहारा ॥ लिषेरूक्षरघुपतिसुषदाता ॥ प्रभु-
केचेरनकमलचितराषा ॥ लेपाटिपांडेकौं
दीन्हा ॥ बाचतविप्रमहारिसकीन्हा ॥ ऐसोतु-
मजीनिपटैकुवारा ॥ रामरूक्षसेवैतुहमा-
रा ॥ हिरनाकुशनृपसुनिहैसोई ॥ तुमकौंना-
समहादुषहोई ॥ कहैविप्रसोराजकुवारा ॥
रूक्षविनामिथ्यासिंसारा ॥ रूक्षविनारू-
ठेधनुधामा ॥ रूक्षविनादेहीवेकामा ॥
संतसहाईअसुरसवठेउ ॥ रूठेकहापढ-
वोपांडे ॥ नृपपहिलादसबसषाबुलाए ॥
रूक्षमंत्रकहिकेसमुझाए ॥ जोमैपढैसुप-
ढोकुवारा ॥ रूक्षऋपासेउतरोपारा ॥ रू-
क्षऋपाध्रुवध्यानलगायो ॥ भयोअटल
सुषनारदगायो ॥ सोनारदहमसोसवभा-
षो ॥ तबमेंरूक्षचरनचितराषो ॥ इतनीसु-

निद्रुम भयो उदासा॥ गयो जहा हिरनाकुश
पासा॥ कहैा न्रपति सो सर्व विहारा॥ राम पढ़
ै सोई पुत्र तुम्हारा॥ सिव को नाम न लेत कु
वारा॥ सभा सहित तत्र ट सार विगारा॥ विप्र व
चन सुनि मंत्र विचारा॥ यह पुनि निश्चै सत्र
ह मारा॥ श्रीपरीछत उवाच॥ चौपई॥ स्वामी
सुष मुनि पूछौं तोही॥ संसौ भयो कृष्णु जि यमो
ही॥ असुर वंस सोई राजकुवारा॥ ग्यान भयो
सो कैं न विचारा॥ कवन पुन्य पिहलाद जो
कीना॥ तिनि कौं कृस्न अभै पद दीना॥ कृस्न
भगति तिनि के चित भाई॥ सो मो सौं कहिये
चित लाई॥ श्रीसुषदेवोवाच॥ सुनि राजा ये
ह वचन विचारा॥ रहै असुर पुर भगत कुम्हा
रा॥ जा के धर्म कथा अधिकाई॥ हिरनाकुश
के नग्र रहाई॥ गुरा पितु भक्त जा के निजु होई
॥ और दूसरो लषे न कोई॥ वा सन बहु विधि
गढै अपारा॥ मांडि मूंजि धर राषे वारा॥
विवि सुत ले मंजारी आई॥ और दूसरे षव
रि न पाई॥ गयो कुम्हार कषी कौं जव हीं॥ दू
रिनि कासि गयो षवर भई जव हीं॥ रूषी कु
म्हारि अवा लगायो॥ तिहि वासर कुम्हा

॥ऊं०॥
॥ ४ ॥

रघर आयौ॥ तबै तु रत कुम्हारि बुलाई॥ सु-
नि सब हीनि कीनी दुचिताई॥ दोऊ कर ध्याते
हन तकुम्हारा॥ चलौ गिरण तब आवा मझा
रा॥ तब कुम्हारी समुझावति सोई॥ हरि भग
ति बिनु मुक्ति न होई॥ प्रभु कौ सुमरण करि बि
तुल्याई॥ प्रभु समरथ सो लेहि बचाई॥ षेल
त कुवर आयो तहा॥ कर तकुम्हार भक्ति नित
तहां॥ तब हि कुवर कुम्हार बुलायो॥ का है ते-
ताल मृदंग बजायो॥ सो चेवचन मो सो ष-
हि सोई॥ बिना साचै कछु सिधि न होई॥ त-
ब कुम्हार बोलो ब्योहारा॥ मंजारी सुत है आवा
मझारा॥ धोषे धरे मे आवा मझारी॥ निहचै
रछ्या करै मुरारी॥ भगति भाव प्रहलाद बि
चारा॥ तुम कुम्हार गुरु हो हु हमारा॥ या कौ
आवा सिरानो जब ही॥ जीवत चेंनू वा निक
से तब ही॥ धाई दे लाई चाटन लागी॥ कुवर
ग्यान पद भयो वैरागी॥ तुम कुम्हार गुरु हो हु
हमारा॥ भगति बिना यह धृग संसारा॥ ॰॥
॥दोहा॥ जिन कुम्हार उपदेस दे भयो भगति-
कौ भाव॥ कथा कहत सुषदेव जी सुनो परी
छत राव॥ चौपई॥ गनु आसन नार उप

कारी॥ सुनि यह राजा साषि हमारी॥ अंतर
कथा सुनाई जब ही॥ सुनि राजा सुष पायो त
बही॥ दोहा॥ रामदास ने मू कहे सुनो भगत की
साषी॥ धन्य धन्य प्रह्लाद धुव भले लेल मेप्र
भु राषि॥ चौपई॥ हिरनाकुश प्रहलाद बुला
यो॥ कहे सुत सत्रु ग्यान कहा पायो॥ राम कहा
सों वैरु हमारा॥ सो निश्चै तुम पढो कुमारा॥ सि
वके सबद सुनावो मोही॥ देहुं राजु मैं सरबसु
तोही॥ प्रह्लादोवाच॥ चौपई॥ सुनि राजा मे
री निज बाता॥ मो हि सिषायो त्रिभुवन नाथा
जि नि पानी ते पिंड सम्हारा॥ अनुभव सकु
ल विस्व विस्तारा॥ हरि विनु राजु पाइ कहा
कीजे॥ हर विनु जन्म अकार्थ छीजे॥ हिरना
कुश सुने सुत के बेना॥ अति रिस भरो श्र जल
भये नैना॥ अरे कुवंरे रिस लागी मोही॥ मा
रत को न छुडावत तोही॥ सकल असुर मि
लि मंत्र विचारा॥ पकरे कुवर गहे रे देह अ
रो॥ गेह रे जलते थल नहो इगयो॥ देषत सबै
अचंभो भयो॥ बाऊ नि सो षि लीयो सब पा
नी॥ अति गेह रो तहा धूरि उडानी॥ हिर्नाकु
श सों कहियो जाई॥ राम कहत जल तु गयो॥

॥ ऊ० ॥
॥ ५ ॥

सुषाई ॥ तव हिरनाकुश उठो रिसाई ॥ याकों
गिरते देउ गिराई ॥ गिरि ते ऊपरि सबनि मिलि
द्यौ ॥ धरती धाई अंकु भरि लयौ ॥ जौं जन-
नी बालकु लिये गोद ॥ त्यौं प्रहलाद अनंद
वि मोद ॥ गिरि ते उपरि मरतु न हियारो ॥ बहु
रि जाई पावक महु डारो ॥ पावक प्रबल लभ मा
चहु पासा ॥ उठी अगिनि की भर अकासा ॥ त
पै तेज सामि निर्वल वेषा ॥ यो प्रहलाद आगि
नि मे देषा ॥ आसपास प्रभु दूबज माई ॥ नहीं
भगत कों आंच न आई ॥ गरुड प्रतापसीत
ल तन्न भये ॥ असुर पकरि ले न्रप पे गये ॥ ऊ
॥ चेटक कहा दिषावत मोही ॥ वज्र षड्ग धा-
रि बाधौं तोही ॥ अजहूं मानु हमारी बाता ॥
अवनिजु करो मान को घाता ॥ मैं जीते सक
ल लोक के राई ॥ कहू राम की षबरि न पाई ॥
जौ तू मो कों देहि बताई ॥ तो देषत मैं मारों जा
ई ॥ प्रभु पुनि बंधु बैर सो ई सारौ ॥ राम हि स्ना
त षंड करि डारों ॥ तब बोल्यो प्रहलाद कुमा
रा ॥ कोंन राम को मारन हारा ॥ कहा सिंह फ
हा स्यार विचारा ॥ कहा बाजि पटु की बी-
सारा ॥ कहा वज्र बट ईस मचारो ॥ कहा अ

न्नि कहा तू न्न विचारी ॥ गर्भ महा रो है प्रभु सो
ई ॥ ता की सम सरि औरन कोई ॥ अरे तात जि
नि रिस करी मो सों ॥ निर्भै भयो कहत तुही तो
सो ॥ दीनदयाल भगत सुषदाई ॥ सो प्रभू मेरी
करैं सहाई ॥ तृ तिन का प्रभु मेरू समाना ॥ ति
नि सो कौनु करतु अभिमाना ॥ प्रभु सो कौ नि
कर बरि आई ॥ छिन कमारु तूं जाई विलाई
॥ सुनत बात रिस हैरी राई ॥ पकरि बंस सौं बां
धो जाई ॥ तासु करत तन बजनन्नी आई ॥ देषि
पुत्र परी मुरझाई ॥ सुनहु कुवर पहिलाद
सुजाना ॥ असुर बचन मानौं परिवाना ॥ ज
नन्नी कहै कुवर मत कीजे ॥ जीऊ उबारि सु
त अवके लीजे ॥ औसो जिनि बोलै मेरी मा
ई ॥ जल बिनु मीन तलफि मरि जाई ॥ मैं हरि
मैं हरि मोहू मांहें ॥ जे मैं रहितिव छ्मै
जाई ॥ ज्यो ओरा मनि का के मांहि ॥ ओरा मनि
का अंतर नाहीं ॥ बज्र टूटि पुनि परै निघा
ता ॥ राम न छाडो सुनि हो माता ॥ हिरनाकु
स तब षर्ग संभारा ॥ कहां राम तेरौ सिर
जनहारा ॥ तू पापी रिस लागी मोही ॥ अब ति
नि राखु छुडाऊ तोही ॥ दोहा ॥ जल थल व्या

॥ ३० ॥ पीछू स्नेहे रहे सकल घट पूर ॥ मो मे नो मे ष
॥ ६ ॥ उगयं म्हमे कहा वता ऊ दूरि ॥ श्रीगणाधिपत
ये नमः ॥ श्लोक ॥ जले विष्णु स्थले विष्णु विष्णु
पर्वत: मस्तके: ॥ ज्वालमालाकुले विष्णु वि-
ष्णु सर्व जगत्मय: ॥ चौपई ॥ असुर सहस्र
दस ठाडे भये जहां ॥ फरै बेल्ह अररानो नहां
॥ भुजा प्रबल वपु मेरु समाना ॥ भागे असुर
पंथ नहि जाना ॥ नष अनुदंत रूप विकरा
रा ॥ ये कहाथ सब असुर संघारा ॥ हिरनाकु
स नष मारु समाना ॥ कीनौं सो च भगत मन
मानाना ॥ नरसिंघ रूप बपु धरो गुसांई ॥ सु-
रगलोक तहां वजी बधाई ॥ छिनाषि न सन
को रूपा निहारो ॥ सिव ब्रह्मा आरती उतारौ
॥ दूत उत चितवत गरजं गुंजारा ॥ नष ठोक
तत व असुर निकारा ॥ नष कौ सोभा कहि
न जाई ॥ मानौं रतन प्रभू करि छवि छाई ॥ न
रसिंघ रूप प्रभू अति छवि बाढे ॥ कर जोरै
सिव नारद ठाढे ॥ निस बासर मारो नहिं मर
हीं ॥ काटे कटै न जारे जरहीं ॥ सीत घाम न-
हि व्यापत पीडा ॥ कीयो है रुद्र ने अमरसरी
रा ॥ तब हि क्रष्ण यह मंत्र विचारा ॥ घर देहरी

परउदरविदारा॥ मारौ असुर फारि उर देषा
॥ हसत कुबर प्रहलाद विसेषा॥ कहत कृस्न
कछु धौ को मोही॥ तौ सौ भगत और न होई
॥ मोह करत मभजन पर ऐसौ॥ गाई वछा
कौं चाटत तैसे॥ मारौ असुर भगट प्रभु गाजे
॥ देवनि द्वार दुंदभी बाजे॥ ब्रह्मा नारद ई सु
रदेवा॥ ईदु जोर करि लावै सेवा॥ अहो कृस्न
गोविंद मुरारी॥ अहो राम संतनि हितकारी
॥ मधुसूदन मोहन वनवारी॥ सदा होत संत
निहितकारी॥ कृपानाथ सो कीन विचारा॥ भ
गत हेत हिरनाकुश मारा॥ मारे असुर सुरनि
सुष दीना॥ राजु तिलक प्रहलाद ही कीना॥
वरषत पोहोप देव सुष माना॥ आनंद संग
लवजत निसाना॥ दोहा॥ षम्ह फारि प्रभू
प्रगटे मारौ असुर सचार॥ सकल देव अस्तु
ति करै राम दास बलिहार॥ इति श्री हरीच
रित्रे दसम स्कंधे श्री भागवते महापुराणे नर
सिंघ अवतार हिरनाकुश वधनो नाम प्रथ
मोध्याय:॥ १॥ श्री सुषदेव उवाच॥ चौपई॥ सु
षमुनि नृप कौं कथा सुनाई॥ अति सुष भयौ
परीक्षत राई॥ प्रभु की कथा सुनै नित कोई॥

॥ ऊ० ॥
॥ ७ ॥

अंम्रतपिवतमहासुषहोई॥ ईहिविधिराज
धर्मकोकीना॥ तिनिकौरूसअभैपददीना
॥ छाडिराजमधुरेगुनगावै॥ परनिंदापरद्रूर
नभावै॥ ऐसेन्रपनहोईजोईकोई॥ निहचै
सुरपुरपावैसोई॥ दोहा॥ भगतकथामहला
दकीस्रवनसुनैजोकोई॥ रामदासविरंचि
सौंकष्टनपावैकोई॥ चौपई॥ जोयासुनैभग
तकरग्याना॥ ताकोहोईपुत्रकल्याना॥ राजु
करतसवहीसुषदयो॥ तिनिकौंसुतविहलो
चनभयो॥ अतिजोधाअतिबलीअपारा
॥ पुहमीराजुकीयौअधिकारा॥ वैहलोचन
केवलिभयेसोई॥ तासोजुधनजीतैकोई॥
महाप्रचंडदंडसोईलीना॥ सुरअरुअसुरस
वैवसकीना॥ चौदहभुवनदसौदिगपाला॥
जीतेनवषंडकरेवेहाला॥ ऐसौतेजमहाब
लहोई॥ भागोईईंद्रनीसोई॥ ब्रंह्माभगेन
गेत्रपसोई॥ भागेदेवमनोंमेहोई॥ भजीव
स्तुसाईरमैउरी॥ भयेलछिविनुदेवनधा
री॥ दोहा॥ ऐसोवलिवलिवंतमहिजीते
दशदिगपाल॥ कछुनसंकमनमेधरैसववस
रकीयविहाल॥ श्रीपरेछत्तउवाच॥ चोप

३॥ कहै नृपति सुन मुनि सुषदेवा॥ मोसों क-
हो कथा को भेवा॥ कहो ते जो धों बलि भयो॥
अनु पुनि जीति इंद्रासन लयो॥ और ऊ क-
था अगम की होई॥ कहो व्यास सुत हम सों
सोई॥ श्री सुषदेव उवाच॥ चौपई॥ बलि को
भगत भाव अधिकारा॥ इछ्या भोजन छूज-
न अहारा॥ सुनि हि न हरि की सेवा करै॥ और
दे वन हि चित में धरै॥ धुजा धर्म की बांधी से-
ई॥ पुंन्य प्रताप ते जीतन कोई॥ अनु प्रहला-
द को नाती आहि॥ ता की उपमा कही न जा-
इ॥ राजा यह सुकदेव सुनाई॥ अति सुष भयो
परीक्षत राई॥ नृपति जोरि कर लाइ सेवा॥
धंन्य धंन्य स्वामी सुषदेवा॥ और सुनाव-
हु जो चितु लाई॥ वहुरइंद्र की कथा सुनाइ॥
सुरपति वैठे वैठे इंद्र आइ॥ महल्लया गिरचं-
दन छिरकाए॥ बैठक सरस सुगंध सुहाइ
॥ तामैं अपेषे कला अधिकाई॥ रचना रची सो स-
कही न जाई॥ निर्त काज उरव सी कछाइ॥ सु-
रगण सहित सो भित रजधानी॥ बैठे इंद्र अ-
घारे आनी॥ चारन गंध्रप किंनर गावैं॥ नि-
र्त करन आनंद बढावै॥ सिव ब्रह्मा नारद

॥ ऊ० ॥ मुनि आोर ॥ इंद्र जु मुनेहे निकट बुलाये ॥ नाना
॥ ८ ॥ वरन तहं पो हो प अधिकारा ॥ चमकत हीरा
रतन अपारा ॥ तिहि ओसर ब्रहस्पति गुर आ
ये ॥ मानु नही योन्ह तन्वितु लाये ॥ माया अंध
महा मद भारी ॥ मन भंग गुर रिसन संम्हारी ॥
मन भंग चित भयो उदासा ॥ गुर ब्रहस्पति ली
नौ वन वासा ॥ ब्रह्मा रु हू नारद दुष पायो ॥ अ
पनै अपने लोक सिधायो ॥ इंद्र अष्षा रोगि
रि गयौ सोई ॥ गुर विनु ग्यान सिधि नहिं हो
ई ॥ बहुरि इंद्र मन भयो उदासा ॥ गयो फेरि
गुर ब्रहस्पति पासा ॥ मै मति हीन भयो अ
भिमानी ॥ अति अचेत निरत हि चित आनी
॥ अहो देव तुम दरस न देहू ॥ हमरौ जनम सु
फल करि लेहू ॥ ओर इंद्र मुष देषहु न तेरो ॥
अति चित भंग कीयो मन मेरो ॥ गुर की निं
द्रा करै जु कोई ॥ ताको सिध्धि कबहू न होई ॥
हे अलोप रिषि बनाहिं सिधाये ॥ बहुर इंद्र
अपने घर आये ॥ दोहा ॥ अंतर कथा सुना
ईयौ सुनि न्रपति सुष पाई ॥ कृष्न नाम हरि
की कथा पीयत नन्न अघाई ॥ चौपई ॥ सु
नि राजा ऐसे च्यो रुरा ॥ यह सुरपति ईहि त

सबु हारा ॥ भयो महाबल असुर प्रचंडा ॥ भागे
इंद्र ब्रह्मा के षंडा ॥ तबै इंद्र नें करी पुकारा ॥ ब-
लि इंद्रासन तें न्हा मारा ॥ बलि इंद्रासन लीयो
छुडाई ॥ जीते सकल लोक के राई ॥ ब्रह्मा करी
सुरनि को काजा ॥ जीते बलि असुरन के रा-
जा ॥ ध्रुव को गुर नारद मुनि भयेऊ ॥ तिनि को
राज अटल करि दयेऊ ॥ गुर को ग्यान उपजि-
यो देवा ॥ घर आ रोतें चूके सेवा ॥ गुर है मात
पिता अनुभ्राता ॥ गुर है सकल सिधि के दा-
ता ॥ गुर तें और न दाता कोई ॥ गुर सनाप हरि
मिलि है सोई ॥ तब ब्रह्मा गुर दछ्या दीनी ॥ इं-
ति नीमा नंइंद्र पुनि लीनी ॥ तबै इंद्र गुर द-
छ्या पाई ॥ हिरदै प्रगट प्रीति अति भाई ॥ ज-
गिय धर्म तब सुरपति कीना ॥ तब फिर कै इं-
द्रासन लीना ॥ अपनें लोकनि आए देवा ॥
अनु पुनि करै इंद्र की सेवा ॥ ऐरापति सुरप-
ति फिरि साजा ॥ देवनि घर दुंदभि पुनि बा-
जा ॥ बैठे आनि सभा सुरराई ॥ तहां अपछ-
रा निरतु कराई ॥ सिव ब्रह्मा नारद मुनि आ-
ए ॥ इंद्र प्रेम सौं निकट बुलाए ॥ आदर करि
बैठाए सोई ॥ कहत इंद्र तुम तें सिधि होई ॥

॥ ऊ० ॥
॥ ९ ॥

आए देव सकल जुरि तहां वैठो ईंद्र अषाडो
जहां ॥ फिरि संकर सो पूछि न लयेऊ ॥ भली
वस्तु सोई वलि लै गयेऊ ॥ भली वस्तु सायर
मैं डारी ॥ भये लछिमी विनु देवन धारी ॥ दो
हा ॥ ब्रंह्मा नारद सिव सुनौ सु सुरपति कहि
रिसाई ॥ वज्र वान वलि मारहो अनुपुर देहु व
हाई ॥ चौपई ॥ तव वोले जैयंत कुमारा ॥ असु
रै मारि मिलाउं छारा ॥ तव ईंद्र सिक्षा समु
झावा ॥ देवनि सहित कृस्न ढिग आवा ॥ अ
हो कृस्न तुम सुनौ पुकारा ॥ वलि राजा पुर
लै तुह मारा ॥ वहुरि कही कृस्न सो वाता ॥
राषो सुरपति सरन विधाता ॥ गुर मुनि मं
ग कियो है राई ॥ वहुर कृस्न ने कथा सुनाई
वलि सो सकल देव सोई हारा ॥ भली वस्तु
सायर मै डारी ॥ कहत ईद्र सव देव उवारा ॥
होई सिधि प्रभु करौं विचारा ॥ दधि मथि का
ढि रतन सव लीजे ॥ सव देव कहै प्रभु असी
कीजे ॥ नारद मुनि सव असुर वुलाए ॥ जोधा
प्रवल सवै जुर आए ॥ तव गिरि डारि सिंधु
मे दीना ॥ सेसनाग को नेतो नाकीना ॥ वूड
त नव मंदागिरि जाना ॥ कूमर रूप कियो भ

गवाना॥ धरौ पीठि पर परवत जबही॥ मंदरागि
र ढह राषेण तबही॥ फन तन असुर पूछि तन दे
वा॥ कोप असुरन जानौं भेवा॥ फन की त्रास स
बे हम सैहैं॥ भली वस्तु साइर कीन्है है॥ सुर अ
रु असुर सबै बल कीना॥ चौदह रतन काढि
तब लीना॥ अंम्रत॥ बिषु॥ ऐरावति॥ सुरापा
णि॥ मणि॥ ससि॥ कामधेनु॥ उचैश्रवा॥ ल
क्षिमी॥ संष॥ धनंतर॥ कल्पद्रूम॥ धनुष॥ रं
भा रत्न सब॥ १४॥ चौदह॥ ये सब रतन जत
न कैं काढे॥ सिंधु मथ्यौ तब तब भये ठाढे॥ सुर
कहै हम यह मतु कीजै॥ ईम्रत मागि कृष्ण सों
लीजै॥ कृष्ण कहै अंम्रत जो हमारा॥ तुम दान
व सुरापानि अधिकारा॥ इतनी सुनि तब अ
सुर रिसाना॥ गरजत कोपत असुर निदाना
॥ तब हि कृष्ण यह मंत्र बिचारा॥ धरौ मोहनी
रूप अपारा॥ देषि मोहनी असुर लुभाने॥
ब्रह्मा ईद्र देव सब जाने॥ नारी भेष प्रभु अंतर
कीना॥ सुरापानि असुरण कौं दीना॥ ससी अ
रु सूर्य मधि तहां राहु॥ कीनो कपट लख्यौ
नहि काहु॥ धाये अंम्रत दीनो हाथा॥ मुष मे
लत प्रभु काटे माथा॥ भयौ राहु तें केतु नियां

॥ऊ०॥ रा॥तब हि रुद्र मन सो चवि चारा॥ बांदि सुधा
॥१०॥ सब देवनि दीना॥ आपुन रुद्र लाक्षि मीलीना
॥राहु केतु अति बली जु होई॥ नव ग्रह ह्यां प
पूजे पुनि सोई॥ ईहीं विधि अंम्रतु देवनि पा
यो॥ सो नृप कीं सुब देव सुनायो॥ दोहा॥ अ
स्तुति करत रुद्र की सकल देव मुनि सोई॥ रा
म दास प्रभु की कथा श्रवन सुनों सब कोई॥ चौ
पई॥ तब रुद्र सबकुं कहि आये॥ ईद्रासन कीं ई
द्र पठाये॥ ब्रह्मा गये ब्रह्म पुर बासा॥ सिं गये
जहां कैलासा॥ सब देवनि मिलि अति सुष
पायो॥ अपने अपने लोक सिधायो॥ दोहा॥
कही कथा मुनि नृपति सों सुनो परीक्षत राई
॥ईहि विधि रतना करमथों संतनि के सुष
दाई॥ ईति श्री हरि चरित्रे दसम स्कंधे श्री भा
गवत महापुराणे समुद्रमथनो नाम तृतीया
ध्यायः॥३॥ श्री सुषदेव उवाचः॥ चौपई॥०
दानव हीन देव अधिकारा॥ बलि राजा सों करी
पुकारा॥ तब बलि रास कीयो अधिकाई॥ सिं
घासन पर बैठा जाई॥ तब मंत्री गुर सुक्र बुला
यो॥ सिंघासन आसन बैठायो॥ तब पूछिन
राजा बलि सोई॥ कि हि विधि सिध्य हे मारी

होई॥ देहु मंत्र सो इह मख कीजै॥ इछा मो हिं इं
द्र पुर लीजै॥ कहत सुक्र सुनो बलि राजा॥ क
रहु जग्य ह्वै है सब काजा॥ तप सहित इक ज
ग्य प्रभु कीजै॥ निहचै जी ति इंद्र पुर लीजै॥
हय अरु हेम देहु गज दाना॥ विप्रनि देहु क
रो सनमाना॥ इहि विधि साज जग्य को कीजै॥
इछ्या भोजन विप्रनि दीजै॥ इतनी सुनि राजा
सुख पायो॥ देस निदेस नि लिखा पठायो॥ आ
ये विप्र सकल भुव पाला॥ बैठे जाइ जग्य पालि
पसाला॥ सुरभि सोना सिधि पीठ पर साजा॥
इहि विधि गऊ देत बलि राजा॥ राजा मग्य बहु
त विधि कीना॥ इछ्या दान द्विजनि को दीनो
॥ इहि विधि जग्य नृपति ने कीना॥ दीनो दान
जगत जस लीना॥ जग्य धर्म कर बल अधि
काना॥ तब सुरपति सब देव बुलाए॥ सिव ब्र
ह्मा नारद मुनि आए॥ चलो कृस्न ढिग करो
पुकारा॥ बलि इंद्रसन लेत हमारा॥ सब देव
न मिलि जोरे हाथा॥ चरण सरण राखो जदु
नाथा॥ कहै कृस्न सुनो सुरराई॥ निरभै राजु
करो तुम जाई॥ हर्षवंत देव इंद्र ढिग आए॥
तब प्रभु बावन रूप धराए॥ बावन है प्रभु ब

॥ ॐ ॥ लिकैं आएे॥ चारि वेद सुषा सुनाए॥ दिव्य
॥ ११ ॥ अनेऊ कं धवि राजे॥ हाथ कमंडल आनि बि
षिछाजे॥ अजर अमेर लकुटकर सोहे॥ म
नहुं अनंद कंद मन मोहे॥ दोहा॥ प्रभूजी
बावन रूप धरि ठाढे बलि के द्वार॥ जग्य करत
बलि जो जहा जाई कहि पति हार॥ चौपई॥
बावन हा प्रभू बलि के गएे॥ हषि रूप बलि ठा
ढे भये॥ देषत सभा सकल मन भाएे॥ चारि
वेद सु षास्त्र सुनाएे॥ तब बलि देषि महा सु
षपावा॥ कहा तुम कौन देस तै आवा॥ मन
मे हर्षि कहत द्विज तो सो॥ इछ्या भोजन मा
गो द्विज मो सो॥ विप्र कहत बलि जाचो तो ही
॥ अहू दैपेउ बसुधा देंमोहि॥ आसिष दे हूं
बहुत सुष पाऊं॥ तुमरेनि कर कुटी मे छा
ऊं॥ बावन विप्र मागन ही जाना॥ लीजे देसु
कनिक गज दाना॥ कहै विप्र मागो सो दीजे
॥ अपनो जग्य सुफल करि लीजे॥ दोहा॥
संतोषी जाचक भले लोदा ना सा ग्र षु सो
ई॥ थोरे तै जो बहुत है जो बहुत है जो जा षि
कसो होई॥ चौपई॥ कहत सुक्र यह विप्र न
होई॥ बावन हा प्रभू आ ऐसा ई॥ अहो नृपति

याकी मति जानी॥ आयो लछुन सकल रज
धानी॥ सुनहु सुक्र यह बात हमारी॥ भले हीं
आए कृष्ण मुरारी॥ जन्न धर्म व्रत तप जप की
जे॥ गऊ येंको दिनि विप्रनि दीजे॥ इनिके काजें
जगु सब करहीं॥ ते हरि हैं तो कारज सरहीं॥
कहें सुक्र असी नहि कीजें॥ ईनि कछु दं नकें
नहि दीजे॥ केहत विप्र सुनों बलि राजा॥ दान
देन सो चतन कि हें काजा॥ चरण प्रछालन ना
यो तब माथा॥ दे हुं दान दूज आंउें हाथा॥ सु
क्र बहोत राजा नहि मानी॥ रोरी तेनि करतुन
हि पानी॥ सुक्र तबै टोटी में जाना॥ सींक उरि
तब की नो काना॥ करि संकल पुर्हि यो नृपदा
ना॥ बाढी देह सी सु असमाना॥ सुभट अस
सुर मिलि दानव धाए॥ लई पुरहरी सब उ
ठि गए॥ येक चरण भरि वसुधा भई॥ उंनंचा
स कोटि महि मांपत लाई॥ ऐक चरण आका
से गएऊ॥ सनकादिक देषत सुष भयेऊ॥
अंकुस कुलिस कमल की सो भा॥ वज्र मी
न चिन चित मन लोभा॥ अरुन कमल अ
नुविंदु सुवासा॥ सनंक सनंदं न चरणनि वा

ऊ०॥ सा॥ धुजा धेनु पहुं जंबु फल सारा॥ सो जल जा
१२॥ निक मंडल डारा॥ काढे प्रभु जिनि चरन प्र
छाला॥ सेस नाग पुनि पेरे निहाला॥ उमंडो
जल पाद्यो दिक चहाई॥ गंगा होम्रत लो कहि
आई॥ बंटे सीस अकासे गयऊ॥ येक पेंउ
मथवी सब भयऊ॥ येक चरन आसा सेगय
ऊ॥ येक चरण महिमा रहि गयऊ॥ तो जो च
रन गयो पाताला॥ सेस नाग पुनि कीयो नि
हाला॥ आधो चरण दऊ तप मोहो॥ ना तर
मे बलि बाधों तोहो॥ रे अभिमानी दानुन दे
हि॥ जग्यते जीनु ईद्र सनु लेही॥ तब बलि नें
जोरे दोऊ हाथा॥ बांधे बलि त्रभुवन के नाथा
॥ तब बलि कहे सुनो हो स्वामी॥ तुम त्रभुव
न पति अंतरजीमा॥ प्रभु तीनि पेंउ वसु धार
वि राषी॥ वेद पुराण सुनें मे साषी॥ तीनि पेंउ
तें नहिं अधिकारी॥ मापि लेउ प्रभु पीठि ह
मारी॥ प्रहलाद नारद सोई आऐ॥ करि मना
म हरि कें समझाऐ॥ तब बली की राणि चलि
आई॥ भले ही बांधे त्रभुवन राई॥ कहि धर्म
करे जप कोई॥ तुम बिनु जग्य सुफल नहि हो

ई॥ कांचके मनी या गयो हिराई॥ पुनि दूढत विं
ना मनि पाई॥ दोहा॥ प्रभु राषीके सुनि वचन
जन पर होत दयाल॥ बलिके बंधन छोडि कें
समरथ दीन दयाल॥ चोपई॥ बलिके बंध
न छोडे जब ही॥ साधु साधु कहेउ प्रभु तब
हीं॥ मांगु मांगु न्रप जो मन माहीं॥ तो सो दूजा
और न कोई॥ केहत कृस्न करि हे मन भाई॥ रा
जु करो पाताल जोई॥ यहे देव चरणन चितु ल
ल्याऊं॥ घर बैठे नित दरसन पाऊं॥ तव प्रभु च
रण पीठि पर दये ऊ॥ पारसु परसें कंचन भये
ऊं॥ चरण प्रताप सेस सुष कारि॥ तुम पग पर
त अहिल्या तारी॥ तुम प्रभु संतनि के सुषदा
ता॥ पावन कियो हमारो गाता॥ कहत कृस्न
बलि निकट निकट निवासा॥ चारि मास रे
हे तुम पासा॥ बलि राजा पाताल पठाये॥॥
आपन कृस्न दुरका आए॥ बलिकी कथा स
कल सुषदाई॥ राजहि प्रति सुषदेव सुनाई॥
दोहा॥ सुनत कथा न्रप सुष भयो धंन्य धं
न्य रिषि व्यास॥ रामदासने मा कहे राषो चर
ननि वास॥ इति श्री भागवते महापुराणे हरि

उ०
१३

चरित्रे दशमस्कंधे वावनरूपवलिवंधनो नाम
त्रितीयोध्याय: ॥ ३ ॥ श्री सुषदेवउवाच ॥ ०
॥ चौपई ॥ सीसु धंन्य सो हरिकों नावें ॥ रसना
सो जो हरिगुन गावें ॥ श्रवन भले जे सुने पुरा
णा ॥ कर सो सुफल देहि जे दाना ॥ नेन सो
ई निरषें हरि सोभा ॥ जैसे भवर कमल रस
लोभा ॥ चरन सुफल जो तीरथ जाई ॥ श्रुउ ह
रि आगें निरतु कराई ॥ विनु हरि भक्ति धृग वृ
चन देही ॥ ईंतिनी त्रपति सुनाई तोही ॥ श्री
परीक्षत उवाच ॥ चोपई ॥ स्वामी सुषमुनि
पूछौं तोही ॥ रुकिमिनी व्याहु सुनाऊ मोही
॥ श्री सुषदेव उवाच ॥ चोपई ॥ आ राजु रसिं
धु ससि पाला ॥ देषि वराननगिरी सो ईवाला ॥
पापी उकु सुकरतु वरि आई ॥ त्रिप्र हरि कें पुह
चो जाई ॥ चोक मधि अति उदित अवासा ॥
तहां प्रभु वेंठे अति सुषवासा ॥ हरि सों आनि
कहि पाति हारा ॥ विप्र एकु हें सिंह दुआरा ॥ कर
त पुकेरा लिषो लिये हाथा ॥ श्रोर दूसरो सं
गन साथा ॥ अत द्रजकुं डिलपुरतें आयो ॥
सुनत वात तव द्रजहि बुलायो ॥ आवनहि ह

रिकंठलगायो॥मिलेरुक्मनतव्रप्रतिसुषपा
यो॥पातीदईविप्रहरिहाथा॥पातीवांचतन
श्रीजदूनाथा॥रोसवंतवसुदेवकुवारा॥मा
हासीकोसुनहुपुकारा॥निसुदिनजापक
रोप्रभुतोहो॥सोकसमुद्रसेकाढोमोहो॥
मंउपगईसषिनिकेसाथा॥देवोवतुदीजे
श्रीजदुनाथा॥निहंचैमनमेपूलचढाऊं॥की
जेकृपाहृलस्मवरपाऊं॥नेमधर्मकीनेतुमक
जा॥आयसजिदीने.सवराजा॥पातपितकै
तुम्हारोध्यानू॥मानतुनाहिंरुकमअग्या
नू॥मेव्याकुलतनभईविधाता॥लिषि
योयवरिविप्रहरिहाथा॥जुरासिंधुससो
पालअपारा॥आहेकंघतुमलगोपुकारा
॥गाईवाघुघेरीहेआनी॥आनिछुडावोसा
रंगपानी॥जंवुकजुथ्यजुरेवहुतेरे॥सिंघ
रूपहोहुप्रभुमेरे॥सोकसमुद्रमेवूडतभा
री॥प्रभुतुमकरधरलेउउवारी॥कृष्णगनु
उचदिआवहुधाई॥प्रानगऐकहालेहो
आई॥अवधिलगुनकीनीघरआई॥तुम
विनुविषुषेहोअकुलाई॥हेप्रेवकअरजमे
लिषिविचारी॥अवजिनिरूरकरोगिरधारी

॥ऊ०॥ ॥अगिनित दल असुरन को आयो॥ तिहिका
॥१४॥ रन मैं त्रियो पठायो॥ सषिन संग देवी मादि-
आई है॥ मैं निज पंथ बुहारी करि है॥ अब तु
म हरि लै जाउ मुरारी॥ मेरा सी निजु आहि कु-
म्हारी॥ पाती बांचत आयो स्वामी॥ अहो ब्र
ह्म गतु उके गामी॥ नगर लोक सब के मन आ
ई॥ मुरिष तुकुम करत बरि आई॥ दोहा॥ पा
ती बाचत प्रेम सों सुनि रुकुमिनि के बैन॥ सु-
नत बचन उमगो हियो जल भरी आये नैन
॥ रुकुमिनि ब्याहौं पै जसो मारौं असुर संघा-
रि॥ रथ चढि लै आइ है तो मे मदन मुरारि॥
चौपई॥ राम रूप की सुरति संझारी॥ बनि ज-
सीता आई हमारी॥ चौदह बर्ष संग दुख-
पायो॥ लंका जीति बहुरि घर आयो॥ सुनी
विप्र की बात उदासा॥ सीत नहि फेरि भयो ब
नबासा॥ लछिमन बीर भयो बल देवा॥ ब
हु बिधि करि है हमारी सेवा॥ दोहा॥ धंनि-
धंन्य कहु सीता धंन्य कुल वंती नारि॥ अब
निजु आउ रुकुमिनि हरजू हृदे विचारि॥ चौ
पई॥ अब तु रुकुमिनि को सोच निवारो॥ का
ल हि जाइ असुर सब मारो॥ करो पैज नतु बरि

रषुरधारी॥ भागसुहाग देहु तोहि नारी॥ रुक्म
सागजिरथ संबवजा यो॥ आदेसैं निसि मि-
रि सब आयो॥ चलौ रुक्म दल अगम अपा
रा॥ कूरम कमठ सहत न हि भारा॥ अंध धुंध
द लु चलो अ समाना॥ गई गरद सोई भानु लु
काना॥ गज न हे वर रथ धु जा पताषा॥ चले सा
जि दल अगिनित लाषा॥ असी लष्ष हस्ती
हे साथा॥ सूरुन संषि पुंछ न हि माथा॥ चलौ सैं
निधरि अंवर छा वो॥ पवन वेग कुंडल पुर आ
वो॥ भीषम न्रपति सुनी हरी आए॥ ततुम तु
धनु लै मिलन सिधाय॥ गयौ विप्र तु कि मिनि
के पासा॥ अव निजु पूजि मन की आसा॥ अ
वजो प्रान गये फिरि आये॥ नगर लोग सव रे
घन धाये॥ बजत रुक्म दल बहुत नगारे॥ म
न हु मेघ गरजत अधिकारे॥ बजें दुंदभी
अरु सहनाई॥ भेरि नफीरी अधिक सुहाई॥
बजत म्रदंग रुगरि अधिकारी॥ बहु विधि बा-
जे बजत अपारा॥ बाजत संष स्याम की धारा
॥ वजत संष भै भई अपारा॥ साजि सेन सब च
ले जुझारा॥ रुक्म आनि मीले वल वीरा॥ सुर
सिंधु ससिपाल बुलाए॥ कहै तु कुमजा दैं क

॥ ३० ॥ हम्ह्रारे॥ तवया वात कही ससि पाला॥ भलहीं
॥ १५ ॥ आरें गाई गुवाला॥ मैरों दल बलु है अधिको
ई॥ जुरासिंधु सेंना पति राई॥ जुरासिंधु तव व
चन उचारा॥ यह जादौं तव कंस हिमारा॥ तौ
पुकार हि लगि मैं धावा॥ जीतो नाहि हारि अ
हआवा॥ काल जमुन जो धावउ मारा॥ हरि
सौं वार वी सौ मे हारा॥ कहत तुकुम उनी जि
नि भाषो॥ गादौं जोति पै ज पति राषो॥ असी
कहे तुकुमर ण धीरा॥ हमर ज्जावे आ हि अ
हीरा॥ अहो तुकुम कछु वात न जानी॥ देउ रू
प जु रूप आनी॥ दोहा॥ जुरासिंधु कहे रू
कम सो सब जोधा जुरि जाहु॥ वहिनि हिंगो
रि पूजाई कें करो सुनि भेहो व्याहु॥ चौपई॥
वहि नि हिंगोर पुजावो जाई॥ व्याहु कारो अ
तिहीं अधिकाई॥ वहिनि हिंगव रिपु जावन
आवा॥ दल वल साजि संग सो ल्यावा॥
जोधनि मंउपु चैरो जाई॥ जहा तहा ससिपा
ल धुहाई॥ कनि कपार वहु ने वजे साजा॥
सषिनि संग वहु वोवजत वाजा॥ देवी पूज
न चली कुमारी॥ नषसिष भूषण छवि उजी
यारी॥ दोहा॥ सषी सेहस्त्र दस संग लै मंउ

कपुहची जाई ॥ रुकुमिनि रूप समुद्रनिधि
उपमा दीजे काहि ॥ चौपई ॥ परिक्रमा दे पु-
हप चढाए ॥ सषियनि बहुविधि मंगल गा-
ये ॥ येक सषी ससीपाल हि गायो ॥ भो हृचु-
ढाईब हुत दुषपायो ॥ पूजि गवरि तब जोरे हा-
था ॥ देवी बरु दीजे जदुनाथा ॥ ऐक चरण रुकु-
मिनि भई ठाढी ॥ सोभा सिंधु महा छबि बाढी
॥ मेतुव सेवा करी भवानी ॥ आजु मिलावो सा-
रंगपानी ॥ वेगि गवरि बरु दीजे मोही ॥ नातर
सीस चढाऊं तोही ॥ तब देवी बोली विहं-
साई ॥ अब ही मिली है श्री जदुराई ॥ जुरासिं-
धु सों ईमन पाछे तेहे ॥ पुनि ससिपाल बहु-
रि घनु जेहे ॥ देवी हर्षि दियो तब पाना ॥ अब ही
आहे श्री भगवाना ॥ तब रुकिमिनि देवी पग
लागी ॥ अब तुम बचननि भई सभागी ॥ पूजि
गवरि तब बाहिर आई ॥ मनौं कनिक बेलि छु-
बि छाई ॥ मडिप द्वार सषिनि संग ठाढी ॥ सोभा
सिंधु महा छबि बाढी ॥ चहुं दिश घेरि रहे हृगा-
हौने ॥ रुकुमिनि रूप देषि मुरझाने ॥ इतें उ-
तचित चल नैननि हारे ॥ अजहूं न आये श्री-
श्री बनवारी ॥ येकला षरयु हरि के संगा ॥

ऊ० ॥ वरन वरन के रंग सुरंगा ॥ कृपानाथ तहां पहु
१९ ॥ चे आई ॥ लई रुकिमिनि रथ चढाई ॥ लै चले
स्याम सषी सब संगा ॥ महा रूप सो बाढो रंगा
॥ नैन बैन सुष कहन न जाई ॥ घूंघट पर भूष
ण छबि छाई ॥ अंग अंग भूषन छबि बाढी ॥
मनो कनक बेल रतनन जउ काढी ॥ हषि रू
प ब्रजनाथ विहारी ॥ यह सीता सत वंती ।
नारी ॥ नैन बैन सुष उपजो भारी ॥ देषि रुकि
मिनि हसै मुरारी ॥ तब तिहि विहसि कहत है
बाला ॥ दयासिंधु हो दीनदयाला ॥ दोहा ॥
चरन लागि रुकिमिनि रही प्रभु लई उठा
ई ॥ तीनि लोक की शोभा मो शा कही नई जा ।
ई ॥ चौपई ॥ दषि रुक्म दल अगम अपारा ॥
भागि असुर तब करी पुकारा ॥ बहुतक जोधा
भगत निमारे ॥ बहुतक चक्र पटन मारे ॥ श्र
छत षबरि भई बेहाला ॥ दुलहि निहरी नंद के
लाला ॥ रथ चढ दई लेग यो मुरारी ॥ सुनत तबा
तदलन परग यो कारी ॥ जुरासिंधु सासिपाल
बुलायो ॥ तु कुम सा जि दल पैहले धायो ॥ रा
वत कुमदल घेरो जाई ॥ मनो चंद्र पार सषि
रि आई ॥ कोपि असुर दल वजे निसाना ॥ आ

गुनजादेपावेजाना॥ तुकुमरोसकरिधनुक
चढाबा॥ बाननाबाननिहरिरथछावा॥ तुकु
मुजुध्धिकीयोअधिकाई॥ रीसकरीहनुह
लकेंगारी॥ अबकहांजेहोचोरभगाई॥ जुध्ध
जीतिमोसालेजाई॥ दूधचोरदधिचोरक
हायो॥ तुमग्वालिनिकोजूठोखायो॥ गाई
चरावतजनमुसिराना॥ लज्यानोहिनाहिनि
रग्याना॥ ईतनिसुनिहरिऊठरिसाई॥ अहो
तुकुमछोडौलरिकाई॥ जाऊघरेतुकुमुहे
कुवारा॥ काटौंसीसचक्रकीधारा॥ ईतनीसुन
ततुकुमतबधावा॥ करतजुधसोनियरेआ
वा॥ रथतेऊतरिपरिजादूनाथा॥ पकरेजोई
तुकुमकेहाथा॥ पकरोतुकुमुबंधेउमपचअंधू
॥ रथकेषंम्हनिसौंधरबंधू॥ बानकीतीक्षन
कीनीधारा॥ मभूजमूडेउतुकुमुकुमारा॥ देषि
वधेतवतुकमिनिरोई॥ विणतीकरतजोरि
करदोई॥ षंदनछोडौहेवनवारी॥ मेटौमभु
अपलोककीगारी॥ मातपिताकीबहुतबड़ा
ई॥ तुमप्रभुसंतनिकेसुखदाई॥ दोहा॥ बार
बारविनतीकरेतुकमिनिदोउकरजोरि॥ बड़ी
बड़ाईहोतिहैदेउकंतभूजछोरि॥ दोहा॥ बंध

॥ ऊ० ॥ न षेउतु के मेके तु कमली रथहि चढाई ॥ दोने
॥ १७ ॥ दलि मलि लै चले लै जीति निसान बजाई ॥ चौप
ई ॥ जुरासिंधु ससिपाल सहारा ॥ दोने आगि
नित लगे पुकारा ॥ कहे रुक्म सों श्री बलिभा
ई ॥ दोने दलु में देषौ जाई ॥ तब ससिपाल का
लसम धावा ॥ इतै बीर बलदेव उठावा ॥ मातु
मातु करि सिलहु संम्हारा ॥ उदत लोहु की आगि
नि अपारा ॥ बुषेत बादु हुं दल ऐसें ॥ मानों स
घन लेके जैसों ॥ तुं उमुं उ कढि परहि अपारा ॥
बाढी नदी रुधिर की धारा ॥ मैगल गिरे सुंड
धरि टूटे ॥ मानो सौ न न भू का छूटे ॥ ऐसो सुर
ध्यु दुहु दल होई ॥ येके य कुन जीते कोई ॥ तब
बलि भद्र बीर अकुलाना ॥ चक्र सुदरसन
आनि तुलाना ॥ चलो चक्र ऐसें परिवाना ॥
जैसें जुनरी तुनेतु की साना ॥ दंतवक्र है दो दे
भाई ॥ तिनि सन्या अधिकाई आई ॥ ऐसो
गुंध्य भयो असरारा ॥ भागे असुर चक्र की
म्रारा ॥ भागे जुरासिंधु ससिपाला ॥ लज्या
षोई गये नृपाला ॥ हाथी उडि उडि गये अस
माना ॥ बाढी नदी रुधिर की याना ॥ हाथी दं
त संघ परवाना ॥ छुरी कटारी मीन समाना

॥ ढाल कमान कमर ध्वत राई ॥ ऐसो जुधकी यो बलि भाई ॥ कीनो जुध्ध बहुत असरारा ॥ हानो दल कीनो संघारा ॥ भैरो भूत नचत बेताला ॥ जोगिनि गुहत मुंड की माला ॥ ऐसो जुध्धकीयो भै भीता ॥ मारे असुर महा दल जीता ॥ दोहा ॥ चलो राम दल जीतिके लै जादो सब साथ ॥ मिले आनि बल भद्र जू हरि हसिके बूझी बाता ॥ चौपई ॥ कैसो जुध्धकियो बलि भ्रीता ॥ हरषवंत हरि बूझी बाता ॥ तब बोले बलि देव कुंवारा ॥ दानो अगिनित लगे पुकारा ॥ जुरासिंधु सगसि पाल अमाना ॥ सैन रुधिर नी असमाना ॥ जुरासिंधु नृप अधिक जुरूरा ॥ जाके पोरष फुरत पहारा ॥ सुमिरि देव कीव सदेवताता ॥ सुमिरेन दजसो धामा ता ॥ तुम प्रताप बल पोरिष कीनों ॥ मारि असुर कीनो बल हीनो ॥ ऐसो जुध्धकियो असरारा ॥ बाढी नदी रुधिर की धारा ॥ चक्र तेज फ छुवरानि न जाई ॥ दानै दल भागे अकुलाई ॥ रावन देख आनि सासि पाला ॥ नन्मायो ई गमे सुब पाला ॥ ई तनी कथा

॥ ऊ० ॥ हो बलि बीरा ॥ भयो बहुत सुष स्याम सरीरा ॥
॥ १८ ॥ चौदह भुवन भुजा बल होई ॥ सो बलि सो नहिं
जीते कोई ॥ दोहा ॥ रुकुम जु रुकुमिणि हर
ण कहें रुस्म समुराई ॥ रुकम आपकौ राजनी
जब सुनी बलिदेव उठे रिसाई ॥ चौपई ॥ सस
र पिता सम मानिये सोई ॥ सारो बंधु बराबर
होई ॥ जो आप सुन सारे ते होई ॥ ताकौ दुष्य न
पावै कोई ॥ बडो जो आदि बुराई जानै ॥ अपयु
न परगु न कहत सयानो ॥ बडे नृपति कौ राज
कुवारा ॥ तुम सौ घराव रि कौं न विचारा ॥ ताकी
अपति करी तुम भारी ॥ हरि सो हलधर कहत
विचारी ॥ दोहा ॥ कौ तुम सौं सरकै रको तुम
सो अभिमान ॥ सुनत वचन बलभद्र के रुक
मिणी ॥ हु है गुउन ॥ चौपई ॥ हय गय पैद
र गनौ जाई ॥ बाजे बजे भेर सहनाई ॥ रथ सौ र
थ जुरि चले अपारा ॥ रुस्म ही जादौ आनि जु
हारा ॥ दोहा ॥ दुलहिनि भीषम की सुता दुल
हानंद कुवार ॥ सोभा अगम अपार है बैरणि
करै को पार ॥ चौपई ॥ घाट बाट सब गली
रुराई ॥ मल्यागिरि चंदन छिरकाई ॥ बाजे बा

जत सीं हदुवारा॥ गावत जुनी मंगलचारा
॥ कनिक कलस भरि रतन जराए॥ गजमोत
निकै चौक पुराये॥ तोरन बांधे सीया दुवारा
॥ पाटपरंमर छाये वजारा॥ कलस धरें सि
र गावत नारी॥ चंद्रवदन छवि रूप उज्यारी॥
परत पावडे अधिक सुहाए॥ श्री जादौ नाय
क के आए॥ हीरा रतन ले कलस भरि दीनें॥
वसुदेव पितां दे अंक भरि लीने॥ देषि जु रुकिमि
नी हर्षे तगाता॥ कौमल वदन स्यामहे गाता
॥ हर्षवंत होई करत वधाई॥ जाचक बहुत द
छिणा पाई॥ आये उग्रसेन रनिवासा॥ मा
ई देवकी रुकमणी पासा॥ रूपवंत सोई राज
कुमारी॥ आपुहि लाछिमी रूप उजारी॥ सषी
न सहित भीतर लै आई॥ आनंद घर घर व
जित वधाई॥ उग्रसेंन राजा चलि आए॥
मिलत कृष्ण कौं अति सुष पाए॥ दोहा॥ तब
वसुदेव न्रप सौं कही बुलाई विप्र सब लेहु॥
व्याहु कृष्ण कौं कीजिये सुर मुनि नेवतै देउ
॥ चौपई॥ देस देस लिषि पत्र पठाए॥ ब्रह्मलो
क तैं ब्रह्मा आए॥ आएसि वसन कादिक देई

॥ॐ॥ ॥ चंद्र सूरज चलि आये देई ॥ सुष करत नार
॥१९॥ द मुनि आये ॥ देषि न्रपति तब अति सुष पा
ये ॥ आये षग पति सेस सुरेसा ॥ आये भुवप
ति सकल नरेसा। हस्तनापुर ते पंडव आ
ये ॥ मिलत कृस्न कौं अति सुष पाये ॥ सेन स
हित जुरजोधन आये ॥ सब देव नि मिलि रु
कुम बुलाये ॥ रनिवास सहित न्रप पहुंचे तहां
आये निकर दूर कर जहां ॥ मिले कृस्न ब
लि देव सुजाना ॥ बसदेव पिता बहुत सुष मा
ना ॥ दोहा ॥ आये सुर पति सुर लियें और रा
पति असवार ॥ आवत आवै दुंदभी सा भाअ
गम अपारा ॥ चौपई ॥ आनंद सहित इंद्र
सुष माना ॥ दरसन दीनै श्री भगवाना ॥ बस
देव भीषम न्रपति बुलाये ॥ रानिनि सहित
महल बैठाये ॥ बसदेव उग्रसैन चलि आये
॥ मिलत न्रपति कौं अति मन भाये ॥ मिले
कृस्न बलि भद्र कुवारा ॥ आदर करि के न्रप पुबै
ठारा ॥ कनिक अवास तहां चलि आवा ॥ आ
दर करि कैं न्रप सुष पावा ॥ आई मिलन रु
कमिनि जहां ॥ भीषम राई न्रपति है तहां ॥ जो

तहिमिलतबहुतसुषपायो॥जननीमिलि
कैहियोजुडायो॥रानिसबनिकुवरमुषधो
यो॥जननीसुषऋमतिदुषषोयो॥नवबसु
देवविधिवुरतबुलाये॥पाटपटंमरमंडिप
छाये॥षंम्हकनकेरतनजराये॥धुजापता
काकेतुसुहाये॥कंचनकलसधरेतहांआ
नी॥ब्रह्माबेदपढतश्रुतिबानी॥पारासरगु
रव्यासबुलाये॥रिषिवसिष्टसोऊचलिआ
ये॥दोहा॥श्रीषमअनुपमंउपरचौजाहेर
चीवरान॥भुवपतिसुरपतिसबचलेवसदे
वहरषतगान॥चौपई॥कुसमसुकरमायैं
धरैआनी॥आनंदमंगलगावतिरानी॥
कनककलसभरिअरघदिवाये॥वहिनि
सहुदूकरतवधाये॥भेरिमृदंगवजंति
सहनाई॥देवदुंदभीअधिकसुहाई॥चरन
गंध्रपकिंनरगावै॥निरतकरतआनंदव
ढावै॥रुकुमिनिस्यामसंगभईठाडी॥मन
हुंलछिमीसमदमथिकाढी॥भावरिपरि
वहुतसुषमाना॥हर्षिवंतभयेदेवविवा
ना॥केसरिकस्तूरीबहुघोरी॥अगरअबीर
भरेवहुरोरी॥अतरुअबीरमलयघसि

॥ ॐ ॥ लोवे॥ पहुपनि की माला पहिरावे॥ इहि वि-
॥ २० ॥ धि सर्व छिरक भुवपाला॥ बहुरि दैहि रतन न-
नि की माला॥ गज हेर बहु रतन जराए॥ सुर-
भी सोने सींग मढाये॥ दीयौ दाइजो भीषम-
राइ॥ पदम असंषगनौ नाहि जाइ॥ साषि नि-
सहित रुकिमिनी दीनी॥ अस्तुति बहुत-
न्रपति नै कीनी॥ तुम प्रभु तीनि लोक केरा
जा॥ मेल घुभि नु काहें कहिं काजा॥ तुमम
रौ मनुराषौ सोइ॥ गयो सासि पाल अप-
ति पति षोइ॥ मूरष तुक मुकरनु वरि आइ॥
तुम प्रभु राषी अजहु राइ॥ बहुत सनाथ कि-
यो तुम मोही॥ कंन्या सरम सबै प्रभु तोही॥
नैनस जल करि रुकिमिनि दीना॥ तव अस्तु-
ति वसुदेव जु कीना॥ वसुदेव कहै सं कहि न
जाइ॥ तीनि लोक मै भई वधाइ॥ उग्रसैन वि-
सुदेव सीनी यो॥ भीषम न्रपति बहुरि घरि
आयो॥ दोहा॥ हरि जस अगम अपार है क-
हो कैसे मै जाइ॥ रामदास नै मूक है सोपनै सि-
धु समाइ॥ इति श्री हरिचरित्रे दसमस्कंधे श्री
भागवते महापुराणे रुकिमिणी विवाह व-
र्नणो नाम चतुर्थो ध्यायः॥ ४॥ श्रीसुषदे-

वुऊवाच ॥ चौपई ॥ सीस जोई जो हरि कौं नावै
रसना सो जो हरि गुन गावै ॥ श्रवने सोई हरि
सुनै पुराणा ॥ कर सोई सुफल देह जो दाना ॥ चर
न सुफल जो तीरथ जाई ॥ अरु हरि आगें निर
त कराई ॥ पंडित सो विद्या जु विचारे मूरष
जनम जूवा मैं हारे ॥ ऐसो जनम जतन कै पा
वै ॥ सो हरि कौं तू क्यौं विसरावै ॥ मनुष जनम
गति कीनी छारा ॥ मनुजि निविसरे मूढ गं
मारा ॥ दोहा ॥ वार वार वीनती करो मन नेतो
सौं समझाई ॥ हरि चरणनि चितु राषियो क
लि के दोष न सोई ॥ श्री परीछत उवाच ॥ चौ
पई ॥ स्वामी सुष मुनि पूछो तोही ॥ प्रद्युमनि
चरत्र सुनावहु मोही ॥ श्री सुषदेव उवाच
॥ चौपई ॥ जामवंत सतभामा राणी ॥ ते सब
व्याहि कृस्न जू आनी ॥ नृप कंन्या सुर कंन्या जे
ती ॥ नरकासुर हरि ल्यायो तेती ॥ ते सब आनि
ई कठी कीनी ॥ मारी असुर हरि जू हरि लीनी ॥
अग्नि नवं ला आगि नित हरता ॥ आगि नित
बहु विधि वेदनि करता ॥ ऊत नाम उपजत
नी साजा ॥ मंउप मंउ वाजत वाजा ॥ रूपवंत
सब कंन्या आई ॥ एक मूहूर्ति मैं सब व्याही ॥

॥ऊ०॥ ॥करति आरती देवकी माता॥ देषि रुकमि-
॥२१॥ णी हर्षित गाता॥ जामवति सतभंमा आई
॥ वहि निसहोद्रा करत वधाई॥ सोलेसहस
यक से राणी॥ अनुनिजु उदित आदपटरा
नी॥ सब रानी महलनि। चलि आई॥ कनिक
अवास पास फुलवारी॥ तिनिके संग श्रीउव
नवारी॥ महा पुरषमाया विस्तारी॥ दश दश
पुत्र यक कई क कंन्या॥ नई अधि जा देकी सं-
न्या॥ रुकमणी कृष्ण प्रीति अधिकाई॥ हरि
की शाक छु कहि नजाई॥ दोहा॥ अखिल-
लोक के स्वामी ताकी कलो अपार॥ नरवापु
र कहा जाने माया के विस्तार॥ चौपई॥ रु
कमणीजूकी प्रद्युमनि भये॥ सो हरि के संभरि
लेगयो॥ सो पुन उरि समुद्रहि दीना॥ पुत्र हर
त रुकिमिनि दुषकीना॥ सो सुत लील नमीन
नै लयो॥ जारू उरिहि मरलै गयो॥ संसो भ
यो न्रपनिकौं भारी सामा सो मुनि कहो विचा
री॥ किहि कारन संभरहरि लीना॥ को है उ
रि समुद्रहि दीना॥ सो मो सैं कहिये समुझाई
॥ नाते मम विषदोषनसाई॥ दोहा॥ श्रीभा
गवत समुद्र निधि कथा व्यासमुनि सारु॥

सोसुषमुनिपरगटकरीतारनकोसंसार ॥
॥चौपई॥ सुनहुकथापरीछतराई॥ श्रीसुष
देवकहेसमुझाई॥ संकरकमऔघकरिजा
रा॥ नषभरिनीनित्लोकविस्तारा॥ सोरतिक
मदेवकीनारी॥ पुरषविहूंनीविलषतिभा
री॥ तबसंकरसोईनारिबुलाई॥ करिपरबो
धनारीसमुझाई॥ ईतनोवचनमानिरति
मेरो॥ अस्मपुत्रवतुहहैतेरो॥ ईतनीसुनिकै
वनहिंसिधारी॥ तवरतीकरीतपस्याभारी
॥ तपकोतेजुवहुततवभयो॥ कालसंभर
रिगनारदगयो॥ नारदकहीत्रपतिसोजा
ई॥ तुनिजमंत्रहमारेभाई॥ वनमेनारएक
मेदेषी॥ मानोरविकोरूपविशेषी॥ रूपवंतक
छूकहीनजाई॥ सोसंभरमेतुम्हेवताई॥ ईत
नीकहीनारदरिषिगय॥ संम्हरकांमरूप
नवभये॥ अतिआतुरह्वैलेनन॥ सोकालसं वारी
भरल्यायोनारी॥ तुमपटरानीहोऊहमा
री॥ रूपवंतसवरानीहमारी॥ तेसवदासी
करोतुम्हारी॥ रतीऊवाच॥ सुनहुवातअसु
रनिकेराई॥ तुम्हारीवातवहुतहमेभाई जो
तुमहमसोपुरियसनेहू॥ वचनहमैयहमांगै

॥३०॥ देहु॥ जोन्न पतुम्हरे होइ रसोई॥ मोहे सौं विन
॥२२॥ कछू न होई॥ अतु मोहि दीजै दूरी अवासा॥ दा
सी लागि आउं तो पासा॥ रति नौ कहि संम्हर
सुष पायो॥ हरस परपरि तु रति सुष पायो॥ क
नक मेहल रति लै वैठायो जो तुम मीति करमो
हि वुलायो॥ एक दासी मोऐ लैन पठायो॥ तव
आउं मै तुमरे पासा॥ वहु विधकीजै भोगवि
लासा॥ रति नी सुनि संम्हर सुष पायो॥ तव न्न
पर सी दई पठाई॥ सो रति पासै पहुची जाई
॥ रति को रूप देषि मुरझानी॥ याके रूप और न
ही रानी॥ तव रति मन मै वुधि विचारी॥ मा
या रूप करी ईक नारी॥ सो दासी के संग पठाई
माया रूप भूप ढिग आई॥ ईंहि विधि रति दा
नौ सम झुरायो॥ तव नारद संभरि ढिग आयो
सुनु संम्हर रनि जु हमारी वाता॥ तुमरी मृत्यु क
ष्म सुत हाथा॥ सुनहु वात असुर नि के राई॥
वि षकौ वेलि न्रपति नै जाई॥ ईतनी कहि ना
रद रिषि गयो॥ तव संभर कौ संसौ भयो॥ प्र
द मुनि कुवर तु कमिनि कौ जायो॥ सो संभर ह
रि कै लै आयो॥ सो पुनि आनि समुद्र मे डारो॥
लील्यो मीन ली नौ तिहि वारा॥ दोहा॥ सुषसु

निकहेनृपतिसौंसुषमुनिसें। कहेव्यास॥
रामहोसनिजुजनकैं। राषौंचरनसिवास॥
॥चौपई॥ सुनीकथानृपनाईसेवा॥ धंन्यधं
न्यस्वामीसुषदेवा॥ श्रीसुषदेवउवाच॥ सो
मछरीहीमरनैंआयो॥ सोईमीनरतिकैंप
हुचायो॥ पेटफारितवकुवरनिकासा॥ देषि
रूपरतिभईहुलासा॥ यहविघनाकोआचि
रजभारी॥ संकरवचनविचारतनारी॥ अति
सुषसौंरतिधाईलगाई॥ औरदूसरैषवर
नापाई॥ नितपोषतनितदेषतिनारी॥ दिन
दिनरूपदेषिसुषभारी॥ तपकेतेजुवहुत
सुषपायो॥ पुनिनारदरतिकेंढिगआयो॥
नारदकह्योसुनोहेनारी॥ अवनिजुमानो
वाततहमारी॥ यहवालकतुम्हरोपतिआ
ही॥ सोसंभरहरिल्यायोनाही॥ सोपुनि
उरोसमुद्रमझारा॥ कृष्णपुत्रजेदुवंसकुमा
रा॥ अरुरानीरुकमिनिकोवारा॥ कामदेव
कोंहेअवतारा॥ सोनिजुआहितुम्हारोकं
ता॥ नवकामिनिसुषभयोतुरंता॥ वहुवि
धिकरैनासुकीसेवा॥ औरनकोउजानत
भेवा॥ षोउसवरषकुवरहोईआयो॥ तवर

॥ऊ०॥
॥२३॥

ति अपनें मे हे लवु लायो ॥ ई तनी कहिं नार
द मुनि गयो ॥ नव कामिनि कों अनि सुष भये ॥
सो चतिवेल्लि सुधा के जैसें ॥ बढे तु वर दिन छि
दिन जैसें ॥ प्रद्युमुनि रूप देषि रति भारी ॥ उद
मद जो वन वेसें कि सा री ॥ रति नें रूप कियौ
अधिकारी ॥ ना कौ उपमा औरन नारी ॥ कन
कलता सिर रतन जराई ॥ मानो ई द्रलोक तें आ
ई ॥ भौं य धनुक का जर दीयो नैना ॥ नष सिष
आजु मदन गढ लैना ॥ आई पलिका निकट
निवासा ॥ चंद्र बदन मनो कियो प्रकासा ॥
म्रग मद के सरि पलिका पासा ॥ अगर क
पूर मेले घरि बासा ॥ तिहि पलिका रति बैठी
आनी ॥ करे कटाछ हसे तम सुसकानी ॥ म
स क चरन कर ऊपर धारा ॥ तब बोले जदु
वंस कुमारा ॥ यह अजु गति कहि कौन वि
चारा ॥ तुम माता मै पुत्र तुम्हारा ॥ यह जिन
कुवर कहो अधिकारी ॥ तुम पति मै निज दा
सी तुम्हारी ॥ संकर कथा कहीं समुझाई ॥ अ
तु नारद मुनि गये बताई ॥ दोहा ॥ तुम कार
न वंन तप के रंसु निज दूवंस कुमार ॥ तुम
पति दासी आहि मे तुम पति प्रान अधार

॥चौपई॥ इतनी कथा सुनी रति पासा॥ सुनत कुवर को भयो हुलासा॥ ज्यों वांदी अहिठे कज गावा॥ अैठनु कुवर मदन द्रग छावा॥ पलिका कनिक पोहे पव हु उरा॥ रतन ज्योति मेहे लनि उजियारा॥ रति प्रदमुनि सुष अभारी॥ नित नित प्रीति प्रैम अधिकारी॥ कुवरहि पवन रूके रति नारी॥ तिहि छिन मालिनि पुहची आनी॥ चंपो चारु चमेली करना॥ वहावे धिपो हे पकिये आभरना॥ गजरा हार पोहे पव हु रंगा॥ मालिनि पहिरावती सव अंगा॥ कुवर देषि मालिनि मुरझानी॥ वाहु पकरि रति वाहिर आनी॥ कही मालिनि सो सो निजु वाता॥ किहि कारन वेसुधि भये गाता॥ तव मालिनि वोली सति भाऊ॥ अैसो रूप न देषो काऊ॥ तव रति ने मालिनि पहिराई॥ यह जिनि वात कहो कहु जाई॥ रति आई प्रदमुनि के पासा॥ कछू हसति कछू लेति उसासा॥ कहे कुवर सुनि हो वर नारी॥ किहि कारन मन सोचु विचारी॥ रानी कहे सुनों जदुराई॥ मालिनि न्रप सो कहि हे जाई॥ तव दानेस व करहि पुकारा॥ या है सोच

॥ऊ०॥ जदुवंसकुमारा॥ श्रीप्रदमुनिरुवाच॥ अव
॥२४॥ दानैनिकैसोतुनिवारौ॥ अवपोरषवलुदेषि
हमारौ॥ प्रदमुनिवैठैछाजेजाई॥ मनोईंद्रलो
ककीराई॥ चाकरवहुविधिसंगलगाई॥ त्रभ
यवैठेश्रीजदुराई॥ मालिनउवाच॥ तवमा
लिनिनृपआनिजुहारा॥ कहैसवैरतिकेप्यौ
हारा॥ कुवरएकहैरानीपासा॥ मानौरविकीकि
रनप्रकासा॥ दोहा॥ येकहिंपलिकावैठहै
तैरूपकहौनहिजाई॥ कैसुरपतिकैरतिप
तीकैगंध्रपकौईआई॥ चौपई॥ ईतनीसुनी
असुरनिकैराई॥ ताहिवांधिजैआवहुजा
ई॥ तवदानैसवलगैपुकारा॥ घेरिमहिलस
वरहेजुरारा॥ रानीउवाच॥ कुवरकछूसं
कानिमानौ॥ चौदहविधेजूरुफीजानौ
॥सुनौकुवरजदुवंसकुवारा॥ जोचाहौसोल
हुहथयारा॥ तुमजिनसोचकरहोरानी॥ अ
सुरमारिमेटौरजधानी॥ वैठोकुवरआनिदर
वारा॥ ज्योंकेहरगजजुथ्थविडारा॥ कृस्नपु
त्रअतिवलिअपारा॥ दानैमारिकरैसंघारा॥
हाथीसोहाथीगहिमारै॥ रथसवपटकचूरु
करिडारे॥ अगिनितपैदनुमारेजाई॥ देषति

रतिपतिकी सुनसाई ॥ धंन्य धंन्य जदुवंस
कुवारा ॥ येक अकेलौ लाषन मारा ॥ संम्हर
संन्या लेन पठायो ॥ नारद नव सुरपतीगि
गआयो ॥ नारद कहैं सुनौ सुरराऊ ॥ संम्हर
कथा कहौ समुझाई ॥ अब तुम वेगि सजो क
टकाई ॥ जैयंत कुवारन वली येतु लाई ॥ न
व सुरपती सब सुरन बुलाये ॥ औरापति हा
थी पलनाये ॥ ईंद्र पुत्र पुनि षरौ जुझारा ॥
आरा पानि चढि चल्यो कुवारा ॥ वज्र वान ले
चलो कुवारा ॥ दानै मारि करै सब छारा ॥ स
कल देव महा त्रपसाई ॥ देवलोक मैं रहौ न
कोई ॥ कृस्न पुत्र कौ लगे गुहारी ॥ असुरने घे
रो मेहल विकारी ॥ दानव संन्या चली अपा
रा ॥ पुनि घेरो जदुवंस कुमारा ॥ आनि अगि
नि वान परकारा ॥ मेहल नि उठी अगिनि की
झारा ॥ निरवानु रति दीनो आनी ॥ बरसत
पानी अगिनि वुझानी ॥ नागवान संभर सौ
डारा ॥ गरुडवानु मद मुनि परकारा ॥ गरुड
चौंच चिन वैरि सकाला ॥ नाग भाग सब ग
ये पताला ॥ त्रास वान तब अत्र पति जुझ
रा ॥ सीतल वान जदुवंस कुमारा ॥ वान

॥३०॥ निवाननि वाढिरारा॥ मानौं प्रलय कौ अगिन
॥२५॥ झरा॥ दोहा॥ कोट असुर एक प्रद्युमनि कौ
नौ जूझ अघाइ॥ ऐरापति चढि आयौ जैयं
त वज्र वान लियें हाथ॥ चौपई॥ प्रद्युमनि रति
सौं पूछौ सोइ॥ सुरग लोक तें आवै कोई॥ तव र
ति वात कही समुझाइ॥ तुम प्रभु तीन लोक के
राइ॥ यह सुरपति सुत नाम जयंत॥ ऐरापति
चढि आवत तुरंत॥ अरु यह वज्र वान लैं हथा
॥ सकल देवता आवत साथा॥ इतनि सुनी प्र
द्युमनि सुष पायौ॥ तव सुरपति सुत नीयरें
आयौ॥ मिलै कृष्ण सुत औरजयंत॥ अरजु
हिं मारौ असुर तुरंत॥ असुर वानु मारौ समु
हाइ॥ इंद्र पुत्र परियौ मुरझाइ॥ तव रति विष
मै मंत्र ह कर॥ उठौ कुवर पुनि फिर गलहारा
॥ तव रन मैं सुरपति कौं को वारा॥ वज्र वान अ
सुर संघारा॥ कृष्ण पुत्र लियौ वानु रीसाइ॥
मारौ संभर दयौ गिराइ॥ वज्र वान कौं सहै अ
पारा॥ मारौ संभर मिलि गयौ छारा॥ इनैंव
हु तज यंतिनि मारे॥ मारि असुर सव छार क
रि डारे॥ तव प्रद्युमनि रति अति सुष पायौ॥
इंद्र पुत्र कौं अति निकट वुलायौ॥ पहिराइ व

हु विधि की साजु ॥ संभरपुर को दीनो राजु ॥ श्रे
रापति चढि चलो कुवारा ॥ देव दुंदभी बजी अ
पारा ॥ चलो कंथ निजु पुरी तुम्हारी ॥ जहा तुम
मिनि सासु हमारी ॥ जब मै देषौ उनि को जाई
॥ सो दिन सुफल होइगो जाई ॥ इतनी सुनि प्रद
मुनि सुष पायो ॥ रति को पुहप विवान चढायो
॥ दोहा ॥ दानो संम्हर जीति के प्रदमुनि चढे
विवान ॥ मानो हे रवि की कला दूरो बतिमिय
रान ॥ चौपई ॥ तब नारद ने दरसन दीना ॥ तब
रति उतर दंडवत कीना ॥ प्रदमुनि मिलत म
हा सुष पायो ॥ तब नारद कहि षबरि सुनायो ॥
तुम्ह माता दुष कियो अपारा ॥ षान पान ता
जि मेले चीरा ॥ तुम बिन भयो जु छीन सरीरा
॥ जैसे कमल हेम की पीरा ॥ मानो चंद्र गिलो
हे राहू ॥ माता दुषि कियो हे दाहू ॥ इतने सुन
नारद के बेना ॥ व्याकुल कंठ झिरत हे नेना ॥
अतुराने नैन नीर भरि आरो ॥ नारद चले हु
रका आये ॥ चढि विवान प्रदमुनि रति गये ॥
सिंह दुआर का तव ठाढे भये ॥ तव दुषु पावति
सव री नारी ॥ इतनी कूसम करत अधिकारी
॥ जहा जहा जात तहा दे षाति नारी ॥ अति मद

कृ० २६

जोवन रूप अन्यारी। नारद कहौ कुसल सों जाई॥ आई गयेत वश्रीजदु राई। देषिपुत्र तव हरि उरलाय॥ अरु पुनि नैन नीर भरिआय॥ कहि कुसल तु किमि निसों जाई॥ आयौ पुत्रमिलो किनि धाई॥ तु कमणी कंठ लगायो वारा॥ नैननीर उर लागी धारा॥ रुमति सुष जननी उरलायौ॥ अरु थन पान षीर भरि आयो॥ बहु रिजुक मिनि लेउर लायो॥ मानौ रंक परो धनु पायौ॥ रतिकोरूपदेषि सुषपायो॥ रुमनि सुष अतिहुहै जुआयो॥ तव रति रुकमिनि के पग लागी॥ तुम सुत ते मै भई सभागी॥ मिलन कुसल तव अति सुष माना॥ गावत मंगल वजि तनी साना॥ तव नगर मे भई जो ना रा॥ मिले आनि वलदेव कुमारा॥ वसुदेवपिता देवकीमाता॥ मिले आनि पुनि हरषत गाता॥ रुमो सुष भेरेउर लाई॥ मानौ रंक परो धनिपाई॥ भेटे आनि सहो द्राकुवारी॥ अहो कुवर एक पूतु म्हारी॥ उग्रसेनी राजा चलि आवा॥ मिलत कुवर कों अति सुषपावा॥ ० आई सव जादों की नारी॥ देषि कुवररति रूप उजियारी॥ गावत मंगल गीत सुहारे॥ आ

नंद घर घर वजत बधाये॥ पाट परंमर मै हेल नछाये॥ गजमुति यनके चौक पुराये॥ कंचन कलस धरे नहीं आनी॥ गावत मंगल आनंद रानी॥ घर घर बाधी वंदनवारा॥ आनंद सहित सवै परवारा॥ तव हि रुकमिनि रथ तें गारा॥ सुफल जनम अव भयौ विधाता॥ सासु सासु के चरन न लागी॥ तुम प्रताप तें भई सभागी॥ तुम प्रताप तें पायो धारा॥ आजु जनम भयो सुफल हमारा॥ अस्तुति करति रुकमिनी भारी॥ पहिराई सव व्रज की नारी॥ अरु राली पहिराई सोई॥ तुम्हरे पुन्य नि तें फल होई॥ तव रुकमिनि रति वहू वुलाई॥ सव रानिन के पाई पुराई॥ देखि रूप सुष अति भयो रानी॥ अव निजु रुकमिनि अनु सवरानी॥ उवटि कुंवर नत हरअन्हवावा॥ षटरस विंजन भोग वनावा॥ अति सुंदर पाटंबर लाए॥ सो प्रदमुनि कौं ले पहिराये॥ अंग अंग भूषन कियसिंगारा॥ प्रदमुनि कामरूप अवतारा॥ दोहा॥ रुक्मनि रुकिमिणी हर्षित वसुत हित अधिक सनेह॥ रामदास कौं कृपा करि भक्ति नि छाव रि देह॥ इति श्री हरि चरित्रे द

॥ऊ०॥ इस्कंधे श्री भागवते महापुराने दसमस्कंधे रुकमिनि प्रदमुनि मिलनो नाम पंचमो ध्याय ॥५॥
॥२७॥

॥श्री सुष उवाच॥ चौपई॥ ॐ रुकमिनि सुनो जदुराई॥ पुत्र हेत कछु करो वधाई॥ छटी करी प्रदमुनि की सोई॥ तब हम मेरे आनंद सुष होई॥ सुनि कृस्न तव अति सुभ बानी॥ करो छटी तुम रुकमिनि रानी॥ भेरमदंग बजत सेहनाई॥ जादो नारि सब नोती आई॥ उग्रसेनि की रानी आई॥ ते रुकमिनि सबनि कर बुलाई॥ आदर बहुत सहु हुआ कीना॥ केसर गारि सुषु मांउन कीनां॥ जामवंत सतभामा आई॥ माई देवकी करत वधाई॥ पूरे चौक सहेली आनी॥ अंनंद मंगल गावति रानी॥ कनिक नस धरि करति बधाई॥ रानी रुकमिनि चौके आई॥ गावत सब मिलि मंगलचारा॥ बाजै बजन तब बहुत रून कारा॥ सब रानिनि मिलि टीका कीना॥ प्रदमुनि कुवर अंक भरि लीना॥ दोहा॥ वीर पिवावति रुकमिनि प्रदमुनि हृदैं लगाय॥ माता देवकी करत निछावरि यह सुष कहौ न जाई॥ चौपई॥ प्रदमुनि कौं जब कृस्न बुला

क

यो॥ श्रमतमुषहिजं घवेटायो॥ रतनजरित
मंदिर छविभारी॥ सो प्रदमुनि कौं दयौ मुरा
री॥ नील पीतमनि छाजै संवारे॥ हे मज
टितनगल्लागे भारे॥ चित्र चितेवर कियौ
अपारा॥ तहां आये जदुवंसकुमारा॥ नवर
तिवहूमेहेलनि पहुचाई॥ संगवहुत दासी
चलि आई॥ देषि महलरति अतिसुषमाना
॥ अपनौं जनमु सुफल करि जाना॥ आई महलर
तिपलिकाउंसा॥ अगरकपूरसुगंध निवासा॥
सीतलजल झारी भरि राषी॥ लोंग कपूर ला
ईची नाषी॥ अंग अंग भूषन किये अधि
कारा॥ रतिके वदन चंद्र उजियारा॥ प्रद
मुनि रति कौं उ अधिकाई॥ दिन दिन प्रे
म प्रीति अधिकाई॥ रति को रूप रुकम
णि देषा॥ मानौं रविकिरनि विसेषा॥ गर्भमा
स दस कौ भयो जवहीं॥ अनिरुध कुवर अवत
रे नवहीं॥ आनंद मंगल वजत निसाना॥ अनि
सुन लगन वहुत सुष माना॥ हरषवंत हरि आ
ये तहां॥ वाजे वजत सुहाये जहां॥ गावति मं
गल रुकमिनि रानी॥ दधि अरु दुर्वा ति
न करु चिमानी॥ घर घर वांधे वंदनवारा

॥ ऊ० ॥ ॥ आनंदसहितपरवारा ॥ अनुरुधनामुषा
॥ २८ ॥ रोद्रुजराई ॥ माईदेषकीकरतवधाई ॥ बरसचा
रिकौ अनुरुध भयेऊ ॥ षेलनि साथ सषनि
केगयेऊ ॥ षेलतनि समंदिर अंधियारा ॥
अनुरुपकुवरजोतिऊजियारा ॥ असोरू
पकहिननजाई ॥ राजतमदमुनितेअधि
काई ॥ ईतनीकथाकहीमुनिजवहीं ॥ सुनत
न्त्रपतिसुषपायोजवहीं ॥ दोहा ॥ मदमुनिअ
उनुधजनमकीसोभाकहीवषान ॥ बलिसु
तआनासुरकथासुनौन्त्रपतिदेकान ॥ चौ
पई ॥ वानासुरअसुरनिकौराई ॥ अरुजो
धाकोऊजीतनजाई ॥ सोनतपुरनग्रनकौं
राई ॥ भुवनचतुर्दशजीतीनजाई ॥ माहादेव
कोसुमरनकीना ॥ हूदशवर्षअंनुंनजिही
ना ॥ पानीपवनअंनुसोईसाधा ॥ सिवकेचर
नकमलचितुवाधा ॥ सिवसिवकरितवध्या
नुलगावा ॥ रुधिरमासुसवचीरिनिषावा ॥
लोगोवमीहोहाउसुषाना ॥ सहस्त्रवर्षतव
भईपरवाना ॥ अवनहिंअंनुदेवचितुलाऊं
॥ काटिसीससिवतुम्हेचढाऊं ॥ दोहा ॥ रोक
चरनयेकआसनसिवसोंप्रीतिजुवांधि

कीयो कष्ट वीना सुर तव सिव जागि समाधि ॥ चौपई ॥ कै कैं दिन बहुत तन न भासा ॥ तव सि भू आयन्न पपा सा ॥ सिं भू कही न्रपति सों आ ई ॥ मांगु मांग असुरन के राई ॥ जो मांगे सो दे हों तो ही बहुत कष्ट तपु कीनों मोही ॥ वाना सुर उवाच ॥ चौपई ॥ मे मांगत हों सिं भू तो ही ॥ सहस्र भुजा उर दीजे मोही ॥ जीतों म्रत्त मेरुल भेत पाला ॥ जीतों सुरगि लोक भुवाला ॥ तुमप्रताप भुज भार संम्हारों ॥ दस दिगपाल जीति वस करों ॥ दोहा ॥ न्रप मांगो सो स बु दियो सुत अपने के हेत ॥ ताते भोला नाथ सिव रिझि आपु ही देत ॥ चौपई ॥ तव सिं भू दी नों वरदाना ॥ परसि चरन दनुज जे नि सांना ॥ सेंनि सहित घर आयो राई ॥ नारद मुनि तहां बोल जाई ॥ नारद कहो सुनों न्रप वाना ॥ कहो सिं भू दीनो वरदाना ॥ वु उई स गिरजा पति देवा ॥ बहु विधि कष्ट करी तुम सेवा ॥ कहें न्रपति सुनों मुनि देवा ॥ हम को अमर कियो सिव देवा ॥ अव मो सों जीते न नहीं कोई ॥ तीन लोक ष सकरि हों सोई ॥ श्री नारद उवाच ॥ नारद कहो सुनों न्रप वाना ॥ मुकति न मागी अति निरग्याना

॥ उ० ॥
॥ २८ ॥

मुकति विना मति भूली तेरी ॥ वेगि अजहु माति
मानहु मेरी ॥ मोहि कासी को पंडित जानों ॥ चा
रि वेद मुष अगनव पानों ॥ सुनत बात न्रप
भयो उदासा ॥ पुनि आयो संभु के पासा ॥ प
रसि चरन न्रप जोरे हाथा ॥ मो कौं मुकति दे
हु सिव नाथा ॥ अगिन कोट मोहि नग्र जो हो
ई ॥ तहां सत्रु नहि आवै कोई ॥ भुजा हमारे षि
त कीजे ॥ यह संभ्रे हम कौं वर दीजे ॥ श्री सं
भू उवाच ॥ असुर बुधि सिधि कबहूं न हों
ई ॥ तो कौं बचननि छलि गयो कोई ॥ मन
वांछत कीनों सिव नाथा ॥ हरषि विभूति दे
रे न्रप हाथा ॥ दई धुजा सो अवधि बनाई
सो न्रप बांधो महलनि जाई ॥ सब नग्र हैम
आ षोज बहीं ॥ टूट धुजा भू आवै नव हीं ॥
यह परचौ बानासुर जाना ॥ पाई विभूति बहु
त सुष माना ॥ संकर दैव रतुरत गसि धावा ॥
तब बानासुर अति सुष पावा ॥ बानासुर
चलि आई अवासा ॥ फेरि विभूति नग्र चहु
पासा ॥ बांधि धुजा महलनि पर जोई ॥ अ
गिनि कोट उठे अति सोई ॥ दोहा ॥ बानासु
र सो राजा सिव वर दीनो सोई ॥ सहस्र भुजा उ

रजा कैंजु ध्यन जीतै कोई ॥ चौपई ॥ सो
नित नग्र न्रपति की आना ॥ निसदिन अ
नंद बजति निसाना ॥ चहूं ओर दिसि चित
रसारी ॥ हीरा षचित कनिक गच ढारी ॥ अ
गिनित महल निधुजा पताषा ॥ गजहैवर
रथ अगिनित लाषा ॥ बाग सघन सोहत
अतिभारी ॥ सीनल छांह पवन सुषको
री ॥ नाना वरन ब्रछ की जाती ॥ अठारह
भार व्रक्ष की पाती ॥ प्रथम नारीअर औ
र सुपारी ॥ षारिक द्रुष पपरे छविभारी ॥
लौंग लायची कहि यन जाई ॥ अंम्रत प
ल निबुवा आंधि कोई ॥ सीताफल षिरनी
वादामा ॥ लटकि फरे बहु विधि के आमा ॥
जामुन ईमलि ललित अनारा ॥ नलकि
नारंगी फरी अपारा ॥ मीठे केरा अंम्रत भ
रे ॥ राई करौंदा छौंकनि फरे ॥ सोहत तारषर
छ फल हूरी ॥ सरवर सोहै पट झरी ॥ कट
हर कै घ कैहूं कचनारा ॥ फरे ब्रछ बहु वरन
अपारा ॥ वरषी परषा करि बहु नामा ॥ त
हां निजु पंछिनि को विश्रामा ॥ चंदन रातौ
अरु देवदार अति सुगंध मत्यागीरिसा

॥ ऊ० ॥ उ॥ बहुविधि ब्रछ फरे बहु भाई॥ तिनके स्वा
॥ ३० ॥ द कहे नहि जाई॥ मउवा कौं चरहे लटकाई
॥ अचार चिरोंजी कहै न जाई॥ मीठे बेर सुरे
र सुहाए॥ स्वाद अमृत अमीरस छाये॥ बा
ग सघन घन फरे अपारा॥ बरनें कौंन अ
ठारह भारा॥ नालबावरी कुवानि बासा॥
सोहत नग चकंचन सुभ वासा॥ फूली तह
बहुत फुलवारी॥ चंपो चारु चमेली न्यारी
॥ सूजो करना कनयरि लाला॥ जाही जुही
कुंद गुललाला॥ पाउर बान मालती जो
सू॥ नैन सुगंध भवंते हा बास॥ फूलें पास
रने फूल अनूपा॥ बहु बसुगंध फूले बहू
धूपा॥ सरस सुगंध केसरा घनेौं॥ घौं कु
नि फूलि रहि सो जानौं॥ कठसेहु रूबा सघ
न घन सारी॥ फूल के बरकी अतिवारी॥ ब
रनकौंन पोहपकौ अंत॥ जल तीर छबि
छायो बसंत॥ बोलत मोर सदा सुषदाई॥
कोकिल के हूक मदन छबि छाई॥ सारो
सुवा बरनकौं मैंने॥ पंछी रंग सरस सब
बनें॥ चकही चकवा सरस सुजोरा॥ बोलस
बद कोकिला चकोरा॥ अगिनित पंछी ना

ना भांती ॥ राम दरस पे वरनन जाती ॥ मंदि
र बहुत बाग मे जहां ॥ कंचन कलस विराज
त तहां ॥ बानासुर वैदतु जहां ॥ बाग चहूं दिस
राजत जहां ॥ कहूं नटनट कला जनावे ॥ कहूं
पेषने नारी निचावे ॥ कहूं मल्ल भुज भिरहि
अपारा ॥ कहूं लरत हाथी हथसारा ॥ होइ नक
छन व्यापे रोगु ॥ आनंद सुषी नग्र को लो
ग ॥ बावन कोस नगर विस्तारा ॥ अगिनि
त घिर की ये कुनि कारा ॥ बानासुर के कन्या भ
ई ॥ रूपवंत विधना निरमई ॥ धरी पिता तिहि
ऊषा नाम ॥ इहि विधि चपाति होई संग्राम
॥ इहि विधि कुवारि दिन हि दिन बाढ़े ॥ मानो
रूप उदधि ॥ मथि काढ़ी ॥ भूषन अंग अंग
की ने जेते तेते मे वरनि कहो बुधि तेते ॥ अति
विचित्र सोई राजकुमारी ॥ आपुहिं विधना
सांचे ढारी ॥ जरत कसव को लेहेंगा राजे
॥ सुरंग चूंनरी अधिक विराजे ॥ ललित
कंचु की ऊपर सोहे ॥ मनहुं गयंद चालि
मन मोहे ॥ बेनी सरस फुलेल संवारी ॥ सी
स फूल सिर चमकत भारी ॥ करन फूल का
ननि दृग सोहे ॥ चंदन चंद पुनं छवि मोहे ॥

॥ ॐ ॥ भुटिला कानन तैरौंना काना॥ मानौ रविर
॥ ३१ ॥ थ चक्र समानौ॥ वेसर नासाजन सुत राजै
॥ मनहुं सुरगुर की छबि छाजै॥ महा कामनि
तिलक छबि जोती॥ मागसं मारि गुहे गजमो
ती॥ काजर रेष दृगनि पर राजै॥ मनौं कुरंग क
मल छबि छाजै॥ दसो दिसनि सो हत अ
धिकाई॥ अधर अरुन छबि कहि यन जा
ई॥ मुष तामोर अमी रस नैना॥ कोकिल ब
चन सो बोलति बैना॥ कंठ सिरी दुलरी अ
ति राजै॥ कंचुकी मधि उर हार बिराजै॥ ता
ई तकारे पाद बराये॥ मानौं भवर कमल ढि
ग आये॥ स्याम चूरी सुदरी नग लागे॥ न
षनि अनूप महावर पागे॥ पग नेवर की अ
ति रुनकारा॥ मनु मोंतिनि की मैंलि अपा
रा॥ रूपवंत अति रची बिधाता॥ षेलत कु
वरि साषि न कै साथा॥ साषिनि संग अति
राजति गोरी॥ मानो येक उर की डोरी॥ गई
बाग मैं साषि यनि संगा॥ नाना भांति पो हुप
बहु रंगा॥ इति श्री हरिचरित्रे दसमस्कंधे
श्री भागवते महापुराणे उषा श्रृंगार बरन
नैंनाम सषटमो अध्याय॥ श्री सुषन उवा

चा॥ चौपई॥ बोलत मोर हंस सुषदाई॥ स-
षिनि षाउ ऊषा तहां आई॥ निकट सरो-
वर पाहीं सुहाई॥ कमल फूल जल अधिक
सुहाई॥ फूली सघन मालती जहां॥ भवर
सुगंध लेत है तहां॥ मंडप बहुत सरोवर ती-
रा॥ सोहत रतन पदारथ हीरा॥ पारबती सि-
व देषे जाई॥ तिन कौं देषि रहि चितु लाई॥
सिव पारबती है दोउ संगा॥ जलचर दोऊ पो-
है पवहु रंगा॥ हार डोर भीजे तन चीरा॥ अ-
जु ले निसी च तिसि व सरीरा॥ ऊषा देषि भ-
यो सुषु भारी॥ काम वंत तव भई कुमारी॥ ऊ-
षा देषि उमा मुसिकानी॥ मै तेरै मन की स-
व जानी॥ तूं निसु दिना जपति है मोहि॥ मै
ऊषा वर दीनौ तोही॥ तव ऊषा बोलि विह-
सई॥ रूप सुभग वर दीजे माई॥ वैसा षमा-
सर जनी उजियारी॥ ता दिन पुरष मिलै
तोहि नारी॥ अति सुभ घरी पंचमी होई॥
अति सुंदर वर पावै सोई॥ सो सपने आवै
वर नारी॥ सो पति तुम्हरे राजकुमारी॥ दो-
हा॥ पारबती के वचन सुनि ऊषे भयो हुला-
स॥ करि प्रनाम मन समुझि कैं गई साषिनि के

॥३०॥ पास ॥ चौपई ॥ रेषा कहै सुनो हे बीरो ॥ कहां बि-
॥३२॥ लमि रही राजकुमारी ॥ तुम बिनु भई बहुत आ-
धीना ॥ जैसें जल बिनु तलफति मीना ॥ सषि-
नि संग ऊषा घर आई ॥ जननी बदनु चुंमब-
लि जाई ॥ सुनि ऊषा य हबाव हमारी ॥ अप-
ने महलनि जाहु कुंवारी ॥ तुम सषियनि सं-
ग रेलु लगायो ॥ सुनि राजा मासौं दुष पायो ॥
ऊषा चलि सोई महलनि आई ॥ चित्ररेषा नि-
जु सषी बुलाई ॥ बहुत प्रीति करी राषति ताही
॥ बासर रहै रैंन घर जाही ॥ ईहि बिधि सेवा क-
रे सुजाना ॥ ऊषा रीझि देति है दाना ॥ बचन बि-
लास आस अति भई ॥ उपैं सोई सषी घर
गई ॥ ऊषा सोवत तहीं सुष पायो ॥ सपने कुंवर
पति का पर आयो ॥ अनुरूध रूप देषि मुसि-
क्यानि ॥ भोग करत सुभै रैंन बिहानी ॥ ऊ-
षि जगीत ब कुवर ने देषा ॥ रुदन करति सुष सु-
रति बिसषा ॥ लज्या बहुत भई तन गाता ॥ ब-
हे पुरुष कहा मिले बिधाता ॥ इहि बिधि सो-
चति राजकुमारी ॥ चित्रा आई गई तिहिं बा-
री ॥ कहि ऊषा के सौ दुष भये ऊ ॥ काजर नैंन
नीर ढरिग यऊ ॥ नैन अरुन रस आलस भरे

॥ औरउ अमीर सषी कनिढारे॥ कैतुम उरपी मह-
लनि गाता॥ कहिऊ षा मोसों निजु बाता॥ तब ऊ-
षा बोली बिहसाई॥ सषी बात कछु कहि मन जा-
ई॥ लाज की बात कहों मैं तोसों॥ सपनें भोग पुरि-
ष कीयो मोसों॥ सो देषे बिनु तलफैं प्यारी॥ मोर
हों पेट कटारी मारी॥ ऊषा के बचन सुनत सुसि-
कपानी॥ मैं तेरे सपनें की जानी॥ सिव पारवती-
तो हे बर दीना॥ सुपनैं पुरुष मागि तुम लीना॥
मैं तोहि पूछत राजकुमारी॥ कैसो बर कौन उ-
नहारी॥ कौन देस तें आयो साई॥ किन के घर स-
षय सपुनि होई॥ देस मरम नहि जानति माई॥
सुष सपनें गयो बाह छुडाई॥ औसो रूप न देषे-
को ई॥ अति सुंदर कोउ गंध्रप होई॥ चित्रा उवा-
च॥ चौपई॥ ऊषा तें नहि जानति मोही॥ मैं लिषि
चित्र दिषाऊं तोही॥ दोहा॥ कूप मंउ की कंन्या म-
चित्रा रेष सुनाऊं॥ लिष्यो ईंद्र ईंद्रासन देस दे-
स पुरगाऊं॥ चौपई॥ प्रथम मालिषो सिव कौ कै-
लासा॥ चंद्र सूर दोइ नषत आकासा॥ पुनि सु-
रपुर देषो लिषि जाई॥ ईंद्र सभा चित्रा चित आई॥
देव कोटि तेतीस ऊ आई॥ चित्रा चित्रलि-

॥ऊ०॥ ब्यो छिन माहे॥ ब्रम्हलोक चित्रा चलि जाई॥ लि
॥३३॥ षि कागद ऊषा ढिग आई॥ ऊषा देषि पत्र लै सो
ई॥ जो कछु इहि कागद मे होई॥ देदै पौढ ऊषा चित
लगाई॥ कहुं पुरुष न हिं देषति सोई॥ चित्रा कहै
सुनौ हो बाला॥ जंबू देस लिषे भुवपाला॥ देस
देस के भूपवताऊं॥ प्रथम अजुध्या लिषि दि
षराऊं॥ पाट बंध जे राजकुवारा॥ कासी लिष्यो
धर्म अधिकारा॥ पंउव देस उउ साथा ना॥ पु
री हुरिका रचि भगवाना॥ लिषे पंउवा कौरों
सोई॥ देस देस मति वच्यो न कोई॥ बहौ कथा जो
॥ बरनो देस॥ तन न कहु वात कै वउ संदेस॥ ब्या
स पुरान सारनि जुत हैं॥ सो सुष राजो मुनि सों
कहै॥ सूरति मूरति लिषियो सोई॥ गाउ गाउ घ
र वच्यो न कोई॥ सकल लोक लिषियो रजधानी
॥ ऊषै चित्र दिषायो आनी॥ ऊषा देषि लियो पु
त सो ई॥ जो कछु या कागद मै होई॥ ऊषा चित्र
देषि अनुरागी॥ वहि पुरुष नहि मिलो सभागी
॥ देखि पांउवो भाई॥ भगति भाव जिनि कै अ
धिकाई॥ करन सरूप लिषियो सो ऊ भाई॥ मंडरि
क दुरजोधन राई॥ ईक देस छोह नौ ह सुहे जाको॥

छत्र वंध जो धाव उ वांको॥ चित्रा ईतनो चित्र बनायो॥ पुरूष न देषत सीस न वायो॥ सुनो सषि
यह संसो मोही॥ नगर हिं पुरष मिलाउं तोही
॥ सुरग लोक देषो पाताला॥ म्रत मंडल देषो
भुवपाला॥ दोहा॥ चित्रा कहति सषी सौ यहै
भरो संसो मोहि॥ रूप्म पुरीनि जु दूरि कालि षिदि
षराऊं ताहि॥ चौपई॥ तुमजि निदसति हो ह्न
स्यानी॥ वाहीं पुरूष मिलाऊं आनी॥ गुर सुमिर
नु करि चली सयानी॥ नगर द्वारिका पुहों ची आ
नी॥ देषति कोट कनक वहु पासा॥ पचेक सूरनि
रतन प्रकासा॥ देषिब जार विलमुत हा लागी॥
ऊषा के संग भई सभागी॥ सूरसैन राजा सो ई दे
षा॥ जा हों छप्पन कोटि विसेषा॥ लिषि अंकू
र कुबेर भंडारी॥ तिनके महलनि की छवि भारी
॥ लिषो नृपति के सब परवारा॥ तिनि की सो
भा अगम अपारा॥ श्री परीछत राजा उवाच॥
स्वामी सुष मुनि पूछों ताही॥ सुनो भागवत सुष
भयो माही॥ सोरह सहस्र यक सो रानी॥ अरु
निज उदित आठ पटरानी॥ किहिं विधि गली
चौक परवाना॥ किहि विधि महल रचे भगवाना

उ०॥ ॥ अब नृप कथा सुनौ चितु लाई ॥ विसकरमा रु-
३४॥ चि पुरी बनाई ॥ रचे महल चौक परवाना ॥ ईहि
विधि सकल रचे भगवाना ॥ अति सोभा सो-
भित रजधानी ॥ येकहिं चौक रहति सब नारी ॥
रानी प्रति मति कीयो विचारा ॥ पंद्रह हाथ मह
ल के द्वारा ॥ कनक किवारनि की छवि भारी ॥ खचे
रतन रवि जोति उजियारी ॥ कनक षंम्ह दुगहि
नि अति लागे ॥ मुकता मानि खचि हीरा लागे ॥
पांच षंम्ह इक महमवाना ॥ ईहि विधि सबै रचे भ
गवाना ॥ नील पीत मनि छाजे संवारे ॥ मनहु ग
गन के चमकें तारे ॥ द्वादस हाथ षंम्ह ऊंचाई ॥ दे
खि चित्र मतु अंतन जाई ॥ दोहा ॥ जो वृंद के क
नक के कोरे रचे बनाई ॥ लाल चुनी हिरा लगे खच
त मनिनि अति भाई ॥ चौपई ॥ पंद्रह हाथ महेल
परवाना ॥ रचे येक सखी भगवाना ॥ द्वै सै सत-
रि साढि हजारा ॥ ईतने हाथ असमलि विस्तारा ॥
येक सूत इक हाथ बनायो ॥ कलसा तिनि के अ-
धिक सुहाये ॥ कंचन भूमि चौक मन भाये ॥ विस
करमा रानि आपु बनाये ॥ फटक सिला मुकता-
मनि लागीं ॥ देषे चित्र भिमरु गयो भागी ॥ महल

तिनि निकट ब्रछ अति सोहैं ॥ पोहोपानि ब्रछ भरेम
न मोहैं ॥ पोहै प अनेक वांरि वहु भाती ॥ कल्पब्र
छ महलनि की पांती ॥ कुसम भार द्रुम बेलि सु
हाये ॥ लटकि लटकि महैलनि पर आए ॥ महल
नि गली वि आचलि जाई ॥ देषि सुगंध रहे विल
माई ॥ षग पति भरे वहुत जल माही ॥ तिनि पर
कलप ब्रछ की छांई ॥ वोलत पंछी नाना जाती ॥
कमल फूल फूले वहु भाती ॥ वोलत मोर हंस सु
षदाई ॥ कोकिल कुहि मदन छवि छाई ॥ पहु प सुगं
ध चलित अति वासा ॥ गुंजत भंमर माल तीपा
सा ॥ मधि चोक मनु महलन आये ॥ इक ईस षं
उ रचि रतन जराये ॥ रवि सन मुष तिहिं चोक दु
वारा ॥ तिहि की सोभा अगम अपारा ॥ अपने अ
पने महलनि रानी ॥ इहि विधि कृस्न फेरे रज धा
नी ॥ नित आवत दरसन कों देवा ॥ ब्रं ह्मा ईंद्र कर
त सब सेवा ॥ कलप ब्रछ घर घर सब होई ॥ मन
वांछत फल पावै सोई ॥ मन वंछित सब करहि
सिंगारा ॥ पाटपटंबर रतन अपारा ॥ दोहा ॥ सु
षमुनि कहत न्रपती सों सुनों परीछत राउ ॥ सो
भा अगम अपार है कही कौंन पै जाउ ॥ चौपई ॥

॥३०॥ सुनी कथा अपनी ई सेवा॥ चरन सरन स्वामी सु
॥३५॥ षदेवा॥ इतनी सोभा लिषि सुहाई॥ सो सुनि निर
पति अति सुष पाई॥ दोहा॥ छपन कोट जादौं॥
लिषे लिष छती सौ जाति॥ चित्रा चालि आई
जहां हैं तअषारौ राति॥ इति श्री हरिचरि
त्रे दसमस्कंधे श्री भागवते महापुराणे द्वारि
का सोभा चित्र विचित्र बरननो नाम सप्त
मोध्याय॥ ८॥ राजा परिछत उवाच॥ नो
पई॥ स्वामी सुषमुनि सरन तुम्हारे॥ चित्रा आ
ई मारू अषारे॥ सो वरन अव कहो गुसांई॥ ता
सुनि के सुष होई अघाई॥ श्री गुसांई सुषदेव उ
वाच॥ चहुं दिस फूल रही फुलवारी॥ ससि निर
मल रजनी उजियारी॥ सरस बिछौना अधि
क सुहाये॥ पाट पटंबर अधिक बिछाये॥ गूद
र देत महा अति वसे॥ विच विच षम्ह कनिक
के घने॥ बिछ बिछौना अधिक सुहाये॥ गि
लम गेंदुवा अधिक बिछाये॥ सो है अति भूप
नि की भीरा॥ वहे सुहावनि त्रिविधि समा
री॥ दोहा॥ कपरा कनिक जराव के वरन वर
न बहु भाति॥ पहिरे बैठे भूप सब मनो मस्न की

पांति॥ चौपई॥ इहि नीदि सबल देव जुभाई॥
चांई दिसा मद मुनि सुषदाई॥ सिंघासन पर स्री
जदुराई॥ जगमगाति जगजोति सुहाई॥ दोहा
॥ अनुरुध आवत देषि कैं सभा उठी भहराइ॥ सि
राहे पन रूपनिधि यह रूषा पति आहि॥ चौ
पई॥ कश्य पैजें पर अनुरुध राजे॥ रतनजरि
न सिर पाग विराजे॥ केसरि तिलक कंठ गजमो
ती॥ कुंडल लोल अधिक जगजोती॥ पीतव
सन पर मुकतनि माला॥ अधर अरुन अरुने
न विसाला॥ चंदन षोरि चारि रचि सब अंगा॥
मानों छवि के उठत तरंगा॥ अनुरुध रूप देषि
ललच्यानी॥ विरह लहरि लटकि अंउनी॥ दे
षि अषारे को व्योहारा॥ वहु विधि सब दुहोत
झनकारा॥ वाजे बहु विधि भेरि म्रदंगा॥ वाजत
तार रंगि बहुरंगा॥ गावति गोपी मुष सुर बै
ना॥ वाजत तार बहुत विधि सैना॥ ईम्रत कुंउ
ली बीन उपंगा॥ जो हां तहां ता नि उठत तरं
गा॥ रीरूत भूपदेत बहु दाना॥ इहि विधि सु
ष करै भगवाना॥ स भा लिषत कछु रे तु नहो
ई॥ चित्रा लिषति अषारे सोई॥ लिषे हंस पं

॥ऊ०॥ दमुनिबलिभाई॥ अनुरूपलिषत महा छव
॥३६॥ छाई॥ राजकुवरलिषियो सबजाई॥ चित्रावि
चकीयो सुष्रुपाई॥ लैकागदऊषाढिगआई
॥ ऊषासुष्यअधिक हितचाही॥ प्रथमहीस
रसैनिकुलदेवा॥ जादौ छप्पनकोटिविसेषा
॥ देषौकनककोटचहुंपासा॥ रत्ननिजरितहेउ
दितअवासा॥ दोहा॥ कनकपुरीनिजुद्वारि
कादेषिकुवरवनाई॥ छलसरीतिजवदेषि
योऊषारहिलज्याई॥ चौपई॥ प्रद्युमुनिदेषि
महासुषपायो॥ ससुरजानिकैवदनदुरायो॥
अनुरुधरूपदेषिचितुलाई॥ सुरतिभौरितव
लईउठाई॥ अहोसषीमैपूछौताही॥ किहिवि
धिपुरुषमिलैहोमोही॥ तवऊषाचित्रापग
लागी॥ तुमप्रतापतेमिलेसभागी॥ सुनि
ऊषायहलज्यामाही॥ कालिहिपुरिषमिला
उताही॥ हर्षवंतचित्राचलिआई॥ नगरद्वा
रिकापहुचीजाई॥ चित्रारूपकियोअधिका
ई॥ पलिकासोभाकहिनजाई॥ वातकहतजा
हांवोलतराई॥ मंदिरसोभाकहिनजाई॥ व
हुतभातितहापुहोपविछाई॥ गलमगेऊषा

अधिक सुहाई॥ षंभ मालि तहां रही सयानी॥
कुंवर पलिंग पौढे आनी॥ सो वत जेवु ही जानि
कुंवारा॥ चित्र हारि लीनौ निति हिंवारा॥ लें पलिका
त वुजुं अकासा॥ वहुत चक्र की मान नि त्रासा
॥ लें पलिका सोनि तपुर आई॥ जा गो कुंवर ऊंठो
भहराई॥ निकट हिं चित्रा देषि ठाढी॥ मानौं चं
द्र वदन छवि वाढी॥ तव वोलै जदुवंस कुंवारा
॥ को तुम है कहां करति विचारा॥ कहां दूरिका
पुरी हमारी॥ कौन नग्र यह आहि कुंवारी॥ सां
चु वचन मोसों कहि सोई॥ जातें सिंध्य तुम्हा
री होई॥ चित्रा कहै सुनौ जदुराई॥ यहै नग्र सो
नि तपुर आई॥ जौधा वड़ो नृपति सो वाना॥ कू
ष मंडि तिनि कै परधाना॥ गज है वर रथ जाके
घनें॥ कनक मेहैल जाके सत षनें॥ वानासुर
कैं कंन्या सोई॥ ऊषा नाम कहै सव कोई॥ अहो
कुंवर यह राज कुंवारी॥ विधनां अपनैं हाथ सं
मारी॥ दोहा॥ मेऊ षा की सषा हों चित्रा नाम
हमार॥ कही कथा पाछिली सवै अपनो चित्र
विस्तार॥ चौपई॥ वैसा षमा सरजनी ऊजिया
री॥ तुम निज चोरी करी हमारी॥ इति नि सुनी

३०॥ कुवर जववाता तबै कुवर मन प्रफुलित गाता॥
३१॥ अहो सषी मै पूछौं तोही॥ वेगि कुवरि मिलाव
हु मोही॥ तब चित्रा मन मांझ विचारी॥ विहसत
ऊषहि आविग्रहारी॥ अहो सषी गुरमंत्र विचा
रा॥ ले आई जदुवंस कुमारा॥ सुनत वचन सुष
भयौ सयानी॥ ऊषा वंत इस्मत दियौ आनी॥ न
ष सिष ऊषा कीनौ सिंगारा॥ मानौ रतन कन
क कौ ऊरी॥ गज मोतिनि सौं मांग संवारी॥ ले
ऊषहि अनुरुध हिग आई॥ मानौ चंद्र सूर छ
वि छाई॥ घूंघट वोट चितै सर मारा॥ सुरछि
परौ जदुवंस कुमारा॥ नैन वैन सुष कहो न जा
ई॥ स्वाति बुंद मनु चत्रक पाई॥ दोहा॥ ऊषा कौ
अनुरुध मिले ऊषा अनुरुध जोगु॥ गंध्रप
व्याहु कियो तबै करत कामरस भोगु॥ इति श्री
हरिचरित्रे दसमस्कंधे श्री भागवत्त महापुरा
णे अनुरुध ऊषामिलनो नाम अष्टमोध्या
य॥ ८॥ श्री सुषदेव उवाच॥ चौपई॥ ऊषा
अनुरुध अधिक सनेहू॥ चित्रा गई आपने
गेहू॥ श्री परीछत उवाच॥ चौपई॥ माया क
न जिय संसो माहि॥ स्वामी सुष मुनि पूछौं ताहि

हो॥ यह अचिरज मो हि उपजो गाना॥ कहो देव
की चित्रा की बाता॥ श्री सुषदेवो वाच॥ चित्रा चि
त्र गुपत की जाई॥ नित उठि इंद्र अषारे जाई॥ दे
षति इंद्र अषारो साई॥ गुर बिनु आदर करै न को
ई॥ नारद दई इंद्र अषारे आय॥ देषत कुंवर आधि
क सुष पायो॥ मैं मुनि करौं तुम्हारी सेवा॥ चरन
सरन मोहि राषो देवा॥ तुम गुर होहु हमारे दे
वा॥ कहि ये जापमंत्र को भेवा॥ नारद तब गुर
सिधि बताई॥ करि मना महि ह्वा सन आई॥
रहे अषारे प्रति गुन गावै॥ इंद्र सहित आनं
द बढावै॥ इत उत चित बति बोलति तब हीं॥ दे
ई सराप इंद्र पुनि जब हीं॥ दोहा॥ मत्यलोक पु
नि सुद्र घर जाई लेउ अवतार॥ राजा सों सुष
देव जू कथा कहत विस्तार॥ चौपई॥ नारद मु
नि नैं सिधि बताई॥ तिहि प्रताप तें सब लिषि
लाई॥ इतनी कथा सुनाई जब हीं॥ सुनि राजा सु
ष पायो [illegible] तब हीं॥ ऊषा अनुरुध सुषु भ
यो जब हीं॥ टूटी भुजा भुव आई जब हीं॥ सिव के
बचनु बिचारी तब हीं॥ सत्रु नग्र में आयो जब
हीं॥ अनु न्रप सहस भुजा भह रानी॥ जीतो जु

॥ऊ०॥ षकैरोमनमानी॥जहांतहांदूतीवेगिपठाई॥
॥३८॥ ढूंढैसत्रुनग्रमेंजाई॥दूतीरूपकियोअधिका
ई॥मानौंईंद्रलोकतेंआई॥कुवरदेषिनवभई
हुलासा॥मानौंभानकीकिरनिप्रकासा॥कुव
रदेषिदूतीमुरझानी॥तिहिढिगऊषापहुंची
आनी॥तवऊषावोलीविहसाई॥कहुसषी
कौननग्रतेंआई॥कौनपीरितैंतुममुरज्या
नी॥सोंवचनमोसोंकहोसयानी॥कहनस
षीऊषासोंवाता॥विरहपीरमोहिव्यापीगा
ता॥सुनतवचनऊषारुहरानी॥अपनेघर
तुमजाउस्यानी॥तवदूतीअपनेघरआई॥
वानासुरसोंकहियोजाई॥दूतिकहतिसकल
वेहारा॥ऊषामेंहेलनिसवुनुह्यारा॥तवदूति
कहिवचनसुनाये॥वानासुरसुभटजुरवु
लाये॥जोधोप्रवलचहुंदिसधाये॥जुरिजु
रिसुभटदैयंतसवआये॥वानासुरयहकही
रिसाई॥सत्रवांधिलेआवोजाई॥घेरेमह
लजाईचहूपासा॥विलषतिऊषालेतिऊ
सांसा॥मैपापनिकछूपुन्यनकीना॥यहसं
जोगविधाताकीना॥ईहिविधिसोचतिराज

कुवांरी॥तिहित वनि त्रास वीसंम्हारी॥चित्रा
आई गई तिंहि पासा॥ऊषा रोवति लेति ऊसा
सा॥जिनि रोवेहो राजकुमारी॥तुम सों कथा
कहों विस्तारी॥अनुरुध कुवर रूप को नाती
॥असुर मारि करिहै ईहि भांती॥येक सिंघ गज
गध्यह जारा॥गाईवा घुंज्यों परे विडारा॥दोहा॥
वचन सुनत चित्रा के ऊषा भई हुलास॥समुम
ये समुझि न वे चित्रा गई आवास॥चौपई॥सोव
ते तेज वउ ठो कुंवारा॥घेरि महलु जव रहे जुरा
रा॥अनुरुध ऊषा देषि उदासा॥मानों चंद्र राहु
की त्रासा॥अनुरुध कुवर कहतु सुनि रानी॥
कारन कौन वदन विलषानी॥यहै सोचु नदुं
स कुमारा॥असुरनि घेरो महलु हमारा॥तुम
जिन सोचु करो हो रानि॥मारि असुर मेटों र
जधानी॥हाथिनि को वेटे चहुं फेरो॥असुर
महलु चहुं दिसि ते घेरो॥भई कोलाहल वजे नि
सांना॥असुरनि साजे धनु अरु वाना॥प्रद्यु
नि सुत मन मारु विचारा॥कछु नाहि मो पे ह
थियारा॥तव हि कुवर उठियो अकुलाई॥मह
ल षंम्ह लीनो उच्काई॥अष धातु कौं षंम्ह

॥ ३० ॥ अपारा॥ सो अनुजु घकीनो हथियारा॥ लेक
॥ ३६ ॥ रषं म्ह रोस करि धावा॥ मानौं काल मल्लय के
आवा॥ असुर बान घाले अ सरारा॥ षं म्ह औ
र देर हे कुवारा॥ तवे लछमसुमिरे चित्तु लाई॥ षं
म्ह लिये रन मे पैठे जाई॥ हाथी सौं हाथी धरि
मारा॥ पंछ घाउ सव असुर संघरा॥ वज्र घाउ
मारे सम्मुहाई॥ गुदा मासु ये कहे जाई॥ सिर टू
टे धरपरा है अपारा॥ वाटी नदी रुधिर की
धारा॥ गिरि असवार परे रन माहीं॥ छूटे हेव
र घने रे मांही॥ असुरन्हि देषा राजकुमारा॥
मनु सूरज की किरनि अपारा॥ करतु जुध्ध
नि भैंज दुराई॥ असुर सेन दलु दीघो विधी
लाई॥ जूझे जौधा वली अपारा॥ जे भागे ति
न करी पुकारा॥ वानासुर सौं कहियो जाई॥
भागो है असुरनि केराई॥ जीते जुध्ध नीक
नहि हारे॥ येक अकेलौ लाषनि मारे॥ ईतनी
तवे सुनी नृप वाना॥ चलौ सेन जुरि वजे नि
साना॥ ईहि विधि चलौ रोसु करि राई॥ वहु
रि म हलु घेरो पुनि जाई॥ फिरी नृपति वाना
की आना॥ अव कैसे सत्रुन पावे जाना॥ ईहि वि

धिअसुरनिअतिबलुकीना॥ अनुरुधकुवर
संग्रहकरलीना॥ आबाकुवरबलौदरबारा॥
ज्यौंकेहरिगजजुध्यविदारा॥ बानासुरपर
धानबुलावा॥ जाहुवसीठोगहरुनलावा॥बे
गिहिगयेकुवरकेपासा॥ देषरूपमनभयोहु
लासा॥ परधान्यउवाच॥ कौनजातिकुल
आदितुम्हारी॥ किहिविधिनांकीसीवहमा
री॥ कौनपिताकोमातजुसोई॥ कौननग्रतें
आयेंसोई॥ अनुरुधोउवाच॥ जातिपांति
कहापूछौराई॥ करहुजुध्धहमसौंअधिका
ई॥ रनमेंजुध्धकरौदेषातौ॥ व्याहुकरौतौपू
छौजाती॥ रतिमानाअरुजादौजाती॥ प्रद्युम्
नि पिताकृस्नकोनाती॥ नग्रद्वारिकापुरीहमा
री॥ करौंजुध्धदोनौंसंघारी॥ चित्रानामजु
कन्यातोही॥ सोवततेहरिलाईमोही॥ इतनी
बातसुनीपरधाना॥ कछुहरषौकछुमन॥
हिउराना॥ अहोकुवरमोवहुतपियारा॥बाना
सुरहैवलीअपारा॥ असुरसेनदलुअगम
अपारा॥ चहूंदिसिकोटअगिनिकीझारा॥
बानासुरजोधावउआही॥ सहस्त्रभुजाउर॥

॥३०॥ लागी नाहीं॥ कुवर अकेले कहा वतु करिहौ॥॥
॥४०॥ ज्यौ पतंग दीपक मै जरिहौ॥ तिनि सौं कौन व
रत वरि आई॥ जीतो सम लोक के राई॥ सिंधु
लहरि उमडै चहुं पासा॥ बूडि मरौ नहि होइ
निकासा॥ अनुरुध उवाच॥ चौपई॥ रेवसि
ह बोलै अधिकारा॥ मारि असुर मिलाऊं
स छारा॥ अगिनि कोटइ करतौ समाना॥ जा
र षाहार करौं मैदाना॥ दोहा॥ सबै असुर
संघारिहौं रन मैं पीठि न देहुं॥ बानासुर भुज
काटिहौं जीति जगत जसु लेहुं॥ चौपई॥ कू
रिपि जत वरन मै आवा॥ भागे असुर पंथ न
हि पावा॥ हय गय पैदर मोर धाई॥ बानासुर न
व उठौ रिसाई॥ नाग वानु बानासुर डारा॥ गरु
उ वानु ऊषा संघारा॥ गरुउ चौंप विनवै चहु
पासा॥ भागे नाग गरुउ की त्रासा॥ अगिनि
वान वानासुर डारा॥ मुरछि गिरो जदुवंस कु
मारा॥ तब ऊषा आतुर उठि धाई॥ मुरछित
अनुरुध लिउ उठाई॥ नीर वान ऊषा संझारा
॥ अगिनि बुरी लगी नहीं वारा॥ कुवर संम्हा
रि षंम्ह कलीना॥ देषत देव सबै सुष कीना॥॥

मारे असुर रकत सकी आना॥ बंम्हु लगत तन
न जै प्राना॥ असे जुध्ध इहु द्र न होई॥ ये कै य
कन जीते कोई॥ मोहनी बानु असुर तब ऊरा॥
मोह लियो जदुवंस कुमारा॥ ब्रह्म फांसि सौंबा
धो सोई॥ देव वचन काटनु नहि कोई॥ दोहा॥ बा
धे अनुरुध असुर नै परे नि मान हि घाहुं॥ ऊ
षा रावति सिर धुनि य नारद पहुचे आइ॥०
॥चौपई॥ जिन रोवै हो राज कुवारी॥ मेकाटों
नि जु बंध तुम्हारी॥ मद मुनि कामदेव अवता
रा॥ सुनि ऊषा सो ससुर तुम्हारा॥ छप्पन कोटि
जादो के राजा॥ मारि असुर करिहै सब काजा॥
नारद ऊषा कथा सुनाई॥ इस अवतार कहे न
समुझाई॥ यह सुनि ऊषा हि भयो हुलासा॥ ते
व मुनि गये कुवर के पासा॥ अनुरुध नाम बहु
त दुष कीना॥ तब मुनि धाई अंक भरि लीना॥
कहत कुवर यह करो विचारा॥ काटो बानु क
रौं संघारा॥ नारद मुनि तब कहि समुझाई॥
॥अहो देव वचन काटा नहि जाई॥ अहो कुव
र सुनियो चितु लाई॥ तब ब्रह्मा की कथा सुना
ई॥ त्रेता राम चंद्र अवतारा॥ रावन कुल छीनों

॥ऊ० ॥ संघारा ॥ दसरथ नृपति वन जु सो उहारा ॥ रा-
॥४१॥ म हिदीनौं देसु निकारा ॥ सीता सहित लछिम
न लै साथा ॥ पंचवटी पहुचे रघुनाथा ॥ सीत
हि रावन हिरि लेगयेऊ ॥ हनूबीर नव षोजन
गयेऊ ॥ नाकसिंधु सो लंक हि आवा ॥ ढूढत
सीतहि कहू न पावा ॥ व्याकुल हनूबीर पछिताई
॥ कहा संदेसो कहिहों जाई ॥ मे पहिले दे सीत
हि सीता ॥ हनूबीर के उपजी चिंता ॥ नव असो
कवन पैठो जाई ॥ असोक वृछ तरे सीता पाई
॥ दई पवनसुत मुद्रा हाथा ॥ लछिमन सहि
त कुसल रघुनाथा ॥ कही कुसल सीता सम-
मुझाई ॥ चले हनूत व मन अकुलाई ॥ कहत ह
नू मन मे अवसाई ॥ आयग यो न जानैं को
ई ॥ बिनु रावन देषे न हिं जाऊं ॥ रान वज्रु ध्य-
बिनु होइ न नाऊं ॥ कै से लंका परहि पुकारा ॥
के सै असुर लेइ हथियारा ॥ हनू बाग मे पहु
चो जाई ॥ तोरत तरवर फूल जो षाई ॥ वन रष-
वारे भगे अपारा ॥ तिन के सुर सौं करी पुकारा
॥ क्रोधवंत हो दीनै पाना ॥ असी सहस्र किं
कर समुहानो ॥ मे अछैकुमार साजि दल-

धावा॥ पवनवेग हनुमत ढिग आवा॥ किंकर
वान चलैं इ असरारा॥ वज्र ओर दे रहैं कुवारा॥
हनू वीर इक आग्या पाई॥ मोर किंकर दये गि
राई॥ दोहा॥ असी सहस्र किंकर हनैं मार अ
छेकुवार॥ मेघनाद दल साजिकै आयो रन
हि मझार॥ चौपाई॥ मेघनाद तव वाननि मारा
॥ वज्र ओर दे रहे कुंवारा॥ यक रोम नहिं भंगे
सोई॥ मेघनाद मन संको सोई॥ तव हि लियो
ब्रह्मा कौ वाना॥ हनू वीर तव मन पछितानां॥ भ
यो पवन बंधु छै जाई॥ होउ मरन निजु रावनरा
ई॥ जो विनसै रघुवर को काजु॥ ब्रह्मा ते जु नहि
मैं टो आज॥ देव वचन नमेटो जो कोई॥ नि है चै
नर्क नास को होई॥ हनूमत वीर महावल हेई
॥ ब्रह्म फांसि सौं बांधो सोई॥ नारद मुनि यह
कथा सुनाई॥ अनुरुध कुवर सुनी चितलाई
॥ सुनि कथा तव भयो हुलासा॥ ऊषा आई ना
रद पासा॥ रुक्म हि जाइ सुनाई व्योहारा॥ सब
जादौं मिलि करिहिं पुकारा॥ यह कहि ऊषा भ
यो हुलासा॥ नारद गये रुक्म के पासा॥ सो च
ति ऊषा मन पछितांई॥ किहि विधि कंथ छु

॥ उ० ॥
॥ ४२ ॥

उ बहु मोहि ॥ तब ऊषा यह मंत्र विचारा ॥ जननी
सौं मिक करौ पुकारा ॥ तब ऊषा रानी ढिग आई ॥
रानी मेरी कंठ लगाई ॥ रानी ऊवाच ॥ कहु ऊ
षा मो सों सब सांची ॥ तुम पर पुरष मीति क्यों
राची ॥ हम राजा तुम राजकुमारी ॥ तुम कों ल
ज्या पोई हमारी ॥ तीन लोक जसु है भुवनाता ॥
अति दुष पाई कहों मे वाता ॥ ऊषा ऊवाच ॥
पार बती वर दीनों मोहे ॥ उत्तम पुरष बऊ कु
ल जातो ॥ प्रदंमुनि पुत्र कृष्ण को नाती ॥ दोहा ॥
कही पाछिलि कथा सब चित्र रेषा की बात ॥
राम दास नैंन भू कहे रानी हर्षित गात ॥ चौपई
॥ राजा सों तुम कहो स यानो ॥ मो पति बंध षु
आवो रानी ॥ राजा सौं कहि यो समुझाई ॥ मो हि
आहि वा बुदे उ तुम माई ॥ नारद कृष्ण कही स
ब मो सों ॥ सुनि रानी मैं भाषों तोसों ॥ कृष्ण की की
रति कहत न आई ॥ दस अवतार सुनों चितु ला
ई ॥ प्रथम मछ रूप अवतारा ॥ समुद्र पैठि
संषासुर मारा ॥ पारि उदर असुर बस कीनों
॥ काढि वेद सब ब्रह्मा दीनों ॥ दूजें रूप कछ कों
कीनों ॥ परबत भार पीठि पे लीनों ॥ मंदर गिरि

जब वृउत जाना॥ कूरम सरूप कियो भगवाना॥
ऐसो सिंधु मथन प्रभु कीना॥ तेरह रतन का
ढि सो लीनैं॥ बादि रतन सब देवनि दीनैं॥ हि
रन्याछ जो धा जो भयेउ॥ प्रथमी हरि कैं लै गय
उ॥ तब सब देवनि करी पुकारा॥ बाराह रूप धा
रो अवतारा॥ मारो असुर सुरनि सुष भयो॥ भू
वहि उाढ धारि कैं लै आयो॥ ऊनंचास कोटि
वसुधा है हारी॥ तिन प्रवान गज दंत हिला
री॥ चौथै नरसिंघ रूप अवतारा॥ हिरना
कुस को उदर विदारा॥ ऐसो रूप धरे सो जकी
ना॥ राजतिलक प्रहिलादहि दीना॥ पाचवैं बा
वन रूप बनावा॥ विप्र होई बलि द्वारिहि आवा॥
राजा बल देषन सुष माना॥ चारि वेद मुष पाग्र
वषाना॥ देषरूप सुष उपजो मोही॥ मागु विप्र
मन ईछ्या तोही॥ अरु उठै पैउव सुधा मोहि दी
जै॥ सुफल जनम्य अपनो करि लीजै॥ करि सं
कल्प दीयो जब दाना॥ बाढी देह सी सु असमाना॥ छंद॥ ये क चरन आकास यक पाता
लै गयेउ॥ ये क चरन ऊनंचास कोट वसुधा स
ब भयेउ॥ दोहा॥ बलि बांधे अभिमान सो कर
न सुरन को काम॥ ऊषा रानी सो कहै गर्भ परिहरि

॥ऊ०॥ पैराम ॥ चौपई ॥ बंधन छोरि कियौ मन भायौ
॥४३॥ ॥ बलि राजा पाताल पठायो ॥ सुनि रानीनि जुकन
न हमारो ॥ बलि का चेत स सुर तुम्हारौ ॥ परसरा
म परसा कर लीनौं ॥ छत्री मारि निकछु सब
कीनौं ॥ सहस्रबाहु काटे भुजदंडा ॥ विप्रनि राज
जु दीयो नवषंडा ॥ सो तु रामचंद्र अवतारा ॥
दसरथ सुत रघुबंस कुमारा ॥ तिनि की आई कौ
सिल्या माता ॥ सूरज बंस जु रघुकुल जाता ॥ न
गर अजुध्या पुरी निवासा ॥ असुर निकंदन है
अविनासी ॥ राम हि सोहति है रजधानी ॥ जनक
ता सुता के पटरानी ॥ पिता बचन मानि वन गये उ
॥ माहा वियोग अजुध्या भयउ ॥ बन कौनि
कसि गये रघुनाथा ॥ सीता सहित लछिम
न जू साथा ॥ बन मे रहत बहुत दिन भये उ ॥
सीता हि हरि रामन लै गयउ ॥ अगद जामवं
त सो आवा ॥ सेन सहित सुग्रीव बुलावा ॥ ह
नुवंत बीर कौ आयसु दीना ॥ सीय सुधि देषे
न कौ मन कीना ॥ सेत बंध उतरे सो ई पारा ॥
लंका नग्र मे परी पुकारा ॥ दल बल बंदर बा
ली अपारा ॥ धरनी धसकति तिनि के भारा ॥
दससिर बीस भुजा बलवाही ॥ सो रावन मा

रोढ़िन मांही॥ देव छुअ ई जगत जस लीना॥
लंका राज बिभीषन दीना॥ दोहा॥ रावन सो
रिपु मारि कै हरषत देव बिमान॥ श्रीराम अ
जुध्या आई कै आनंद बजत निसान॥ चौ
पई॥ रामचंद्र अवतार सुनावा॥ सुनि रानी
नव अति सुष पावा॥ ऊषा वचन कहति प
रिवाना॥ प्रभु है सब गुन रूप निधाना॥ सार
र सस सहस्र मुष गावै॥ षोजत ब्रह्मा पार न
पावै॥ प्रभु अनादि परषो तुम स्वामी॥ सब
घट पूरन अंतर जामी॥ ऊषा वचन कहै स
मुझाई॥ हरि अवतार सुनौ चितु लाई॥ बसदे
व पिता देवकी माई॥ धरनी भार उतारन आई
॥ मथरापुरी जनम सो लीना॥ गोकुल जाई स
कल सुष कीनां॥ नंद जसोधा सुत कर जा
ना॥ संतनि सुषदाई भगवाना॥ विषु लगा
ई कुच आई नारी॥ प्रथम हि कृस पूतना मारि
प्रभु जू अघा बकासुर कों सुरं मारा॥ जमल
अर्जुन बिरछ उधारा॥ सषा सुर नर कासुर
मारा॥ केसी कों मुष्टिक हनि मारा॥ गुवाल
नि के संग षगाई चाराई॥ नटवर भेष किये जदु
राई॥ मुरली नाद रंग रसु कीना॥ गोपिनि स

॥ऊं०॥ बस करि सुष दीना॥ गा ऋौं गुवाल सबै सुष
॥४४॥ दीना॥ सुरपति मान भंग सोई कीना॥ सुफल
क सुत संग मथुरा आवा॥ विस्वरूप अंकूर दि
षावा॥ वलि देवक्क्स रीसु अधिकारा॥ तोर ध
नुष सोकु विलुप छारा॥ मारे मल्ल गय वल व
लसोई॥ कंसकेस गहि मार सोई॥ प्रभु सवकी
कीनी मन भाई॥ मात पिताकी बंधि छुराई॥ का
टि जंजीर जगत जस लीना॥ उग्रसैन नतव अ
स्तुति कीना॥ भगति हेत लीनो अवतारा॥
अपनै हाथ चौंर सिर ढारा॥ मथुरा छाडि द्वा
रिका आये॥ जादौं छप्पन कोटि बसाये॥
॥दोहा॥ सिव विरंच मुनि नारद करत कृस्नकी
सेव॥ चढि विवान सब आवहीं ईंद्र सहित स
व देव॥ चौपई॥ जगंनाथ जगदीस कहावे॥
पुर परषोतम जोई कहावै॥ बोध रूप वपु धरे
मुरारी॥ असुरसिं घारि संतनि हितकारी॥ नी
लगिरि निज दरसन पावे॥ ते नर वहुरि न
जनम वहि आवे॥ विस्वनाथ भूज संम्हर वा
रा॥ तिनिके प्रभु लैहैं अवतारा॥ निहकलंक
वपु धारि है सोई॥ दानै दुष्ट बचेन हिं कोई॥
दस अवतार सुनाये जवहीं॥ सुनि रानी सु

षपायो तब हीं ॥ कृष्णचरित्र सुनै नर कोई ॥ तिनै
कष्ट नहिं व्यापत सोई ॥ इहि विधि जननी कौं स
मुझाई ॥ पुनि ऊषा महलनि चलि आई ॥ रानीब
चान्नृपतिसैं ॥ रानी गई नृपति के पासा ठाढि
निकट हिं लेति उसासा ॥ नृप पूछत रानी कौं
सोई ॥ कहा रानी तेरे मन होई ॥ सुनहु कंथ असु
रनि केराई ॥ अनुरुध बंध छुडावो जाई ॥ तब
रानी सब कथा सुनाई ॥ ये प्रभु हैं त्रिभुवन के रा
ई ॥ दोहा ॥ रानी राजा सौं कहै कंथ ॥ जगत ज
सु लेउ ॥ ऊषा दे पाइनि परो हरि सौं करौ सनेहु
॥ इति श्री हरिचरित्रे दसमस्कंधे श्री भागवते
महापुराणे रानी ऊषा संवाद दस अवतार बर
ननो नाम नवमो अध्याय ॥ ९ ॥ नृपबाना
सुर उवाच ॥ चौपई ॥ कहत नृपति सुनौ हो
नारी ॥ भुजा त्रिपति कैसैं होई हमारी ॥ कोट कु
ल रहु लु साजे सोई ॥ मो सौं जुध्य जीते नहिं
कोई ॥ मो कौं तो सिव जू बर दीना ॥ सुर असुर
सुर सब बेबस कीना ॥ मूसैं को कहाउं रे मंजारी ॥
किहि विधि सुबास चानें मारी ॥ सहस्र भुजा
उर लागी मोहीं ॥ संक भय भीं कहा जिय तोही ॥
सुनत वचन राजा के रानी ॥ बंधेन छारौ हो अ

॥ऊ०॥ भिमानी॥ यहसुनि रानी दुसती भई॥ वहरो-
॥४५॥ कथा द्वारिका गई॥ तव नारद मुनि मंत्र विचारा
॥ जाइ कृष्ण सौं करी पुकारा॥ कृस्न कृस्न गोविंद
मुरारी॥ को जानैं प्रभु कला तुम्हारी॥ कहो कथा
नारद समुझाई॥ अनुरुध वंध परे जदुराई॥
सोनितनग्र नृपति सो उवाना॥ सिव प्रताप
सुर असुर लुभाना॥ तुम परमानंद हो सुष
दाना॥ तुम परषोतम परम विधाता॥ वेगि कृ
ष्ण तुम करो पुकारा॥ ब्रंह्म फांसि सौं वंधो कुंवा
रा॥ सुनै कृस्न नारद कै वैना॥ अतिसय कोप स
जल भये नैना॥ अनुरुध वंध तवै हरि जाना
॥ करी पैज तव श्री भगवाना॥ रति अरु रुकि
मिनि पोंची आनी॥ अनुरुध अनुरुध करै सु
रंगानी॥ सुनत तहिं मदमुनि उठे रिसाई॥ सेवाना
सुर मारौं जाई॥ श्री कृष्ण वलदेव बुलाये॥ उ
ग्रसेनि राजा चलि आये॥ कृष्ण कोप कै संष
वजायो॥ जादौं सैनि सिमिटि सव आयो॥ से
सासिमिटि कूरम अकुलाना॥ जादौं छप्पन
कोटि पलाना॥ रथ सोहत है धुजा पताका॥
गज है वर हैं अगिनित ताका॥ हाथी चलेई ते
परिवाना॥ स्याम घटा पावस मानैं घराराना॥ देत

हिं दंतस वद घन गाजे ॥ सजल यमूरति नैन बिराजे ॥ चल्यो क्रस्न दल अगम अपारा ॥ कूरम कसक सहत नहिं भारा ॥ वजे निसान सवे सुसुहाना ॥ धरनी धसक सिंधु अकुलाना ॥ संष सवद सवद वानेजाना ॥ का पर क्रोध कियो भगवाना ॥ ऐरापति सुरपति पलनावा ॥ सुरनि सहित हरि का आवा ॥ सेन्य असंष क्रोगि नेजु पारा ॥ ईद्र क्रस्नको अनि जुहारा ॥ सेन सहित न्रप भी षम आये ॥ मिलत क्रस्न कौं अति सुष पाये ॥ उग्रसेन राजा दलु साजा ॥ जाकें अगिनित वाजत वाजा ॥ हयगय पैदर रथ वलि जाई ॥ रूपो सूरज गरद की छाई ॥ अं कूर कुवेर करी गल गाजा ॥ चलेसाजि दल अगिनित राजा ॥ सूरसेन जादौं वउराजा ॥ सत्राजीत वहुत दल सोजा ॥ चल्यो क्रस्न दल पैर न उरा ॥ धरनी धसकति डुलै सुमेरा ॥ जादौ सेन चल्यो समुहाई ॥ सो नित नगनहि पहुंचे जाई ॥ तिहिं पर कोट अगिनि को आई ॥ ऊउ ताहि पांछि सव जरि जाई ॥ उदित रूप महा भय भारी ॥ जोजन येक अगिनि का री ॥ आये हरि वानासुर जाना ॥ असुर साजि दल

उ० ४९

लवजे निसोना॥ नच मंत्री परधान बुलावा दूस निदेसानि लियेपठावा॥ आयेहानै द्लु वलु साजें॥ जैसे पुरवाई घन गाजें॥ हानेसंजे अरु सजे मयंदू॥ कोटि तुरी रूस लाषगयंदू॥ कालीनरते कालिगुजु आयो॥ ताके दलन कोऽ अंतु न पायो॥ ईहिविधि धुंधी कालजनावा॥ हानेसि सिद्धि सोनित पुर आवा॥ ईत उतद लवलजुरो अपारा॥ नाकेको न आगिनिको मारा॥ उग्रसेन वालि देवबुलाये॥ करहु मंत्र अपनेमन भाये॥ उग्रसेनि नृपक हे सोसा ई॥ प्रभुतुम्हरे वचन नि सिधि होई॥ तुम सो जुरासिंधु सोइ हारा॥ कालजमुनि जो धाव उमारा॥ रावन मारि असुरवस कीना॥ लंका राजु विभिषन दीना॥ तुम गर्भ प्रहारो श्री भगवाना॥ यह वानासुर किनि कमवाना॥ ईत नी बात कही जबराजा॥ कीजे मंत्र होई सब काजा॥ ईहु जोगि करिलाई सवा॥ सुनौं कृष्ण देवनिके देवा॥ करहु वसीठ अंतरजामी॥ धनु अरु धर्म रहे जो स्वामी॥ असेो मतो सवनि मन भायेऊ॥ वानासुर ढिग नारद गयऊ॥ नारद कहे सुनौं नृपवाना॥ गर्भ तु कहा मूढ अ

ग्या ना॥ जगत पुरष जगदीस सुरारी॥ तिनि प्रभु सौं तुम रारि पसारी॥ समस्ति पदु कइस ब्रह्मंडा॥ चौदह भुवन सिंधु नव षंडा॥ पानी पवन अठारह भारा॥ सो प्रभु कै है उदर मझारा॥ जाकौं ब्रह्मा पार न पावै॥ सो अप प्रभु तेरे घर आवै॥ अब तुम मिलौ अनुरुध तें सोई॥ तौ तिनि लोक जसु तुम्हारौ होई॥ इति नीनारद कहि समुझाई॥ मानौ हौ असुरनि कै राई॥ दोहा॥ प्रभु सौं जुध्ध न जीत ही सुनि बानासुर कै राय॥ चक्र धार भुज काटिहै पाछै करौं पछिताउ॥ बानासुर बाच नारद सौं॥ सुनि नारद मुनि बात हमारी॥ भुजा त्रिषित कौ है यह मारी॥ अगिनित दल तुदा नें मो हि पासा॥ मो कौं बहुत जुध्ध की आसा॥ पेकहियै त्रिभुवनपति राई॥ मै संकर कौ है बरदाई॥ मारौं कृस्न और सब देवा॥ इंद्र हि बाधि कराउं सेवा॥ मेह रिसौं कब हूं न हि हारौं॥ पर बन मौं ङ्छार करि डारौं॥ बानासुर यह बचन सुनायौ॥ नारद कोप कृस्न ढिग आयौ॥ अह कृस्न साजौ करि काई॥ बानासुर भुज का टौ

॥३०॥ जाई ॥ को पिछ्छमन बगरूउ बुलाये ॥ नव षग
॥८७॥ पति प्रभु के ढिग आये ॥ कहे तन छ्छमसो गा-
यापाऊं ॥ ष्या नवे कोटि मेघ वरसाऊं ॥ उम
ड़ि मेघ वरसे तहां पांनी ॥ अगिनि बुझी झरस्र
धिकाना ॥ ऊठी अगिण अति अगम अपा
रा ॥ नव वरिसाऊं प्रभु गरूउ सम्हारा ॥ नव षग-
पति जलनिधि लै आवा ॥ पं षसूरि सोई अ
गिनि बुझावा ॥ बुझि अगिनि हरि दल चलि-
आवा ॥ अपवाना सव सुभट बुलावा ॥ सा
ठि लाष ग्यारा रथ जोरे ॥ चौदह लाष तुरी-
लै दौरे ॥ सत्रुन कौ दल सब समुहाना ॥ धंन्य
धंन्य पहो तु अपवाना ॥ रतन जरित गज हे वर
साजे ॥ टानैं चलत महा बल गाजे ॥ वानौ सु
र दल डाहे विधि धावा ॥ हरि के सनमुष आ
नि वजावा ॥ दुहुं दल अगिनित बाजन बाजे
॥ धनक वान सब वैरनि मिलि साजे ॥ सलो-
कै दल चलि समुहाई ॥ मानो घटा मलय
की आई ॥ दुहुं दल वान चलैं अपारा ॥ मानों
भादों मेघ अपारा ॥ परग सम्हारी मारूस
व करहीं ॥ रूंउ मुंड कटि धरती परहीं ॥ सिर

विनु रुंड फिरत रन माहि॥ गगन भई गीधनि
की छांहीं॥ हाथी हने घने रन छूटे॥ टूटे सुंड उसें
मस्तक फूटे॥ गज मुकता गिरि स्त्रोनित बोरे॥ म
नहुं गगन वरसत हैं ओरे॥ टूटे रथ पथ परे अ
पारा॥ छूटे हेवर रन नाहिं मझारा॥ जूझि गिरे रति
नि के असवारा॥ ऐसो जुध्य कियो असरारा
॥ बाढि नदी रुधिर की धारा॥ गिरि तरु बूडहि
को लहि पारा॥ सलो जुध्य कियो बलि कीनो
॥ जाहि जीति दानव मो लीनो॥ भागे प्रद्युमनि अ
रु बलि वीरा॥ भागे ईद्र धरत नहिं धीरा॥ भा
गे कुवेर महा अकुलाना॥ वरन सरन राखो
भगवाना॥ तब हि हर्ष बलि वीर पचारा॥ तुम
म असुरनि के जीत नहारा॥ अब जिन भागो
हो प्रेम बली भाई॥ मारो दानव दुहु हुंकारा
ई॥ वचन सुनत बलि रिस बरि साना॥ आगु न हो
ने पावे जाना॥ पुनि ऐरापति सुरपति साजे
॥ जाहीं दल पुनि बाजत बाजा॥ बलि भई के
बान चले असरारा॥ वर षत भादौं न घत
अपारा॥ पगसों पग सरसों सर लागी॥ मा
नौ वढि प्रलय की आगी॥ हरम सल ले हल

॥उ०॥ धल धावहिं॥ मानो सिंधु गजनि पर आव
॥४८॥ हिं॥ हलसों षे॥ हलसों षे चत मूसल मारी
॥ दयंत मारि चून करि डारी॥ हाथी पटके पूं
छ पिराई॥ सल्लो भुज सों पकरे जाई॥ अ
ति रिस कै तब मूसल मारे॥ छाती चटी कै
भुजा उपारे॥ मारे दानव बलि देव वीरा॥
भागे असुर धरत नहिं धीरा॥ जे भागे तिन
करि पुकारा॥ सल्लो दानव बलिदेव मारा॥
॥इति श्री हरि चरित्रे दस स्कंधे श्री भागव
ते महापुराणे बलिदेव जुध्य सल्लो दानव
वध नाम दसमो अध्याय॥ ९०॥ श्रीसु
षदेव उवाच॥ चोपई॥ इति नी सुनी बाना
सुरराजा॥ गज हे वर रथ अगिनित साजा॥
चल्यो कुलिश साजि दलसोई॥ पूरत पहार
बाट भई सोई॥ असुर मयंद महाबल भाई॥ ष
ले गयंद भूमि भई भारी॥ कृषि मंउ सा जे पर
धाना॥ ताके दल को अंतु न जाना॥ चलो सा
जि बाना सुरराई॥ अगिनित बाजे बजनत
जुराई हयगय साजे बहु विधि भांती॥ हीरा
रतन नगनि की पाती॥ इहि विधि साजि

लौ अपवाना ॥ धरनी धसकति सिंधु सुषा-
ना ॥ साजि सेन बानासुर आवा ॥ मानौं काल
मलय कौ धावा ॥ रन बंतु साजि जु आयौ सो
ई ॥ पैरौ को हितु सरैन हिं कोई ॥ इहिं बिधि मारु
हुहुंद लहोई ॥ अंध धुंध न हिं सूझहि कोई ॥ अगि
नि बान बानासुर डारा ॥ चहुं दिसि उठी अगिनि
की झारा ॥ अगिनि की झर सही नहीं जाई ॥ जा
दौं दल भागौ अकुलाई ॥ अति भय त्रास गये
हरि पासा ॥ राषि लेहु हरि अब की त्रासा ॥ नीर
बानु तब हरि जू डारा ॥ बरषत पानी बुझे अंगा
रा ॥ बुझि अगिनि सब कौं सुष भयेउ ॥ नाग-
बानु बानासुर लयेउ ॥ बिष हरु बान चलौ
असरारा ॥ फन फुसकार कौ सलौझरा ॥ प्र
दमुनि के उर लागौ बाना ॥ झूम झूम झूम करि
गिरि मुरझाई ॥ चली लेहर सब दल मुरझा
॥ बानासुर दल बजे निसाना ॥ गरुड़ बान हरि
लीयौ रिसाई ॥ भागे नाग सब गये पराई ॥ ष
गपति त्रास सहै कोई नाहीं ॥ भागे नाग पैरे म
हि माहीं ॥ बिष की लहरि मिटि सुष पायौ ॥ ज
ब प्रदमुनि प्रभु के ढिग आयौ ॥ पुनि प्रचंड ब

॥ऊ०॥ लि देव रिसाना॥ मारो असुर सहित नृपवाना
॥४९॥ ॥ईनह न घल लहे प्रमुके भाई॥ उते नृपति बाना
सुरराई॥ हेउ दल न घल बीर अपारा॥ बर बात
बानम हा असरारा॥ असो जुध्ध दु हु दल न
होई॥ यके यक न जीते कोई॥ हनो बडो मयंड
जुरारा॥ सब देवनि कों छिन में मारा॥ हाथी
कटि गिरिरन हिं मरारा॥ अति सम हा रुविली
दल धारा॥ आनित नभन दी बहि आनी॥ भा
गे असुर महा भय मानी॥ असुर निदल भय
भई अपारा॥ रथ घोडे बहि लगे करारा॥ फिरु
र तस्यार भूत बे ताला॥ जोगिनि गुहति मुंड
की माला॥ चरष चील्ह चहु दिसि ते धावें॥
हरषि गीध नी मंगल गावे॥ रुधिर भष्किस
व करहिं बधावा॥ पेरत फिरें पार नहिं पावा
॥ मछ कछ ढाल तरवारा॥ से बट बानानि
की अधिकारा॥ परहिं भमर अरुपे न उतार
हिं॥ अरुन कमल फूले जल मधि हिं॥ दोहा॥
बाढी नदी रुधिर की दोनें धर तन धीर॥ देषत
देव गगन के धंन्य धंन्य बलि बीर॥ चौपई॥
तब हीं को पकियो नृपवाना॥ कूष मंड दल प

हुवौ आना॥ अगिनित दल असुरनि कौ आयो॥ बानासुर तव सनमुष धायो॥ इतनौ कोप कियो न्रपबाना॥ आगुन द्रौ जादौं पावें जाना॥ करी पेज असुरनि कौ राई॥ हलधर लषि फुनि हतो दो ऊ भाई॥ जादौ मारि मिराउ रान॥ लैहु छुडाइ दूवारि का आज॥ हल मूसल धरि सिलसों बांटों॥ मारि गरुड कैं पंजर कांटौं॥ बेरी बंधि भूमि मैं डारौं॥ सिव प्रताप नैक व हूं न हारौं॥ सिं भू जाप मंत्र पढि धायो॥ भागत जोरौं पंथ न पायौ॥ देषि दयंत जादौं अकुलाना॥ भुजा सहस्र सीसु असमाना॥ दीरघ काया बली अपारा॥ मानौं सर्व त भुवन अपारा॥ लोचन अरुन तरून तन तायो॥ सैं नि सहित चलि रन मैं आयो॥ दुहुं दल बाजे बजत अपारा॥ बरषत बान गगन जल धारा॥ सहस्र हाथ सौं हय गय मारे॥ रथ सव पटक चूर करि डारे॥ सुर पु बान मैलो न्रप बाना॥ मद मुनि गिरे राम सुर स्याना॥ ऐरापति चढि सुरपति धायो॥ कोपि कुबेर वरुण रन आयो॥ सुरपति वज्र बानु प्रहारा॥ बानासुर त्रसूल सम्हारा॥ बान सौं बान सरसौं सर लागी॥ मानौं गगन तें बरस

॥ऊ०॥ ति आगी॥ आति गिरि साई थाना सुर धावा॥ ठोकत
॥५०॥ भुजाई दूढि गआवा॥ औरा पति मुष का धरिमा
रा॥ भजे ईद्र संन्या सव मारा॥ भाजे देव सकल
न्रप साई॥ भाग पंथ न पावे कोई॥ भागे देव उ
भै की रहा या॥ रा षो सरन श्री जदुनाया॥ उत
दूल मै गरजत न्रप वाना॥ इते चाढि गरूड श्री
भगवाना॥ न्रपवानासुर उवाच॥ दोहा॥ तु
मैमै चेटक वहुत है हम सौं जीति नि जाऊ॥ सुर
नि सहित सव मारि हौं झूरा मति नि यराऊ॥
चौपई॥ मथुरा जनमु धरौ जदुराई॥ पुनि गोकु
ल मै गये पराई॥ चोरी करी सवकी दधि षाई
॥ गुवालनि के संग गाई चराई॥ मोरमुकट मा
थे धधि नाचे॥ विषके हे न गोपिनि रंग राचे
कंस मारि उरपै तुम जवहीं॥ पानी मै घर कीनों
तवहीं॥ हिरंनाछ हिरिनाकुस मारा॥ वलिवां
धे सो ई पिनाह मारा॥ अव सम्हारि मै मारतु
वा ना॥ आजु कृस्न नहिं पावो जाना॥ कृस्नजी
उवाच॥ सा चे वचन कहे न्रप सोई॥ मो सौं
जुध्ध न जीते कोई॥ मारे कंस जगत जसु ली
ना॥ जुरासिंधु सा ई घस कीना॥ गरभु करन न
र का सुर मारा॥ रुकंम वांधि रथ ऊपर डारा॥

कालजमुनजोधावउआही॥मारतसुरनकी
नौंताही॥अपनैसुषनहिंकहियतुसोई॥जो
नपंचमैंकोरतहोई॥मारिअसुरमेटोसवरा
जू॥सेहसमुजाधरिकाटोआजू॥दोहा॥ष
रमैगलसोवलुकरसिंघसमानसियार॥वाद
रचडेभूवपपरेविनुपगचढेपहार॥चौपई॥
नेमूकहैरामकोदासा॥नारदआएसदमु
निपासा॥नारदकहैसुनोंजदुराई॥कोदेषेतु
म्हरीमुषुसाई॥जोतौअसुरगहरूजितिल्या
वहु॥संन्याईसतसौचिजिवावहु॥गरूडपंष
ईमतधरिफारा॥जादौंदलुपुनिफरिसम्हारा
॥औरापतिचढिसुरपतिधावा॥मारूमारूष
लदलकहावा॥सदमुनिकुवेरकरीगलदारा
॥मानोआहुतिमघ्रतुउरा॥सवमिलिकरत
हरुसकीआना॥जादौंदलुफिरिवजतनिसा
ना॥सेनसीमिटिसवप्रभुढिगआई॥उनेवी
रवानासुरराई॥उतैअस्त्रलियेत्रपवाना॥ई
तेचक्रलीयेभगवाना॥दानौसवसिलापूर
कारा॥चक्रधारसवहोईसंघारा॥मुदगरलै
वानासुरधावा॥क्रोधवंतहोईसनमुषधावा॥

॥ऊ०॥ ॥मुदिगल धावगरुउकों मारा॥ मूर्छौ गरुउ रु
॥५१॥ क्म संम्हारा॥ न वहि रुक्म मनु क्रोध विचारा॥
पंथ पाछि कैं गरुउ संम्हारा॥ चढे गरुउ पर श्री
भगवाना॥ चक्र सुदरसन लीनों हाथा॥ दो-
हा॥ उतै वलि को सुत वान है इतै श्री भगवान॥
मारु मारु दल होत है देषत देव विवांन॥ चौपई॥
तो छन करौ चक्र की धारा॥ कोटि सूर तप तेज
अपारा॥ चक्र तेज कछु कहन न जाई॥ जो जन
ती नितासु चकराई॥ करि धरि चक्र फिरायो
जवहीं॥ मेलो रुक्म रोसु करि तवहीं॥ नव धरि
भुजा सहस्र ईक कारी॥ हय गय रुंउ मुंउ महि
पारी॥ हरी सों कौनु करतु वरजोरी॥ राने मारे
अगिनित कोरी॥ वानासुर जो धावउ हारा॥
काटी भुजा व्रछ केसी उारा॥ उठो कमंधु रुंउर
न धावे॥ भागे असुर पंथ नहिं पावें॥ नारद क
हत रुक्म सों भेवा॥ वानासुर जिनि मारो देवा
॥ वानासुर की काटी वाहीं॥ सिव सिव करत लगी
रोरन माहीं॥ दोहा॥ वानासुर भुज काटियों
दोउ राषे परवान॥ सुर नर मुनि असतुति क
रै धंन्य धंन्य भगवान॥ इति श्री हरिचरित्रे द

रमस्कंधे श्री भागवते महापुराणे वानासुर भुजभंगनामाम एकादसमोध्याय ॥ ११ ॥ श्री सुषदेव उवाच ॥ चौपई ॥ पंउ रुंउ मुंउ परिहा ना ॥ ह्र्षि गोधनी चरत अमाना ॥ परीलो थि पर लोथ ससानी ॥ घायल मागत सेन न पांनी ॥ कुटिल दृष्टि परत धरि माहीं ॥ केई करत न जरत भुज वाहीं ॥ मुकुर वंध भुवन परे वेहाला ॥ टूटे सिर सर तन की माला ॥ रतन आभूषन परे अपारा ॥ दमकत मनहुं गगन के तारा ॥ षर षीलष भूत वेताला ॥ जोगिनि गुहत मुंउनि की माला ॥ श्रोनित नग्न नदी वहे असरारा रथ घोरे वहि लगे करारा ॥ ऐसो जुध्ध कीयो भगवाना ॥ कृष्नजी ति दल वजे निसाना ॥ मार असुर सव रन गाजे ॥ देवनि दुंदुभी वाजें ॥ उग्रसेनि भीष मन्त्र पसोई ॥ सव जो धाजो रि आये सोई ॥ अहो कृष्न हमरे मनो मनु कीजे ॥ ऊषा अनेरुध को सुधि लीजे ॥ नारद आये अनुरुध पासा ॥ असुरपि दिग रा के लासा ॥ नारद चरननि ऊषा गी ॥ अनुरुध भेंट कंठ लगाई ॥ कही कथा अनुरु

ऊ० ॥ षसुषपायो ॥ पुनि नारद प्रभु कहिं आयो ॥
५२ ॥ नारद हर्षि कहीं कुसलाता ॥ तब जादौं दल हर्षि
त गाता ॥ बढ़ौ जीति जादौं दल भई ॥ असुरपुर
कैलासें गई ॥ अहा रुद्र तुम सुन हु पुकारा ॥ बा
नासुर जोधा बड़ मारा ॥ कृष्ण नाम बलदेव कु
मारा ॥ दोनौं दल कोनें संघारा ॥ बानासुर भुज
काटे सोई ॥ ऊजर नगर बचो नही कोई ॥ सुनी
पुकार सिं भू दल जोरो ॥ मानौं आहु ति मे घ्र
त परो ॥ उमउम डोरू बाजन लागो ॥ रिस संभ
मुष वरषत आगो ॥ डोरू सबद भयो अधिका
रा ॥ तीनि लोक मे भई पुकारा ॥ सुर्गलोक देव
नि सब जानी ॥ कापर कोप्यो जोगी रिसमा
नी ॥ सिव नें ध्यान धरो अधिकाई ॥ सैन्या सि
मिटि दीठी सो आई ॥ अगिनित दलु असुर
निको आयो ॥ आनि रुद्र कों माथो नायो ॥ ये
के भूत प्रेत बेताला ॥ येके दिस दस देस भुबा
ला ॥ स्वामि कार्त्तिक चढ़ि आये सेसा ॥ रूद्र
सहित चढ़ि आये गणेसा ॥ जरा असंध
दिये मुष कराई ॥ लोचन लालित महा छबि
छाई ॥ दई यंन होनें चलें अपारा ॥ पसुपति प

रसंभू असवारा ॥ वज्रनाद दैमत दलु साजा ॥
सब सैन्या लै आनि रन गाजा ॥ संन्यासहि ताहि
सानि तपुर आये ॥ संघस वदंत वतुरत वजाये
॥ क्रोधवंत संकर रन आये ॥ मुष तैं ज्वाला आ
नि चलाये ॥ वाना सुरासि वदै घो अैसें ॥ विन सा
षा कै तरवर जैसें ॥ दे षिन्नपुति संभू रिसमा
नी ॥ जान न पावै सारंगपानी ॥ दोहा ॥ जो दैद
ल मारौं सवै छिन मै करौं संघार ॥ मो पर भा
गि व चौ नहीं विरदै कै असवार ॥ चौपई ॥ मारौं
सुरपति रति कौ कंतू ॥ और पति के षैरौं दंत ॥
उग्रसेन व सुदेव हि मारौं ॥ वलि देव सहित सु
रसैन संघारौं ॥ हूरा मति मित्रा ऊ सोई ॥ वृंद सि
घु वचै न हो कोई ॥ ईहि विधि पेज करी सिव ना
था ॥ कोप त्रसू लन लीयौ सिव हाथा ॥ पसुपति
कौं तव रूप वढायौ ॥ मानौं सुमेर रूप धरि आ
यौ ॥ पारवती मन क्रोध विचारा ॥ दैयत कोटि
करौं विस्तारा ॥ हय गय पैदर अगिनि लेषा ॥
उडि ऊगस दूर वित हा न देषा ॥ चली सयन सि
व पूरी नादा ॥ मानौं सिंधु तजि मरजादा ॥ ईहि
विधि असुरनि नैं दल घेरा ॥ धरनी धसकत है

॥उ०॥ उठेसुमेरा॥तबसंभुमुषज्वालाकाढी॥मानौंअ
॥५३॥ गिनिप्रलैकीबाढी॥परवतसबजरिहोगयेछारा
॥अष्टधातुकीबरषतधारा॥ऐसीआगिनिच
हूंदिसिधाई॥जासौंदलभागोअकुलाई॥सुपर
तिन्नपतिदेवतनत्रासा॥सबमिलिगयेकृस्न
केपासा॥सहियनजाइसिंभूरिसस्वामी॥कीजे
मंत्रगरुडकेगामी॥बेउदेवगिरजापतिराई॥जु
ध्धनजीतोहोजदुराई॥पुत्रहेतसिवरनमेंआ
यो॥सुषतेंज्वालाआनिचलायो॥धरतीजर
तिअसतिअसमाना॥चरनसरनरायोभगवा
ना॥कृस्नउवाच॥कहीकृस्नसुनौसुरपतिरा
जा॥येहिसंकरकौंकहूनेलाजा॥संभूतमेत
सुषकारी॥सोकहांजानोआदिहमारी॥आ
कथतूरांकरेआहारा॥मगछालापटुजय
अपारा॥मुंडमालविषहररसभोगी॥मोंसो
जुध्धनजीतेजोगी॥बहुतकथाकौंकहेअपा
रा॥छलकरमैभस्मासुरमारा॥भस्मासुरेउरच
हुंदिसधाई॥कहीकृस्नसबैसमुझाई॥मैसंक
रसोंकबहुंनहारौं॥मारिचक्रसबअसुरसंघा
रौं॥करीपैजतबकृस्नरिसाई॥चढेगरुडपर

श्रीजदुराई ॥ ज्वालातेजमिटाऊं आज ॥ अहमे
करौं सुरनि कौं काज ॥ नवग्रह नीर वान संम्हा
रा ॥ वुझी आगिनि जलवर्षत धारा ॥ वुझी आगि
नि सवनि सुषपायो ॥ कोपवंत हो वलिदेव धा
यो ॥ ईहिविधि तव वलिदेव रिसाना ॥ आजु रह
न हि पावैं जाना ॥ उत सिव रोस महा अति
कीना ॥ वलदेव मारि करौं घमसानी ॥ सोहे को
रथ भेरो साजा ॥ स्याम घटा ज्यों वादल गाजा ॥
रथ के धुजा पताषा कारी ॥ मानो मेघ लगी अंधि
यारी ॥ रिषभ सहस्र दोई रथ सो लागे ॥ आवत रं
न सव जादौं भागे ॥ काल क्रोध करि चढि रंन
सोऊ ॥ स्वामकार्त्तिक गंनपति संग दोऊ ॥ भूत प्रेत
लै जोगिनि धाई ॥ ते धरनी अंमर रही छाई ॥
दोनों दलु चालि यो समुहाई ॥ वरषत वांन गग
गन भई छांई ॥ षोउस वांस रोग संघाना ॥ ला
गत जादों दलु मुरझाना ॥ जुरजूई वलिदेव हि
लागी ॥ कंपत देह क्रोध गया भागी ॥ गिरदेव सु
रपति अकुलाना ॥ कंपे कुवेर अरु मुनि मुरझा
ना ॥ व्यापी पीर लहरि की छांहीं ॥ दंतहि दंत व
जै रनमांहीं ॥ हांतक एतन कछु न संम्हारा ॥

ॐ ॥ मातपितासुतबंधुपुकारा ॥ सिवकेवान सुरानि
॥ ५८ ॥ दुष्वि पायो ॥ तब नारद प्रभुके ढिग आयो ॥ कर
तपुकार बहुत मनहारी तुम जगंनाथ जग
ईस मुरारी ॥ जुर जुंउिसिव दई चलाई ॥ सुर
छे प्रद मुनि अनुबलि भाई ॥ सुरषे सैंन सुर
पति भूपाला ॥ रागवान सब भय बेहाला ॥
इति नीसुनी कृष्न तब धाये ॥ बंधु बंधु कर
कै ठल गाये ॥ अर सुपरस जु रुतनगयो ताई
॥ मुरारि अैंठ अैं उाई आई ॥ तबहिं कृस्न जू ग
रु उसंम्हारा ॥ संन्यासी ची इंम्रतकी धारो ॥
सींच सुधा संन्यासु षपायो ॥ हर्ष कृस्न जू स
ब बजायो ॥ बाजो संष नाद भयो भारी ॥ प
करो जुर अरु ता पति जारी ॥ सिवके रागनि
मे सब हारे ॥ सो प्रभु पकरि समुइ हि गारे ॥
दोहा ॥ ता पति जारी रोग सब प्रभु जु दयो व
हाई ॥ जो कछु आभासी वची जगमे प्रगटे
आई ॥ इति श्री हरि चरित्रे दसमस्कंधे श्रीभाग
वते महापुराणे संकर मायाबुद्ध वरननो ना
म द्वादसमो ध्याय: ॥ १२ ॥ श्री सुषदेवो वाच
॥ चौपई ॥ जहा हरि कथा भागवत होई ॥ तहां

रोगन हियापै कोई ॥ जो यह उषा सुनै पुरा
ना ॥ तहां रोग नहीं रहत निशाना ॥ सुधापा
ई वहु हरि रन गाजे ॥ जादौ दल पुरि वाजत वा
जे ॥ उषा सिव ईन श्री कृस्न मुरारी ॥ दुहुं दल
जुध्ध परो अति भारी ॥ ईत सत्र घन इंमग
ण पति राई ॥ हो उवी राभिरे अधिकाई ॥ हल
मूसल वलि देव जुझारा ॥ श्री गणपति ने पूर
सा संम्हारा ॥ भैरौं भूत उठै गल गाजी ॥ वान
हिं वान भिरे वहु साजी ॥ स्याम कान्ह प्रदम
नि वलि भारी ॥ रण उरन मा भिरे पचारी ॥ आ
ये रन हित फिरि संम्हारा ॥ धाइ लगी रक्षो नि
त की धारा ॥ अेसो जुध्ध दुहुं दल होई ॥ येके ये
कु न जीतै कोई ॥ ईंद्र को पअेरापति साजा ॥
उतै भैरौं भूत निके राजा ॥ अेरापति सो भा अ
धिकारी ॥ रतन जरित की पाषरि डारी ॥ अरु
मोंतिनि की माला राजै ॥ सीस सुउसि दूर वि
राजै ॥ चारु दंत उज्जिल अति सोहे ॥ हीरा है
म जरित मनु मोहे ॥ जरद पीठि परे कुसी अ
मारी ॥ मानौं मंदर गिरि छवि भारी ॥ ई हि वि
धि गज घंटा घहराई ॥ हो त सवद सव अ
सुर उराई ॥ दोहा ॥ ईंद्र चढै अेरापति लिये

॥ ३० ॥ वज्र सोई हाथ ॥ सिव समेत दनु मारो तो मे सु
॥ ५५ ॥ रपति नाथ ॥ चौपई ॥ मारन आवे सुरपति रा
ई ॥ दूनै दल दीनै बिचलाई ॥ भागे दानै अगि
नित लाषा ॥ सुरबीर सुरता न राषा ॥ अैरापु
ति जब सुउफिरावे ॥ संग्या सामिरि भैरौ ढि
ग आवे ॥ भैरो मोरि उरि रघु टारौ ॥ जो गिनि
भागि चली सुष मोरी ॥ अैसे जुध्ध कीयो सु
रराई ॥ दानै दनु भागे मुरझाई ॥ ईइ जीति रन
बाजत बाजा ॥ कुंभनी कुंभ आनि रन गाजा
॥ दानै बान चले असरारा ॥ कुंभी को पी अैरा
पति मारा ॥ फटकत सिला समुहीं संम्हारे
॥ को उमुदिग ले कोउ अत्र निमारो ॥ सकती
बान लियो सुरराई ॥ पुनी रन हाथी दियो ध
साई ॥ जब सकती सुरपति फटकारी ॥ मानो
घन गरजत परत पहारा ॥ सकती बान कु
भ वै लागी ॥ नागत बान परन गयो भागी ॥
तब सिव के ढिग परी पुकारा ॥ कुंभवली सु
रपति ने मारा ॥ सुनत बात सिंभू रिस माना
॥ आजु न बचिहै सारंगपानी ॥ नबंद येन द
ल जुरै अपरा ॥ को पि सूल सिव ली ये बिक
रारा ॥ औरू बाजी सब द अपारा ॥ पसुपति पर

सिंभ असवारा ॥ असंक सीस सिव कौ आ-
समाना ॥ दानव दल कौ अंतु न जाना ॥ इइ-
यत दलु जुरि चलो अपारा ॥ धरनी धसकि
गगन गइ छारा ॥ कश्यप का पद दलु बहु निसा
ना ॥ जाहिं छप्यन कोटि पलाना ॥ उग्रसेन ना-
भीषम सम सुहाना ॥ सुरनि सेन्य दल कु जै निसा
ना ॥ को फरूल सुतम्रद मुनि आवा ॥ ऐरा प-
ति चढि सुरपति धावा ॥ अंकूर कुबेर करि-
गल गाजा ॥ चले साजि दल अगिनि तराजा
॥ दानव दल कौ अंतु न जाना ॥ चढ्यौ गरुड प-
रम्री भगवाना ॥ दोहा ॥ उतैं गिरजा पति हैं
इतै त्रिकुल सपुरारि ॥ मार दुहुं दल होति हैं कौ-
उन मानैं हारि ॥ चौपई ॥ दुहु दल बान चलैं-
असरारा ॥ स्वांति बुंद मनु वरषति धारा ॥ दुहुं
दल जुध होन अति नारी ॥ यक यक सौं जुर-
हिं प्रचारी ॥ ऐरापति चढि सुरपति धावा ॥ पुनि
कुबेर भीषम न्रप आवा ॥ उग्रसैन राजा कल
कीना ॥ दानै मारि दावि भूव लीना ॥ ईद्र कौ पि-
नव वज्र संम्हारा ॥ उत भैरौं नें मुदिगल उग्रा
॥ मुदिगर वज्र जुरे रन दोई ॥ देषत देवगगन

उ० ५९

केसोई॥ येककोरिदा नवलैधावा॥ कुंषमंउ
रन आनिवजावा॥ कुंषमंउवाधौसिरनेतू॥
मोसौंसुरपतिसौं कुरषेतू॥ करतुआवैवा
नासुरआना॥ चलौसाजिदलवजेनिसाना
॥कौपेदानैहिंहिविधि धाये॥ फेरिपहारसि
लाऊचकाये॥ पूरेसिरधरटूटेउवाही॥ प
टकतसिलागगनैभईछांहीं॥ सुरपतितवैव
ज्रलेधायो॥ भागन असुरपंथनहिंपायो॥
कूंषमंउ ऐरापतिमारा॥ चलीदहतेरुधिर
कीधारा॥ सकतीवानलयोसुरराई॥ मारिअ
सुरसवरद्येउगिराई॥ मारअसुरसवैसुरस
ना॥ कूंषमांउभागेपरधाना॥ भगेकालभैरो
हेसोई॥ स्वामकम्रगनपतिसंगहोई॥ सकती
वानसहोनहिंजाई॥ अवसंभराखोसरनाई
॥यहसुनिसिंभूउठेरिसाई॥ मारौंकुसम आर
वलिभाई॥ सिंधुसौषिमेटौरजधानी॥ च
लतनिपंथनपावैजानी॥ ईहिंविधिपेजक
रीसिवनाथा॥ कोपित्रसूललियोसिवहा
था॥ दोहा॥ पसुपतिपरसिंभूचढेगरुडचेढे
भगवान॥ करधरीचक्रचलावहीं देषतदेव

नि कान ॥ चौपई ॥ पारबती सब असुर जि वाये
॥ उठि मारजे बहुरि रन आये ॥ हय गय परथ पय
चलेउ अपारा ॥ धरनी धसकति तिनि के भारा ॥
लै त्र सूल सिभ तब धायो ॥ तब हिं कृष्ण नैं च
क्र बलायो ॥ चक्र त्र सूल मिले भय मारा ॥
टूटत तरिगिरि परत अंगारा ॥ तब संभू पस
पति हंकारा ॥ मुष्टि का जाइ गरुउ के मारा ॥
तब हि गरुउ धरनी मुरझाना ॥ सिव के क्रोध
भजे भगवाना ॥ देषत भए मुनि अस वालि
भाई ॥ अब काहे भागो जदुराई ॥ भागत ला
जु न लागत तोही ॥ अब प्रभु अग्या दीजे
मोही ॥ मैं हरि मूसर वज्र सम मारों ॥ असु
रनि सहित संकर कों मारों ॥ कहत जु कृष्ण
सुनौं बलि देवा ॥ तुम संकर कों लहहु न
भेवा ॥ तब हि कृष्ण संकर ढिग आरो ॥ संक
र सन मुष संष बजाये ॥ सिंगी नाद सब दसि
व कीना ॥ विषहर नाइ गरें मेलीनी ॥ दोई र
न मैं भिर प्रचारा ॥ जे से होत मदन्न की मारा ॥

॥ ७० ॥ द्विविअघात असुर सव भागो ॥ मुष्टिकाघा
॥ ७१ ॥ उ वज्रसम लागो ॥ श्रीपति संकर रूप वढायो
॥ मानो जुग पर्वत धरि आयो ॥ वावन गज ढिजैसे
फिरहिं अपारा ॥ धरनी आकास सवहि आका
रा ॥ यकै यकु न चीन्हतु कोई ॥ पवन सरूप भये
प्रभु दोऊ ॥ ज्यों घन पावस के घहराना ॥ सुनत
सवद सव असुर उराना ॥ चक्र त्रिसूल जरे
अधिकारा ॥ मानौ दामिनि रूरत अगारा ॥ ते
व वलि भद्र वीर अकुलाना ॥ हल मूसल ध
रि आनि तुलाना ॥ मूसल मार करत वलि भा
ई ॥ भैरौं भूत उठे किलकलाई ॥ नव भैरौं नै भु
द गिलु उरा ॥ मौरी हल मूसल भयो छारा ॥
स्वामि कार्तिक मद मुनि रन गाजा ॥ सिव कैं अ
सुर छलन के राजा ॥ फरसा लै नव गन पति
धाये महाक्रोध करि रन मैं आये ॥ सिर
सिंदूर यों दिपति राजे ॥ कर कंकन पग नूं
पुर वाजे ॥ फरसा कंध मूउर दय सवारा ॥ कुंडि
ल श्रवन कंठ पर हारा ॥ जा कौ नाम लेत गसि

धिहोई॥ अरुपुरितबुधिपावेसोई॥ सोगण
पतिरन आनितुलाना॥ जाहिंनृपतिदेषिसु
षमाना॥ पुरसामारकुरेगननाघा॥ हयगय
मारिगिरारेमाघा॥ हाथीहेवरकटेअपारा
॥ घाईनिचलेरुधिरकीधारा॥ पिकरतस्या
रकागबहुबांसा॥ चरषचीलनैनोंचतहेमा
सा॥ भूतप्रेतवहुतारवजावें॥ हर्षिंगीधेनी
संगलगावें॥ रुधिरभक्षसवकेरेहिंवधा
ई॥ मारमारुतहांवोलतकोई॥ अैसीरुधि
रनदीयहरानी॥ घाईलमागतसैंननिपा
नि॥ अैसोजुधहुंहंद्लहोई॥ यकेयकुन
जीतेकोई॥ दोहा॥ सीरपरबतसबथलहुले
सिंधुतजिमरजाद॥ रुक्मविष्मदोउभिरे
कोमिटेप्रतिवाद॥ इतिश्रीहरिचरित्रेदसम
स्कंदेश्रीभागवतेमहापुराणेसिवजुद्धअ
जुधवरननोनामत्रोदशोध्यायः॥ १३॥ श्री
सुषदेवउवाच॥ चौपई॥ सुषमुनियहराजा
सोंकहों॥ महाप्रलयहोंनअबचहो॥ धरती

॥ऊ०॥ कहेरसातलजेहे॥ पहस्त्र जयुतकेसेअवन
॥५८॥ सेहे॥ हरिकैसेर सौवाढेरारा॥ संसोभयोदुहूंद
लभारा॥ नारदमुनिके संसोभयउ॥ धाईकुबे
रईहपुरगयउ॥ सुरपति भीष मन्त्रपतिबु
लाय॥ बलिरवउग्रसैंनचलिआये॥ कुहत
ईदुदेवनिसौंसोई॥ करहुमंत्रजामेसिधि
होई॥ नारदसौंकहियोसमुझाई॥ ब्रंह्मा बेगि
जगावेजाई॥ सुरपति वचनकहतपरिवाना॥
तिनिहूं मूरतीयकसमाना॥ वचनकहतकछु
रुनुनलावा॥ ब्रंह्मालोकनारदचलिआवा॥
ब्रंह्मलोकदेषोमुनिजाई॥ सुरपुरसिवपुर
तेअधिकाई॥ नारदब्रंह्माजाईजगावा॥ जा
गब्रंह्मनारदढिगआवा॥ दोहा॥ ब्रंह्माकौं
नारदमिलेपूछीसवकुसलात॥ कवहुंकजा
गिजमुहानहेकेवहूंकपललगिजात॥ चौप
ई॥ जागिहोचतुराननदेवा॥ तुमकरतारजगत
केषेवा॥ रुद्रकुंभसौंजुधअपारा॥ अवब्रं
ह्मातुमसुनौपुकारा॥ वानासुरराजानपुकीना

रुद्रदेवनैबउवरुदीना ॥ सहसभुजा सिवरी
नीसोई ॥ महाबलीबानासुरहोई ॥ ऊषानाम
तासुकी धीया ॥ नषसिषरूपविधाताकीया
॥ अनुरुधकुवररूप अधिकाई ॥ सषीहेत
चित्राहरिल्याई ॥ यहचरित्रबानासुरजानो ॥
गिरिगई धुजभुजा भहराना ॥ ऊषालगयो
विग्रहहोई ॥ ब्रंह्मफासिसोंबाधेसोई ॥ ब्रंह्म
फासिनारदकहिजबहीं ॥ ब्रंह्मा जागिउठेत
बजबहीं ॥ नारदकथा कहीविस्तारी ॥ कृष्ण
रुद्रसोंबाढीरारी ॥ अवतुमबीचकरौहो
जाई ॥ कहोकृष्ण सिवसों समुझाई ॥ मथबीजा
तिरसातलपारा ॥ कृष्णरुद्रसोंजुध्धअपा
रा ॥ दोहा ॥ नारदमुनिकेवचनसुनि ब्रंह्माभ
येउदास ॥ सुरनरमुनि सबसंगलेचलेकृ
ष्णकेपास ॥ चौपई ॥ हंसचढेतहांब्रंह्माआ
ये ॥ नारदमुनिसबदेवबुलाये ॥ नारदरिषि
सबनिसुषपाये ॥ हंसचढेजबब्रंह्माआ
ये ॥ ब्रंह्मादेषिबहुतमनलोभा ॥ मानोंतीनि

॥ ३० ॥
॥ ५८ ॥

लोक की सोभा ॥ धाई मिले तिनि कौं सुरराई ॥ अस्तुति करत चरण चितु लाई ॥ इंद्र उवाच ॥ तुम करतार विश्व के स्वामी ॥ महाप्रलै अव मैं ये स्वामी ॥ ब्रंह्मा नारद अरु सुर साथा ॥ आये जहां ब्रह्म सिवनाथा ॥ दिष्टि नो मुनहिं दिये कोई ॥ हो कहिं वीर सबद तहं होई ॥ ब्रंह्मा तब देखत धरि ध्याना ॥ तीनिहुं मूरति ये कसमानो ॥ मे हरि हर तन मे मिलि जाउं ॥ बहुरि नैनि कसौं हो सुरराऊ ॥ इंद्र उवाच ॥ तुम सब सिधि के करता सोई ॥ कीजै मंत्र जातें सिधि होई ॥ दोह ॥ ब्रंह्मा नारद कौं कहो सब मिलि करो पुकार ॥ सुरनि सहित चलियें सबै देवी के दरबार ॥ चौपई ॥ देवी पुर पहुंचे सब देवा ॥ सुनिगन सिधनर करैं सेवा ॥ ब्रंह्मा नारद अरु सब देवा ॥ ईंद्र जोरि कर लाई सेवा ॥ तुम हो दुरगा आदि भवानी ॥ तुम सौं संतिम कल न कल्यानी ॥ तुम दानो महिषासुर मारो ॥ तुम देवनि को कारज सारो ॥ तुम हो आदि जगत की

माया॥तुमसुमिरतसवहिसुषपायो॥इतिने
वनन कहेसुरराई॥तुमसंकटमेंहोहुसहाई॥
सिवअरुब्रह्मसुमिरिरनदेई॥अंधांधुधनसू
नुकोई॥धरिती चरनसींसअसमाना॥प
वनसरूपभयेभगवाना॥रहतिअरूपीना
हींदेषतुमाना॥हुहुंदलनवादेप्रलैनिघाना
॥स्त्रिष्टिसिंघासहेतुहेरानी॥चलोवेगितु
मआदिभवानी॥दोहा॥इतनीसुनिदेवीच
लीकियोरूपविस्तार॥करत्रसूलासिरछत्र
धरेसिंघभईअसवार॥चौपई॥करकंकन
त्रसूलसंम्हारा॥अष्टभुजालीनेहथ्यारा
॥जाहेदलतनवदेवीआई॥देषितेपतिस
वउठिभहराई॥देषिरूपदेवीकोराजा॥अ
बुद्दनितेहूहसबकाजा॥नारदईइकहत
सुभवाना॥जहांब्रह्मतहांचलियेमाना॥
देवीआईहरिकेपासा॥ब्रह्मरुद्रनहांमिरे
अकासा॥दोहा॥देवीलईपुकारहेरीगंईगग
नपरधाई॥ब्रह्मरुद्रभुजपकरिकेवीचुम

॥ ऊ० ॥ कौ यौमसुराई ॥ इति श्री हरिचरित्रे दसम स्कंधे
॥ ६० ॥ श्रीभागवते महापुराणे द्वा. स्मरद्धे मांगदेवी वी
चुकरनवरननो नाम चतुरदसमो ध्याय ॥
॥ १४ ॥ श्री सुषदेव उवाच ॥ चौपई ॥ मिटि ग
यौ सबद पवन नहि होई ॥ कृष्म रह्यू सांत भये
होई ॥ चक्र चसू ल्ले सो हदि वाई ॥ सोपुनि ऊ
र धरनी मैं आई ॥ पसुपति षगपति भिरहिं
अपारा ॥ देवीनैं सम करिवे ठारा ॥ चलत मसे
हुहुहुं तन अैसैं ॥ गंगाजमुन मिलहैं तैसें
॥ देवी चली संकर ढिग आई ॥ मिले कृष्म
बलि देव हि भाई ॥ उग्रसेन भी षमलिये
आयौ ॥ मिलन कृष्म कौं अतिसुष पायौ
॥ ब्रह्मा मिले कृष्म कौं अैसैं ॥ प्रान देह कौं
मिलि गये जैसें ॥ न षसि षरूप ध्यान ध
रि देषा ॥ ब्रह्मा जनम सुसुपल करि लेषा ॥ ज
हां जहां लीजे अवतारा ॥ तहां तहां प्रभु सं
ग तुम्हारा ॥ नारद मिले मिले सब देवा ॥ इंद्र
जोरि कर नाई सेवा ॥ सुरग लोक देवनि सु

षपावा॥ प्रद्युम्नि मिले जंपे वैठावा॥ दोहा॥
प्रभु जन संषव जाई यों पफिरी कृष्ण की आनी॥ सु
रपुर नर पुर नागपुर आनंद वजत निसानि॥
चौपई॥ देवी संकर कों समुझावा॥ तुम न सिव प्र
भु को अंत न पावा॥ ब्रह्म हिं षोजत जुग गये दे
वा॥ अंतु न पायो लाई सेवा॥ जा के उदर मांरू स
व कोई॥ सकल विस्व को करता सोई॥ ये नाराय
ण निरभे स्वामी॥ रूप रेष नाहीं निह कामी॥
मथुरा जन्मु धरो जदुराई॥ कंस मारि सब वंदि
छुडाई॥ धरती भार उतारो आनी॥ हरष वंत स
व देव निजानीं॥ हिरंनग्रभि हिरनाकुस मारा॥
नरसिंह रूप धरि नषनि विदारा॥ त्रेता राम चं
द्र भये राजा॥ रावन मारि कुरे सव काजा॥ सिव
ब्रह्मा जी जो दोवीरा॥ तीनों मूरति यक सरीरा॥
देवी संकर कों समुझायो॥ हरषवंत ह्वे मिलन
सिधायो॥ तव देवी हरि कों समुझाई॥ संकर कों
मिलियो जदुराई॥ मिले कृष्ण अरु संकर देवा॥
अस्तुति करत चरन लई सेवा॥ रूद्र सहित तत हां

॥उ०॥ आयेसेसा॥स्वामकात्र अरु मिलेगणेसा॥
॥६१॥ महसुनि सुरपति मिलियो आंनी॥ बलिदेवस
हितमिलीयो रजधानी॥ **दोहा**॥ रसना अहि
की सहससहोई सेसरटतहरिध्यान॥ अंतुनपा
वैनामकों पंडितकहतपुरान॥ **चौपई**॥ देवी
की अस्तुतिकेरैसवदेवा॥ हंम्हानकहैंतुम्हारो
भेवा॥ तुमदेवीहो आदिभवानी॥ तुम्हरोविर
दुसकलकल्यानी॥ सिंघवाहनीसुनिहो रां
नी॥ महाप्रलयतुममैहो आंनी॥ छलमतुइभि
ररनहोई॥ धरनीत्रिरसातलसोई॥ दुहूंदल
संसोभयो अघाता॥ तुमभलवीचकरोहो
माता॥ तुमविनुजुध्धनजीतेकोई॥ तुममहि
षासुरमारो सोई॥ अस्तुतिसुनिदेवीसुषपा
यो॥ तवब्रंह्मा अपनैंग्रह आयो॥ तवदेवी अ
पनैंग्रह आई॥ सवसंतनिकोंकरनिसहाई॥ छ
त्रमविरदकीलाजविचारी॥ बानासुरकीसुरति
संम्हारी॥ **दोहा**॥ सिवब्रंह्मा अरु नारदचलेकु
स्मकेसाथ॥ देषतदेवगगनकेधंन्यधंन्यज

दुनाथ॥ चौपई॥ वानासुर प्रभु नाई उठावा॥ बहुत प्रीति करि कंठ लगावा॥ प्रभु के चरन गहे न्रपवाना॥ प्रभु देइ भुजा राषो परिवाना॥ मिटि गई पीर सत्रु भयो दुलासा॥ अव मेरी पूजी निजु आसा॥ तुम जगदीस जगत के स्वामी॥ तुम अस वाग रुद्र के गांमी॥ तुम सम ब्रह्म अषल लोक के नाईक॥ तुम दुष हरन सकल सुष दाईक॥ मे पापी दल वल को गांमी॥ अनुरुध के ढिग चलिये स्वामी॥ इतनी सुनि हरि भये हुलासा॥ आये प्रभु अनुरुध के पासा॥ ब्रह्मा नारद अरु सिव नाथा॥ आये सवे कुल के साथा॥ प्रथम हिं ब्रह्मा दरस नदीना॥ अनुरुध उषा अति सुष कीना॥ ब्रह्म हि अनुरुध देषो जवहीं॥ ब्रह्म फांसि तें छुटे तवहीं॥ तवही कुंवर ब्रह्मा पग लाग्यो॥ मनो सिंधु सोवत तें जाग्यो॥ उषा चरन आनि सिर नायो॥ दई असीस ब्रह्मा सुष पायो॥ वलि देव प्रद्युम्न अरु सिर नाई॥ नारद सहित मिले सव जाई॥ धाई कुल सम अ

ऊ०
६२

नुरुधउरलावा॥ मानौंरंकपरोधनुपावा॥ प्र
द्युम्निलैचूंमिमुषवेना॥ उमगोहृदयसजल
भयेनेना॥ दोहा॥ अनुरुधछूटफांसितेदेत
वहुतविधिदान॥ जासैंदलनसवहींसुनीआनंद
वजतनिसान॥ इतिश्रीहरिचरित्रेदसमस्कंधे
श्रीभागवतेमहापुराणेअनुरुधश्रीकृस्ना
मिलापवरननोनामपंचदस्मोध्याय॥०
॥१५॥ श्रीसुषदेवउवाच॥ चौपई॥ ऊषाक
थासुननसुषहोई॥ ताहोकषनहींव्यापतं
सोई॥ रामदासजनकहतपुराणा॥ प्रेमसहि
तसुनिआनिसुषमाना॥ धंन्यपुरीसोईदेस धनि
॥जहांकथाकोहोईप्रवेस॥ सतगुरधंन्यपा
नदयोसोई॥ जौंपारसपरसिकंचनुहोई॥ रा
जहिमनिसुषदेवसुनाई॥ तासेकथाजगतमे
आई॥ सुनतकथानृपतिपायोभेवा॥ धंन्यधं
न्यस्वामीसुषदेवा॥ चरनलागिअवपूछों
तोहीं॥ ऊषाव्याहसुनावोमोहीं॥ श्रीसुषदेव
उवाच॥ सुनिहोकथापरिछतराजा॥ वानासु

रक री ब्याह की साजा॥ ऊषा ऊवाच॥ चौपई॥
श्री कृष्ण मद मुनि कों देषा॥ ऊषा जनम सुफल
करि लेषा॥ चित्रा सषी जु पुहची आई॥ ऊषा भें
टी कंठ लगाई॥ ऊषा चित्रा के पग लागी॥ तुमप्र
तापतें मिलि सभागी॥ ऊषा की माता चलि आ
ई॥ ऊषा हि भेंटी कंठ लगाई॥ मे अब कूष सुल
छिन जानी॥ तुम लगि आये ऊ सारंगपांनी॥
दस अवतार सुनाये मो ही॥ मै ऊषा ऊरनन
हिं तो ही॥ ईहि विधि रानीने समुझाई॥ पुनि रानी
महलनि चलि आई॥ प्रेम मुदित सषि सवन
र नारी॥ आनंद मंगल गावैं गारी॥ बाना सुर
सब चौक कराये॥ मल्या गिर चंदन छिरका
यो॥ कनक कलस सोहत चहूं पासा॥ मनिमय
सोभित सकल अवासा॥ सरस विछौंना ला
लित सुहाये॥ पाट पटंबर मंडप छाये॥ षंम्ह
कनक षंम सहा सुहाये॥ गजमोतिनि के चौक
पुराये॥ कंचन कलस धरे तहां आंनी॥ सषि
निसहित गावैं सब रानी॥ नाग वेलि अरूप

उ० ॥ लमगाये॥ तोरन मंडप उदित छवाये॥ सिव ब्रं
६३ ॥ ह्मा नारद मुनि आये॥ मंडप देषि महा छवि छाये
॥ अनुरूप माथे मुकट सुसोहे॥ देषत तीनि लो
कमन मोहे॥ अंग अंग आभूषन राजे॥ गजमो
तिनि की मालि विराजे॥ दुलहा देषि सबनि सु
षकारी॥ कोटि मदन छवि ऊपर वारी॥ आनि
तन छत्रपति सोवाना॥ होत विवाह सु बजत
निसाना॥ कृस्न बरात सु सजि करि आई॥ सो
ह तीनि लोक कुराई॥ औरापति पर सुरप
ति राजैं॥ गरुड चढे श्री कृस्न विराजैं॥ बलिदेव
प्रद्मुनि हय रथ साजा॥ चले साजि तहां अ
गिनित राजा॥ बजत नगारे अरु सहनाई॥
भेरि म्रिदंग करनाई सुहाई॥ बानासुर द्वार
आगौनी आई॥ देषि बरात बहुत सुष पा
यो॥ आगौनी करि मंडप आये॥ आनंद मं
गल जुबतिनि गाये॥ विधि करस घउरा नि
बैठाये॥ नेगचार कौं दुजवर आये॥ आनंद
सहित तब चरण पषाये॥ गजमोतिनि कै चौ

कपुराये॥ चढाये कौं सब नृपति बुलाये॥ ऊषा
अंग अंग छवि बाढी॥ को कहि सकैं कवी सुर
गाढी॥ मुष की सोभा चंद्र समानौं॥ सीस फूल
सिर दमकत मानौं॥ वेनी सरस फूलेन सँवा
री॥ मानौं कनक जोति अधिकारी॥ मोतिनि
मांग गुही जु अपारा॥ मानौं गंग नघ सिंग
ग की धारा॥ भृकुटि लाकान तरौं नाराजैं॥ कंठ
सिरी उर हार विराजैं॥ निष सिष रूप कहो न
हिं जाई॥ कटि किंकिनी नूपुर छवि छाई॥ न
लत चाल गयंद अधिकाई॥ पिंडुरी वेलन
वेलि बनाई॥ सरस सुगंध महा रस भीनो॥
रतन जडित पाट वर कीनौ॥ जरदक सुंव
कोले हगा छवि वारी॥ लालिन कंचु की हैत
न गाढी॥ ताहि तकारे पाट भराये॥ मानौं भं
वरक मल ढिंग आये॥ मैं हदी सषि यनि हा
थ रचाई॥ अरुन कमल सोभा छवि छाई॥
काजर रची यो दृगन भरि सोई॥ चितवत चोप
मदन वस होई॥ दोहा॥ नषसिष आभूषन

उ० सांजिकेसषियनसबैवनायी॥ मानौंभानप्र
६४ फूलनभयेसोभाकहैंरिषिराई॥ चौपई॥ स
बमिलिगावैंगावैमंगलचारा॥ बिप्रनिबि
धिकीनौंआचारा॥ कुवरिदेषिसबहींसुषमा
नें॥ बरनतभाटबिरदअरुवानौं॥ अर्चुदिवा
ईदुलहिनिपहुचाई॥ सबबरातउरनिकौं
आई॥ तबबानासुरचौकपुरायौ॥ मरकतमणि
रचंदनछिरकायौ॥ मंडपआयेश्रीजदु
नाथा॥ इंद्रकुवेरऔरषलिसाथा॥ चरनो
दिकमाथैधरिलीनौं॥ जीवनमूरसफलक
रिचीनौ॥ दोहा॥ सिंघासनबैठारिनेपति
जथाउचितज्योंनार॥ गारीगावतिनारिसब
जोजैसेवेहार॥ चौपई॥ करिज्योंनारसबउ
रनिआये॥ भांवरिकौंदुलहपहुचाये॥ बहुत
सषीदुलहतनगावैं॥ अनुरुधरूपदेषन
नध्यावैं॥ ऊषाअनुरुधमंडपठाढे॥ मानौं
कनकरतनजरिकाढे॥ ब्रह्मावेदरटतसु
षचारी॥ ब्याहकीविधिगावैंनरनारी॥ इंद्रस

हित भूप सव साथा ॥ मंडिफ आये श्री जदुना
था ॥ वाजे वजत अधिक रुनकारा ॥ गंध्रप गा
वत गुनी अपारा ॥ सषी सुवासिनि अरघदि
वाये ॥ दुलहा दुलहिनि चौक आये ॥ दुलहा
दुलही निभां वरि होई ॥ देषत देव गगन भ
ये सोई ॥ गज हेवर साजे वहु भांती ॥ हीरा र
तन नगनि की पांती ॥ हाथी हेवर दये अपा
रा ॥ सुरभीनि साथ वहुत ढढवारा ॥ वानासु
र परधान वुलावा ॥ कूंष मंडि सोई चलि आ
वा ॥ सिव संकर कौं जाई जुहारा ॥ न्रप आग्या
है ऐसैही बारा ॥ सिव सनकादि कब्रंम्हा आये ॥
स्वामकार्तिक गणपति मन भाये ॥ कहत न्र
पति सुनीयैं सिव नाथा ॥ ऊषा देहु क्रस्न के
हाथा ॥ साषिनि सहित ऊषा सोई दीनी ॥ अ
स्तुति वहुत न्रपति नै कीनी ॥ कनिक थार व
हु रतन जराए ॥ गज हेवर रथ न्रपति मगा
ये ॥ सन्मुष होन्र पति जोरे हाथा ॥ चरन सर
न राषो जदुनाथा ॥ जगत पिता जगदीस सु

||उ०|| रारी॥ तौ सुत म्हारो राग भै प्रहारी॥ धाई चरन ग
||६५|| हे न्रपवाना॥ मोथे हाथ धरो भगवाना॥ वाना
सुर सो कहत मुरारी॥ हम तुम्ह रे चरके जु भि
षारी॥ त्रभुवननाथ के हौ यह जब ही॥ जैसे क
हत न्रपति सवत ब ही॥ प्रभु के चरन गहे न्रप
वाना॥ चले कृस्न व वजे निसाना॥ दोहा॥ ह
य गय पे दर को गर्नै वाजत घनै निसान॥ ई हि
विधि जादौ दलच लौं हरषे तश्री भगवान॥ इति
श्री हरिचरित्रे मानसे दसम स्कंधे श्री भागव
ते महापुराणे ऊषा विवाह वरनौ नाम षोड
समो अध्याय॥ ६६॥ श्री सुषदेव उवाच॥
चौपई॥ वानासुर की रानी आई॥ ऊ लासा जि
बहुत विधि ल्याई॥ रातै पीरे रंग सुहाये॥ कं
लरति निकौ रतन जराये॥ लाल चुनी गजमो
ती गुहाए॥ कनिकलना सव दे षन आय॥ ऊ
लासा जि ऊषा कौ लाई॥ रानी मिलत महा सुष
पाई॥ दोहा॥ रानी ऊषहि भेटि कै आई कृस्न
हि पास॥ चरन लागि अस्तुति करी कहै राम

कौ दास ॥ चौपई ॥ अहो कृष्ण मैं जानन तोही ॥
ऊषा कथा सुनाई मोही ॥ तुम्हरे चरन कमल लमि
गुराषों ॥ भंवररूप होई हरिरस चाषों ॥ धन्य
सु सर जिनि चरन पषारे ॥ धंन्य जन सु जिनि
कै पग धारे ॥ सनकादिक पूजत सुषमाना ॥ तु
म परसि लातरी भगवाना ॥ तुम्हरी आदि ब्रं
ह्मा नहिं जाना ॥ तुम हो अगम अटल भगवा
ना ॥ तुम्हरे गुन महिमा को जानैं ॥ सो सुनि मुनि
जस कहत वषानैं ॥ निरभै पुरष गरुड़ के गा
मी ॥ मोहि दासी करि जानों स्वामी ॥ चरन पर
सि रानी घर आई ॥ प्रभु वारानक री समुहाई
॥ सुकल पक्षि तब सातैं होई ॥ मास असाढ व्या
हु भयो सोई ॥ बाजत मार घर अधिकाई ॥ को
किला चात्रक अति सुषदाई ॥ हरी हरी भूंमि
हरद्रुम राजैं ॥ स्याम घटा चहूं दिसा विराजैं ॥
चले कृष्ण दलु अरु सिव नाथा ॥ उग्रसेन निरा
लनि के साथा ॥ दोहा ॥ सुरपति भुव पति सव
चले आनंद बजत निसान ॥ द्वारावति के निक

॥ ३० ॥ यहीं आरि श्री भगवान ॥ चौपई ॥ प्रभु नारद कौं
॥ ६६ ॥ दियेपठाई ॥ रुकमिनि दियौं संदेसो जाई ॥ नार
द के हैं संदेसो आंनी ॥ चरन गहे तव रुकमि
नि रानी ॥ नारद कही पवरि तव जाई ॥ अनुरुध
सहित कुसल ठकुराई ॥ सोरह सहस्र येक सो
रानी ॥ सुनी षवर सव हिनि मिलि जानी ॥ वाजे
वाजन सिया दुवारा ॥ गावति तरुनी मंगलचा
रा ॥ कलस धरें सिर गावति नारी ॥ चंद्रवदन छ
वि रूप उज्यारी ॥ कंचन कलस दूर्वि भरि दीनें ॥ व
सदेव पिता अंक भरि लीनें ॥ महलनि आये श्री
जदुनाथा ॥ उग्रसेन उलनि के साथा ॥ अनुरु
ध साथ भूप सव आये ॥ रानी रुकमिनि मंगल
गाये ॥ रुकमिनि आई अनुरुध पासा ॥ देषि रू
प मन भयो हुलासा ॥ रति माता अनुरुध कुमा
रा ॥ भैट तनें नलनगी जल धारा ॥ कंचन कलस
सवनि मिलि साजे ॥ आनंद घर घर वाजत
वाजे ॥ हरष कुवेर बुलायेत वही ॥ हर्षवंत होई
आये जवहीं ॥ कपरा कनक वहुत नग साजो ॥

पहिराये सुरपति सव राजा॥ वहरि वोकुं तहां

आनजु आये॥ ललित विछौना सरस सुहाये॥ सरस सुगंध तहां छिरकाये॥ सुरपति त्रपति रिवसव आये॥ जादौं छपन कोटि

बुलाये॥ दोहा॥ षटरस विंजन कोगनै वहु विधि के पकवान॥ जेवत सुरपति देव सव पर

सतश्री भगवान॥ चौपई॥ घर का करन वआच वन कीना॥ अति सुगंध पप भु वीरा दीना॥ स

कल भूप तहां वैठे आंनी॥ हर्षवंत भये सारंगपानी॥ हयरथ हाथी दये गुपाला॥ वहु गि

दई पहुपनि की माला॥ दोहा॥ ईहि विधि समदे भूप सव वहुत करे सनमान॥ जादौं

छपन कोटि तहां आनंद वजत निसान

॥ चौपई॥ सुरपति त्रपति सवै पहुचाये॥

आपु कृस्न महलन मैं आये॥ वहुत हेत प्र

दमुनि पर कीं॥ अनुरुध कुवर गोद भरलीना॥ उषा कुवरि रुकमनि के पासा॥ मानो चं

द्र की किरनि प्रकासा॥ सोरह सहस भीतरर

॥७०॥ निवांसा॥ तेचलि आई उव मिनि पासा॥ जाम
॥६८॥ वंति सति भांमा आई॥ री कादं हि मुदित ब
लि जाई॥ या जोरी देषत हम जीजै॥ तन म
न वारिनि छावरि कीजै॥ बाजे बजत बहुत
रुनकारा॥ सब मिलि गावैं मंगल चारा॥ ब
हि निसहो द्रष्टी का कीना॥ रति अरु रुकिमि
नि बहुत सभागी॥ आ निसहो द्रष्टा के पग
लागी॥ दोहा॥ उषा अनुरुध की कथा सु
नों चतुर चितु लाई॥ कृस्न नाम हरि रस पि
यत पियत न अघाव कुराई॥ चौपई॥ सो फल
गंगा जमुना न्हाये॥ तीरथ परस सकल न
घर आये॥ सो फल सकल पुरी निज दरसै
॥ सो फल गया बनार सपरसै॥ उषा कथा
जु सुनै परिवाना॥ वादे धर्म पुत्र कल्याना॥
व्यास देव सुष मुनि सो कहो॥ उषा कथा पु
रातम सही॥ आदि अंत सो ई नार द गाई॥
राजही प्रति सुष देव सुनाई॥ सुनि राजा आ
नंद सुष नयेउ॥ संरप तेजु विष तन नैं गये

ऊ॥ जो यह कथा सुनैं चितु ल्याई॥ बाढै धर्म पाप छुटि जाई॥ पुत्र इछ तन लाभै ते पुत्रा धन इछ तन लाभै ते धंन्या॥ श्रवन सुफल हरि सुने पुराना॥ कर सोई सुफल देहि द्विज दाना॥ सीस सुफल जो हरि कौं नावैं॥ रसना सुफल जो हरि गुन गावै॥ चरन सुफल जो तीरथ जाई॥ के हरि के आगें निरतु कराई॥ हृदय सुफल जु दया मन धारै॥ संपति सुफल पर स्वारथ करै॥ भगवतु सोई भगवंत हि जानैं॥ दया धर्म नित नेम बहु आनैं॥ धंन्य सोई देस धंन्य नृप सोई॥ जिहि पुर कथा कृष्ण की होई॥ धंन्य श्रोता जो चितु दै सुनै॥ अर्थ विचार मै मगन गुनै॥ धंन्य सोई पुरी धंन्य सो ग्रांमु॥ निसदिनु कृष्ण कथा कौं नामु॥ अरु जु याश्री भागवत पुराना॥ सुनहि कथा द्विज दीजे दाना॥ सूक्षम मस क पवन बिनु येह॥ कृष्ण भगति बिनु श्रवन रदेह॥ रामदास कृत किये पुराना॥ पढत

॥ उ०॥ सुनतगंगाभ्रसनाना॥ दोहा॥ चंदनवंद
॥ ६८॥ नपोहपफूलजोपूजेकरिध्यान॥ पूजनही
फलपाइहैहोईपुत्रकल्यान॥ बांचेकथा
यहप्रीतिसौंश्रवनसुनैंमनुलाई॥ कष्ट
दैंथ्यांपेनहीश्ररूजमपुरनाहिंजाई॥ ईति
श्रीहरिचरित्रेदशमस्कंधेश्रीभागवतेम
हापुराणेऊषाअनुरुधव्याहश्रीकृष्णह
रिकाआयेआनंदवरननोनामसमद
समाध्याय॥ ९४॥ संपूर्ण॥

श्रीगणेशायनमः॥ अथ एकादशीमहात्म
लिष्यते॥ अर्जुन उवाच॥ तब अर्जुन श्रीकृ
ष्णजी सों पूछत हैं॥ अहो देवाधिदेव जे पुरुष
नक्षत्र के उदे भोजन करत हैं॥ और एकाद-
शी को व्रत करत हैं॥ तिन के फल हम सों न्यारे न्या
रे कहिये॥ श्रीभगवान उवाच॥ तब श्रीकृष्ण-
जी कहत हैं॥ अहो अर्जुन॥ जे पुरुष एक वार भो
जन करत हैं॥ ते जन और व्रतों के फल सें समान गु
नो फल पावत हैं॥ अरु जे नक्षत्र के उदे भोज
न करत हैं॥ और जे केवल एकादसी के व्रत को
करत हैं॥ तिन के फल को अंत नाही॥ असें व्रत
के करनेवारे जे नर हैं तिन के निकट जमराज-
के दूत नहीं आवत॥ सो जन सूर्य पर्व कों फल
तथा चंद्र पर्व को फल पावत हैं॥ जो फल अने
क तीर्थ के करसें पावत हैं॥ और जो फल दान दए
सें पावत हैं॥ इतने फल एक एकादशी के व्रत क
रसें पावत हैं॥ जो या विध सों रहे तो ता प्राणी कों
कोई वात को संसो नही॥ अर्जुन उवाच॥ तब अ

॥ग्या॰॥ र्जुन कहत हैं के अहो नारायण॥ एकादशी कहा
सें उपजी हैं॥ अरु कहा सें उत्पन्न हैं सो हमसों
॥६८॥ कहियें॥ श्री भगवानउवाच॥ तब श्रीकृष्णजी
अर्जुनसों कहत हैं॥ सतजुग के आदि विषे॥ अरु
एक मुर नामा दैत्य हतो॥ तिनने सब देवतान के
अस्थान छुडाइ लये॥ सब लोकन के विषें॥
अपनो अमल कर लीनो॥ चंद्रलोक अरु सूर्य
लोक॥ अरु तारागण के अस्थान॥ इतनी जागा
अपनो अमल कर लीनो॥ इन अस्थानन के
देवतान को भगाय दीने॥ औरजमलोक के
विषें॥ अपनो थानो बैठारत भयो॥ या दैत्य
के भय करके जे देवता थे सो अपने अस्थान
छोडके॥ पर भूम में जात भए॥ जो भूम कभी दे
खी न हती॥ ता भूम पर पाव प्यादे फिरत हे भए
॥ तहां दुःखित होय के फिरत फिरें॥ या प्रकार सें
फिरत फिरत बहुत दिन व्यतीत भए॥ तब सब
ने बिचार करके॥ महादेवजी के पास जात भए
॥ तहां जायके कहते भए॥ के हें शिवजी हमतु

म्हारे सरन आए हें॥ तासें तुम हमारी रक्षा करों॥ याप्रकार के वचन सुन के॥ शिवजीनें सब देवता को क्षीरसमुद्र में राषे हें॥ जहां लक्ष्मी सहित नारायण रहत हें॥ सेसनाग की सेज्या के पे लक्ष्मी सहित विराजमान हें॥ याभांत देवतान कों लेकें॥ महादेवजी वा स्थान के विषे जाके प्राप्त भए॥ तब सब देवतान सहित अस्तुत करत भए॥ अरु एक को देवता दुःखित होके विलाप करत भए॥ तासमें देवतान को विलाप सुन के॥ लक्ष्मी नारायण जगे तहां देषें तो॥ महादेवजी सहित देवता ठाढे हें॥ सो सब अस्तुत करत हें॥ तासमें विष्णुजी हें सो बोलत भए॥ अहो देवतों हो तुमको न अर्थ आए हो॥ कहा दुःख है तुमकों सो कहो॥ तासमें सब देवता जो थे सो कहन लगे॥ हे प्रभु तुम तो अंतरजामी हो॥ तुम सब जानत हो॥ सो हम को दुःख बहुत हे॥ तब याप्रकार देवतान के वचन सुन के॥ लक्ष्मीकांत बोलत भए॥ के सब देवता मिलकें चोदह पुरन सो॥

ग्या० ॥ मैं ॥ मुरनामा दैत्य कौं जाय कें घेरौं ॥ तव या प्रकार
७० ॥ कौ वचन सुनकें समस्त देवता वा दैत्य के पुर विषैं
जात भए ॥ मुरनामा दैत्य कौं जाय कें घेरत भए
॥ तहां जाय कें जुध करन लगे ॥ समस्त देवतान
हा महाभारी क्रौतजुद्ध होंने लगों ॥ तहां देवता
नेकें ऐसे वान लगें ॥ जैसे सावन भादौं की वर्षा
वर्षैं ॥ या भांत की वर्षा देषकें ॥ देवता अपने वाना
वलि करत भए ॥ तहां दोनो तरफ वरावर कौ जु
ध होन लगो ॥ तहां श्री नारायण नें सुदर्शन चक्र
चलायौं ॥ तव वहां दैत्य नें अपनौं वचाव कर ली
नौं ॥ तव मुरनामा दैत्य नें सुदर्शन चक्र वचाय
कें ॥ अपनें वान पांच मारत भयो ॥ तव श्री ना
रायण नें क्रोध करकें सुदर्शन चक्र चलायौं
॥ सो वह सुदर्शन चक्र देवतान के देषत वा कें
लगौं नहीं ॥ उचट गयौं ॥ सो मुरनामा दैत्य के
चोट न लगी ॥ तव देवतान नें अपनें अपनें अस्त्र
चलाये ॥ सो या भांत कौं जुध होत भयौं ॥ ता
कौं विस्तार वर्णन नहीं करौं जात ॥ या भांत रात

दिन जुध भयो ॥ तव गोविंदजी कों आलस आ
यो ॥ तव मनमें विचारी तव वादलके वानमें एक
पर्वत हतो ॥ ताकी गुफा कों नाम संग्रामती हतो ॥
तहां वैठके संग्राम को विस्तार करन भए ॥ तहां
मुर नामा दैत्य वांआ यके प्रापत भयो ॥ तहां दैये
तो पीतांवर ओढ़ें पोढ़े हें ॥ तहां परमेश्वर कों ग
दा की मारी ॥ तव श्री परमेश्वर जी नें अपने सरी
र से एक कंन्या उपजाई ॥ ता कन्याने वहुत दैत्य
मारे ॥ तापीछें मुर नामा दैत्य कों मस्तक काट ली
नों ॥ तव वाके मारेंसे सर्व दैत्य भागत भए ॥ तव
श्री परमेश्वर जी सव देवतान कों लेकें वाकी न
जीमें जात भए ॥ तानगर कों जायकें लूट लीनों
॥ और जे दैत्य पाए सो सव मार डारे ॥ तापीछें
जो देवतान के अस्थान थे ॥ सो उनके उनकों दी
नें ॥ तव श्री कृस्नजी वा कन्यासों कहते भए ॥ अ
हो कंन्या तुमनें देवतान के काज सुधारे ॥ तासें
तुम कछु वरदान मांगो ॥ तव कन्या वोलत भ
ई ॥ अहो देवाधिदेव ॥ जो तुम मो पर प्रसन्न भ

ग्या० ॥ एहैं ॥ तो यह वर दान मोकों दीजे ॥ जे मनुष्य दुष
७९ ॥ नान की विधसों एकादशी के ब्रतकों करें ॥ जो मे
रे ब्रतकों करेंता कों भुक्ति मुक्ति दीजे ॥ श्री भगवा
नुवाच ॥ ॥ तब श्री कृस्नजी ने ॥ कही कें जो तु
म वर दान मागों सो हमने दीनों ॥ सो तुम सब की
विधि सुनों ॥ या भात संसार के प्राणी ब्रत करें ॥
तकन्यारूप एकादशी की विध संजम सों कह
त हें ॥ के तो जहां नदी होय ॥ तथा तलाव होय ॥
तहां अस्नान करें जो निराहर ब्रत बनें तो बहुत
उत्तम हे ॥ ओर जासें निराहर नार ह्यो जाय सो
फल आहार करे ॥ अरु जो अंतवार होय ॥ कें
सनीस्चर होय कें मंगलवार होय ॥ तो एकादशी
कों फलमात्र फराहर करें ॥ ओर कृस्न पक्ष की
॥ तथा शुक्लपक्ष की एकादशी ॥ एकही भांत रहें
॥ एकही करके जानें ॥ अब संजम की विधि
कहत हें ॥ ता कों सुन लेउ ॥ दशमी के दिन तेल
न लगावें ॥ ओर गरम पानी सें अस्नान न क
रें ॥ ओर बार न बनवावें ॥ ओर दूसरे भोजन न

करें॥ श्रोर जो स्त्री होय सो मास भक्ष न न करें

॥ श्रोंकीं सके वासन में ना जेवें॥ श्रोर कुदई न

जेवें॥ श्रोर छेरी को दूध न जेवें॥ या भांत दश-

मी के दिन या विध सों रहैं॥ तब एकादशी के दि-

न व्रत करनों॥ ता दिन काम क्रोध लोभ न कर-

नों॥ अस्त्री संग न करनों॥ रूप न न देषनों॥ श्रो-

र पराये षानो नहीं॥ श्रोर काहू देवता की निंद्या

न करनों॥ श्रोर रूठ न बोलनों॥ श्रोर जु श्रा न-

षेलनों॥ श्रोर मैले वस्त्र उतारनों॥ या भांत व्र-

त के दिन रहनों॥ अब द्वादशी की विध सुनो॥

ता दिन तेल न लगावनों॥ श्रोर भोजन के सा-

घनी वुन षानों॥ श्रोर देवासन सोवनों॥ श्रोर

दशमी विद्ध एकादशी न रहनों॥ अर्जुन उवा-

च॥ तब अर्जुन पूछत है॥ अहो गुसाई जी॥ ए-

कादशी करबे कों नैम होय॥ वैसे में अस्त्री रि-

तवंती होय॥ ता कों व्रत कों न भात पलें॥ श्रोर-

दोष सें के सें वचें॥ सो विध हम सों कहियें॥ श्री-

भगवानुवाच॥ तब श्री कृष्णजी अर्जुन सों क-

ग्या०
७२
हृत हैं हे अर्जुन वह सब दिन और आई रात्र लों व्रत पालैं सो आधी रात लौं कछू दिया नो नहीं हे अर्जुन अब तो व्रत कौ फल सुनौ जो फल पुष्कर जी गए सें होत हैं और जो फल वद्री के द्वार गए सें होत हैं और जो फल गंगा कें आदि दे तीर्थ करें सें होत हे और जो फल एक कोटि ब्राह्मण जिवाए सें होत हैं और जो फल ऊ श्री पात जिवाए सें होत हैं और जो फल सहस्त्र योगीश्वर जिवाए कै होत हे इतनौ जो फल कहे सो एक एकादशी के व्रत करें सें होत हैं जो या भांत व्रत कें विधि पूर्वक सें करत हैं सो जन कों इतने फल की प्रापत होत हैं या भांत करकें या व्रत को ऐसो प्रभाव हैं तासें या व्रत के करें सें अनेक व्याध दूर होत हैं और या कथा के सुनें सें महत पुन्य होत हैं जे पुरष या कथा कहत हैं और पुरष जे सुनत हैं सो धोकर कें तिन कौं अनेक जन्म के पाप दूर होत हैं इति श्री पद्मपुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे

अगहन की कृष्ण पक्ष की एकादशी सुबोधना
म प्रथमोऽध्यायः॥ १ ॥ युधिष्ठिर उवाच॥
तब राजा युधिष्ठिर पूछत हैं॥ अहो श्री कृष्ण
जी वह व्रत तो तुमनें संसार के भले को करवे को
कियो है॥ याही भांत संसार के प्राणी तरेंगे॥
अब अगहन के शुक्ल पक्ष की एकादशी को
कहा नाम है॥ और कहा फल है॥ और कौन दे
वता की पूजा करत हैं॥ सो हमसों कहिये॥ श्री
भगवान उवाच॥ तब श्री कृष्ण जी कहत हैं॥
अहो राजा यह तुमको भली बुद्धि उपजी है॥
तासें तुमनें यह वार्त्ता पूछी॥ हमारे भी हिर
दे में या बात उपजी थी॥ जा समें मुर नाम दै
त्य मारो हनो॥ सो या एकादशी को नाम मो
क्षणी है॥ सो या व्रत के दिन दामोदर जी की
पूजा करत हैं॥ सालिग्राम कों तुलसी की मं
जरी चढावनों॥ और चंदन अक्षत पुष्प धूप
दीप नैवेद्य फल अर्घ तांबूल मुख सुवास
या प्रकार कर पूजा करनों॥ आरती करनों॥

ग्या० ७३

हे राजा यह कथा हम तुम सौं कहत हैं सो तुम
सुनौं । याके सुनें सें मन कौ संसौ नाहीं रहत ।
और जब लोक छू दृष्टांत नाहीं देषत । तब लों
निश्चय नहीं आवत । हे राजा जाके मात पि-
ता । तथा और पुरषा नरक में परे हैं । यनौं या
ब्रत कौं करकें या कौ फल उनके निमित्त आ
र्पन करें तौ या ब्रत के प्रताप सैं वे नरक गामी
जो हे सो तिरें सही । ताकी कथा सुनौं । हम तु
म सौं कहत हैं । एक नगरी हुती नहां को राजा
कौ नाम विश्वसेन हुतौ । सो अपनी प्रजा-
कौं पुत्र के समान पालन करत थौ । ताके
राज में सब धर्म करत थे । अनरीत कोई न
करत हुतौ । नहां के ब्राह्मण चारों वेद पढ़ै थे
। और सब प्रजा धन करकें सुषी हुती । कोइ
दुःषी दरिद्री न हुतौ । ता राजा कौं एक स्वप-
न भयौ । सो वानें अपनें पिता नरक में परे
देषे । तब प्रातःकाल उठकें भले भले पंडित
जो थे तिनकौं बुलाए तिन सौं सब स्वप्न कौ भा

त्तो कही ॥ और या भांत कहत भए राजा ॥ कैसो
कों राज्य संपदा कछू अछी नहीं लागत तासें
हम कों कछू उपाव वतावों ॥ सो धर्म व्रतनपरा
न हम करें ॥ तो सें हमारे पितानकों गत होय सो
उपदेस हम कों वताइयें ॥ तव ब्राह्मण वोलत भ
ए ॥ हे राजा पर्वतनके विषें एक रषीस्वर हैं ॥ वे
तुमसें सो सर्व वार्त्तो कहेंगे ॥ ताही समें राजा न
ग्रके लोगन कों वुलायकें ॥ मंत्री सहित वा
पर्वत के विषें जात भए ॥ तहां जायकें नमस्का
र उउवत करत भए ॥ तव राजा कों कुसल षे
म पूछत हैं और वैंठारत भयें ॥ तव राजा नें
स्वप्न की वार्त्तो सव कही ॥ और यह कही कें
अहो मुनीस्वरजी ॥ तुम हम कों उपदेस दी
जें ॥ ता उपदेस सें हमारे पिता नरक सें छू
टें ॥ तव या प्रकार के वचन सुन कें ॥ मुनीस्व
र वोलत भए ॥ अहो राजा तुमारे पिता की ए
क रानी रितवंती भई थी ॥ सो अस्नान कर
कें राजा के पास आई ॥ ता समें वा राजा नें

॥ग्या०॥ वाकौं रितछान नदयौं॥ वाकौं छोउ कैं अंतजात
॥७४॥ रह्यौ॥ वाकौं निरास छोउ गयौ॥ नाम तापसे रा-
जा नरक वासी भयौ॥ तासैं उनकौं उद्धार करे
चाहत हौ तौ आपुनें के शुक्ल पक्ष की एकाद-
शी कौं व्रत करौ॥ और द्वादशी के दिन अस्ना-
न करकैं पुण्य करौ सौ एकादशी कौ फल उन
कौं देउ॥ ताही घरी उनकी सुगति ह्वै है॥ यामैं
कछू संसौ नाही॥ तब या प्रकार के वचन सु-
नकैं॥ राजानें प्रजा सहित द्वादशी के दिन
अस्नान करकैं॥ व्रत कौ फल दयौ॥ ताही समै
वैकुंठ के विमान आए तहां नरक मैं सैं काढ
कैं॥ अंम्रत कुंड मैं अस्नान करवाए॥ तहांसैं
विमान मैं बैठ कैं॥ वैकुंठ धाम कौं जात भए
॥ तहां राजा पै फूलौं की वर्षा भई॥ और आ-
काशवाणी भई कैं हे राजा तेरौ पिता वैकुंठ ग-
यौ॥ वाकी मुक्त भई॥ विमान मैं चढ कैं ब्रह्म-
लोक कौं गयौ॥ तब या प्रकार के वचन सुन-
कैं॥ बहुत आनंद पावत भयौ॥ सो देषो राजा

याव्रतको ऐसो प्रभाव है॥ ताकी महिमा कोन पै कही जाई॥ श्रीरजे माणी या कथा कहेत है॥ अरु जे मन शुद्ध करके सुनत हैं॥ तिनकौं वाजपेय जग्य करे को फल होत हैं॥ सो या कथा कौ ऐसो प्रताप है॥ इति श्री पद्मपुराणे एकादशी माहात्म्ये श्रीघेनकेसु लपक्ष की एकादशी को नाम मोक्षणी है द्वितीयोध्याय॥ २॥ युधिष्ठिर उवाच॥ तव राजा युधिष्ठिर श्री कृष्णजी सें पूछत हैं॥ के अहो श्रीनारायण॥ पूसके कृष्णपक्ष की एकादशी कौ कहा नाम हैं॥ अरु कहा फल है सो हमसों कहियें॥ श्रीभगवानउवाच॥ तव श्री परमेश्वरजी कहत हैं॥ के अहो राजा जो फल अनेक जग्य करे सें होत हैं॥ सो फल एकादशी के करे सें होत हैं॥ सो औरहोम जग्य करे सें संतुष्ट होत हैं जे नर एकादशी विधसों रहत हैं॥ तिनके अनेक जन्म को पाप दूर होत हैं॥ अरु यह एकादशी कौ सुफला नाम हैं॥ या व्रत के दिन श्रीनारायण

॥ग्या०॥ की पूजा करत हैं॥ तासें संसार के प्राणीन कें
७५॥ उद्धार कें अर्थ ये हम्मन कीयो हैं॥ जैसें नदीन-
के विषें गंगा समान और नाहीं॥ नाग के वि-
षें सेसनाग बडे हैं॥ ताही भांत व्रतन कें विषें
एकादसी समान और व्रत नहीं हैं॥ अब श्री
परमेश्वर जी की पूजा की विधसुनौं प्रथम
परमेस्वर जी कौं असनान करावनौं॥ तिन-
कौं दरयाई कें वस्त्र पें बैठारनौं॥ तिनकौं पूज-
न करनौं॥ चंदन अक्षत पुष्प धूप दीप नाना
प्रकार कौं नैवेद्य करावनौं॥ ता पीछें आच-
मन करावनौं॥ पीछें तांबूल फल दक्षणा प्र-
दक्षणा मुषवास या प्रकार करकें पूजन-
पिर आरती करनौं॥ और तिन सें प्रार्थना
करनौं॥ ता पीछें सब रात जागरन करनौं॥
सूर्ज कें उदें ताईं॥ ताकौं इतनौं फल होत हैं॥
जैसें सहस्र जग्य करें होई॥ और जैसें संपूर्ण
तीर्थ करें होई॥ जो फल दान दरा सें होत है सो
इतनें फल या एकादसी के व्रत करें सें होत हैं॥

जेपुन्यएकरात्रीकेजागरनकियेसेंहोत
हें॥ताकोएककथातुमसोंकहतहों॥सोतु
मसुनों॥चंद्रावतीनामकरकेएकनगरीह
ती॥तहांकेराजाकोनाममहीपहतो॥ताके
चारपुत्रहते॥तिनमेंएकमहाअधर्मीह
तो॥सोवहसवराजाकीसंपदाउडावनलगो
कुमार्गमें॥औरदेवतानकीऔरब्राह्मणों
की॥निंदाकरबोकरें॥औरजोसुभकर्महैंसो
सवनजेतववाकोराजानेंवहुतसमझायो
॥परंतवहकुमार्गकोंनछोडों॥तवराजानें
वाकोंदेसनिकारोदियो॥वहकुवरवनषंडमें
रहनलग्यो॥तहांवनकेजनावरमारकेषान
लग्यो॥फिरएकरात्रकोंनग्रमेंचोरीकरवे
कोंगयो॥सोतहांचोरीकरतपकरोंगयो॥
सोराजाकेपुत्रजानकेंछोडदीनों॥सर्द
रितकेसमें॥रात्रकोंजाडेमरनलगो॥पूस
कीदसमीकेदिना॥जाडेकेमारेंसवरात्रजा
गतरह्यो॥जवसूर्जकोंउदेभयोतवघाम

॥ग्पा०॥
॥७९॥

लग्यो॥ सो रात्र कों उनींदों हतो॥ ता कुंर कों नि
द्रा में मग्न होइ कें सोयो॥ सो सब दिन संध्या
ताईं सोबू करों॥ एकादसी के दिन संध्या स
में जाग्यो॥ तब भूष लगी सो अबेर जान
कें कहूं न गयो॥ तब बेर और मकोरा तोर कें
॥ श्रीठाकुरजी कों भोग लगायो॥ तब वा कुंव
र कों आकास मंत्र फल भयो॥ तब वा व्रत
कें मता पसें॥ वा राजा के मन में दया आई
तब अपनें मंत्री बुलवाए॥ और या कही कें
यों कुंवर हमारे राज को धनी हूं है॥ सो य
ह उपान सेवत हैं॥ सो या बात कों हमें ब
ड़ो दुष है॥ कुंवर तो बन विषें कंद मूल षात
है॥ अरु हम घर बैठे भोग बिलास करत हैं
॥ तब वा कुंवर के बुलावे कों भले आदमीन
कों भेजे॥ तब उन जाइ के कुंवर कों उत्तम व
स्त्र पेंहराए॥ और हथयार बंधाय के॥ सु
षपाल में बैठार के घर कों लाए॥ तहां राजा
के पास लाए॥ तब रानी नें कलस पांव उ

रे॥ अरु राजा सों बहुत प्रीत कर मित्र भए

॥ तब राजा नें अछौ दिन देषकें राज पर बैठा

रे॥ तब राजानें कुवर कों राज दें कें॥ आप तप

स्याकों जात भए॥ तहा जाइकें बनों वा सम में

तपस्या पूरन भई॥ तब परम पद कों प्राप्त

भए॥ तब वा कुवर कों राज करत सोंलें हजा

र वर्स वितीत भई॥ वा व्रत के प्रताप सें॥ त

सें वो एकादसी के व्रत कों विधसें करत भ

यो॥ ताकें पुत्र होत भयो॥ ताकों नाम लंपक

भयो॥ ता पुत्र कों राज दें कें आप तप स्याकों

जात भए॥ सो कछू क दिन तपस्या करकें॥ दे

ह छोडन लगो॥ तासमें दिव्य विमान में बै

ठारकें बैकुंठ लोक में लें गए॥ तासे हे राजा यु

धिष्ठिर जे प्रानी॥ विधसों व्रत करत हें॥ ता

क फल कों अंत नाहीं॥ सो जो लों जीवे तो

लों फल पावें॥ अंत समें जब मरें तब मोक्ष

कों प्राप्त होई॥ सो जे पुरष और स्त्री या

व्रत कों करत हें॥ ते प्रानी धन्य हें॥ तिन कों

॥ग्या०॥ राजसीजग्यकौं फलप्राप्तहोतहें॥ इतिश्रीप
॥ ७७॥ द्मपुराणे एकादसी महात्मे श्रीकृस्नयुधि
ष्ठिरसंवादे पौषकेकृस्नपक्षकी एकादसी
सुफलानामनी त्रितियोध्याय॥ ३॥ राजा
युधिष्ठिरउवाच॥ राजायुधिष्ठिरपूछतं
हें॥ अहोदेवाधिदेव॥ पौषकेसुक्लपक्षकी
एकादसीकोकहानामहें॥ अरुकहाफलहें
॥ औरकौनदेवकीपूजाकरन॥ सोहमसौंआ
पकहियें॥ श्रीभगवानउवाच॥ नवश्रीप
रमेस्वरजीकहतहेंकेंसुनोहोराजा॥ याए
कादसीकोंनामपुत्रदेनीहें॥ याव्रतकेदिन
श्रीपरमेस्वरजीकीपूजाकीजे॥ संजमकी
विधउपरकहीहें ताभांतसौंसंजमकरें॥
तासैंयहएकादसीसकलपापकोंहरलें
तहें॥ अरुएकनग्रभिद्रावतीनामहे॥ त
हाकेराजाकोंनामसुकेतहतौं॥ अरुजाकें
रानीरानीकौंनामचंपावतीहतौं॥ सोचंहचं
पावतीसवरनवासमैंरूपवानथी॥ ग्यानवा

रकैंअेछहती॥ सोवाकैंपुत्रनहोई॥ सोवहअने
कउपायकरतीरही॥ परंतवाकोगर्भनरहैं॥
तवराजाकों यावातकोंवडोदुषभयो॥ तासो
नकरकैं षानपानकीसुधविसारतभयो॥
निछ्राजातरही॥ याप्रकारसोंचकरतवहुत
दुषभयो॥ तहांराजाकहतहैंकैंविनापुत्र
राजकोंनअर्थहैं॥ अरुपुत्रविनागयामैं
पिंडदानकोंनदेइगो॥ पुत्रविनासवसिसा
रसूनोहैं॥ तहाद्रुष्टांतकहोहैं॥ स्लोक॥ अ
पुत्रस्यग्रहसून्यंदिसासून्यस्तुवांधवः॥ मू
र्खस्यहृदयंसून्यंसर्वसून्यंदलिद्रता॥ १॥
टीका॥ अपुत्रस्यग्रहसून्यंविनापुत्रघर
रजोहैसोसून्यहैं॥ दिसासून्यश्चवांधव॥
अरुजादिसामेंवांधवजोभाईनहोई॥ सो
दिसासून्यहैं॥ मूर्खस्यहृदयंसून्यं॥ मूर्खज
नजोहैतिनकोंहृदैसून्यहैं॥ सर्वसून्यंदलि
द्रता॥ अरुसवसेंसून्यदलिद्रताहैं॥ इत्यार्थ
॥ १॥ आगतोंआसपित्रकेउपायवेकीरही॥

॥ग्या० ॥ सोह मारों और पित्रनकैं उधारकों न करेगों ॥ अ
७८ ॥ रु जे पुत्र विना ॥ रनमें संग्राम कर सत्रु जीतें ॥ नों सं
सारमें कों नकी न कीरत नचलाइ है ॥ विना पुत्र संसि
सार वृथा हैं ॥ ऐसों जानकें ॥ याकें हीकें कोई देवता
को आराधन करनों ॥ तासें हमारें पुत्र होई ॥ तासें पि
त्रलोक अरु देवलोक दोनों सुध्धरें ॥ तव राजा घो
रेपें चढकें जहां गए ॥ तहां वडे वडे रक्ष हें ॥ तहां ना
ना प्रकारके पक्षी सब्द करत हैं ॥ तहां भांत भांतके
पक्षी देषत भए ॥ तहां के रक्षनके नाम कहत हैं
सो तुम सुनों ॥ वरकों जो रक्ष हें ॥ पीपल हें ॥ षज्
रहें ॥ उमरहें ॥ सतावर हें ॥ तेंदू हें ॥ साल्ह रक्ष हे गों
दीहें ॥ को हां हें ॥ कुम्हरे हें ॥ वेरहें ॥ वहेरे हें ॥ पिंड षज्
रहें ॥ षेंरहें ॥ या प्रकारके रक्ष देषते ॥ आगें जात
भए ॥ तहां व्याघ्र विछू सिंघ देषत भए ॥ वाराह
वांदर लगूर कस्तूरिया म्रग देषते भए ॥ और री
छ सींगो स सुरें गउ वछा साहित देषत भए ॥ औ
र चार प्रकारके हाथी देषत भए ॥ तहां राजाकों
वडो अचरज भयों ॥ तहां आनें कजना वरकि

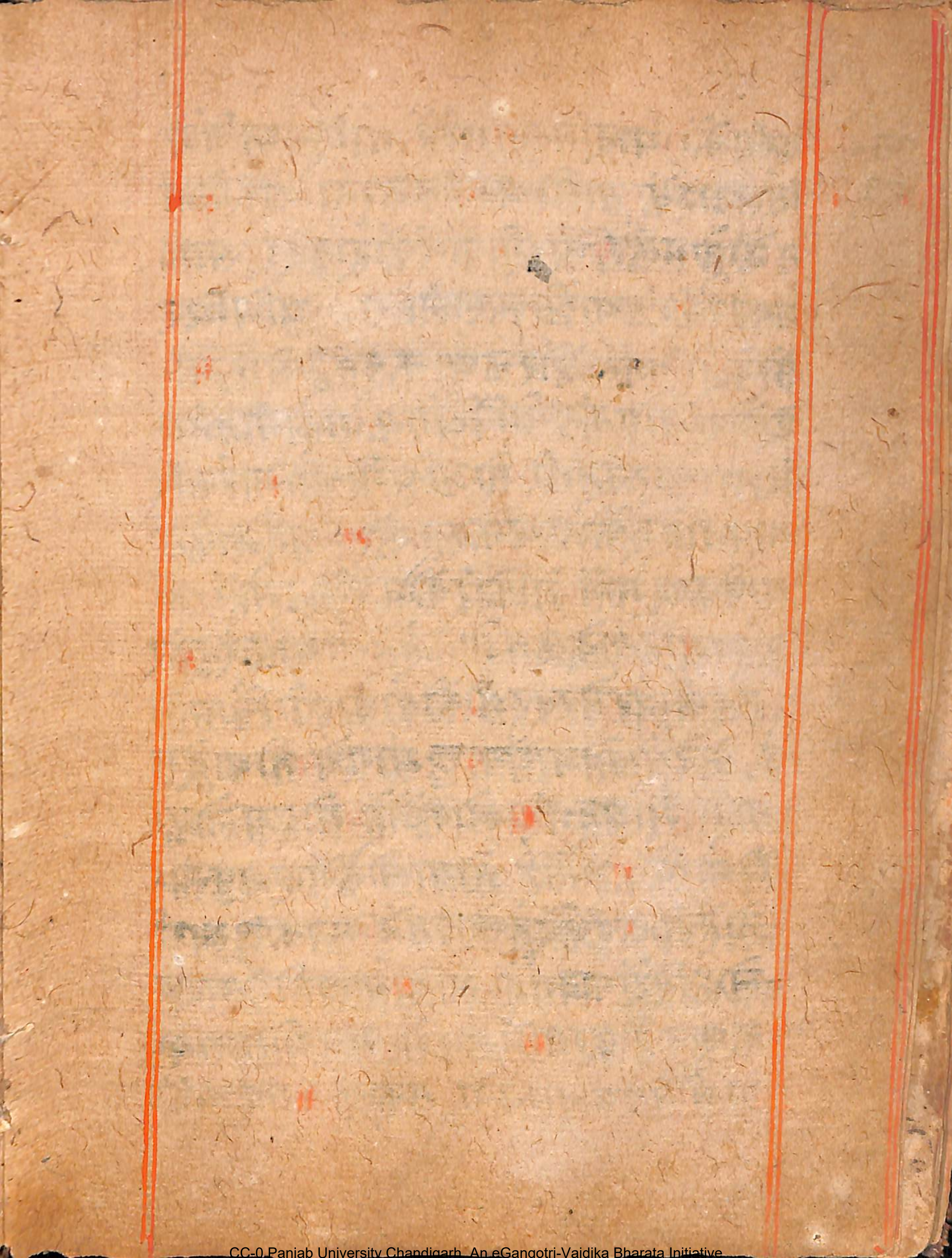
लोलकरनदेषे॥तब राजाकौं विनकौं तमासो
देषत॥संध्याहोगई॥तहा राजाकों भूषप्यास
वहुतलगी॥तब राजा कहत भयो कें मैंने तोंका
हू कौं दुष नाहीं द्यो॥यादेह पाई कें हम वहुत ध
र्म करे हें॥अब जो मो कों दुष्ट हे तहोसो काहेसें॥
याप्रकार की वार्त्ता राजा कहत भयो॥तहा आ
गें जाई कें देषें तो एक ताल भरो हें॥तहा अनेक
पक्षीनकें आश्रम हें॥अरु देवता जो हें सो देव
वानी वोलत हें॥वा ताल में चकही चकहा किलो
ल करत हें॥जहा हंस हंसनी विराजमान हें॥त
हां वडे वडे रषीस्वरन के अस्थल हैं॥सो रिषिसं
ध्या करत हैं॥तहा राजा के प्रापत भए॥सो वो रषी
स्वर क्रियाकर्म में अछहतौं॥क्रिया करप मंड
न्नि महनौं॥तव राजा औसें रषीस्वर कों देष कें
॥साष्टांग नमस्कार करत भयो॥अरु जाई कें
चरन छिए॥तहा या भात राजा पूछत भए॥
अहो रषीस्वरजी॥आपकों न भात तपस्या
करत हैं॥अरु कोंन देवता की पूजा करत हैं

॥ ग्या० ॥
७९ ॥

सोहमसों कहियें॥ तहां रषी स्वरनें क्रपा करकें कही कें हमएकादसी कों व्रत करत हैं॥ सो याएकादसी कों नाम पुत्रदें नी है॥ याके फलकों अंतनहीं॥ याएकादसी पुत्र की दाता हैं॥ अरु मोसकी दाता है॥ यासिंसार में एकादसी समान और व्रत नाहीं॥ तब राजा नें कही कें अहो मुनी स्वर हमारें संतान नाही होत॥ तासें अब हमकों सोई उपदेस दीजें॥ ताके फल करकें हमारें पुत्र होई॥ तब मुनी स्वर कही कें सुनो हो राजा॥ यह एकादसी के व्रत कों जाइकें करो॥ सो वा दिन राजा नें कछु भोजन न करयो॥ तब वा दिना व्रत करो॥ फिर व्रत कों फल॥ द्वादसी के दिना व्रत को फल राजा कों दयो॥ और अपनें ठाकुरजी कों प्रसाद दयो॥ अरु पारनों करवाइकें॥ राजा सों या प्रकार कही॥ कें हे राजा अब तुम्हारें संतान हूहे॥ या प्रकार कर करकें राजा की बिदा दई॥ तब राजा सुष पाइकें अपनें घर कों आए॥ तब रानी नें॥ अस्नान करो॥ तब

वा ब्रतके प्रतापसें रानीकौं गर्भ रह्यौ॥ जपदिन पूरे भए तब महारूपवंत कुवर भयौ॥ सो कुवर बडौ पराक्रमी भयौ॥ सौंसारमें ताकी कीर्त्ति भई भलाईकी॥ जसवंत भयौ॥ तब राजा वा कुवरकौं राजकौ तिलक दैकें तपस्याकौं जात भयो॥ जब तपस्या पूर्ण भई॥ आवर्दा पूर्ण भई॥ तब वह राजा देवलोककौं प्राप्त भयो॥ सो या ब्रतकौं औसो प्रताप है॥ जे जन याकथा वाचत हैं॥ अरु सुनत हैं॥ तिन प्रानीकौं जग्य करेकौ फल होत है॥ ॥इति श्रीपद्मपुराणे एकादसीमहात्मने पूस के सुकलपक्षकी एकादसी पुत्रदा नाम चतुर्थो ध्यायः॥ ४॥ तब श्रीकृस्नजी सौं राजा युधिष्ठिर पूछत है॥ कै अहो श्रीकृस्नजी॥ जे ब्रह्मद्रोही होत हैं॥ अरु पराई अस्त्रीकौं॥ अरु पराये द्रव्यकौं लोभ करत हैं॥ ते जन बडे अधर्मी होत हैं॥ अरु जे घोर हीक ष्टसें तिर हत हैं॥ सो उपदेस हमसौं कहौ॥ याही वार्त्ताकौं नारदमुनि ब्रह्माकौं पूछत हैं॥ तब श्रीकृस्नजी कहत हैं॥ कै सुन

॥ग्या०॥ हो राजा युधिष्ठिर॥ माहके माहि नाकी कृष्ण
॥८०॥ पक्षकी एकादसी कौं॥ व्रतसंजम सों करो॥ जो
सी विधि आगें कहैं हैं॥ ता दिन भानसंजम सहित
कें करै॥ तब व्रतके दिना आप प्रात काल सें उ
ठकें॥ सो चाचार करइं तधावन करकें॥ तहां
श्री परमेश्वर जी की पूजा करैं॥ प्रात कालसें वि
धसं युक्त सों चंदन असत पुष्प॥ धूप दी
प नैवेद्य फल अघतां बूल॥ मुद्रा मुखवा
स आरती प्रदक्षणा कर॥ संयुक्त सों पूज
न करैं॥ तहां परमेस्वर जी की मूरत आगें॥ ए
क घट भरकें धरनौं॥ ताके मुषपर एक दर
आई कौ वस्त्र धरनो॥ औ एक जोड़ पांव
की निकर राषनौं॥ अरु तामें के वासनमें ति
ल धरनो॥ और वस्त्र धोवती जो उ अंगो
छा सहित॥ इतनी सामग्री इकठी करकें राष
नौं॥ तहां सकल पंक रनौं॥ सो सब सामग्री
ब्राह्मण कों दीजें॥ तिल पात्र समेत दान दीजे
॥ ता दिन तिलनकों साचार करैं॥ सो या एका



ग्या० ॥ दसी कों ॥ घादतिलना महैं ॥ तासिन पानी में
८१ ॥ तिल डारकें ॥ तासो अस्नान करनौं ॥ अरु तिल
न कों होम करै ॥ अरु तिलन कों दान देई ॥ साया
प्रकार की कथा श्री कृस्नजी ॥ राजा युधिष्ठिर
सो कही ॥ अरु और कथा कहत हैं सो सुनौं ॥
देषो राजा एक नगरी विषैं एक ब्राह्मनी हुतीव
ऊ आचार न हुती ॥ सो ब्राह्मनी आचार करैं
अपनी देह कों कष्ट करबू करै ॥ अरु जो कोई
वापे कछू मागैं ॥ तौ काई कों कछु देइ नहीं ॥ अ
रु हरमहिना के व्रत जो कहे हैं सो याकरबू करै
॥ तब श्री परमेस्वर जी कों वा की बड़ी चिंता भ
ई ॥ क देषौ जो यापे कछु मागयें ॥ तौ या देत
नाहीं ॥ सो यह ब्रह्म लोक जे है ॥ सो ब्रह्म लोक
में जाइ कें कहा लैहै ॥ जो या लोक में दान पुन्य
जो हैं सो करके देह छोडत है ॥ तब कछु स्वर्ग
लोक विषें पावत हैं ॥ सो या ब्राह्मनी पुन्य दान
कछु नाही करत संसार में ॥ तब श्री नाराय
ण जी ने उपचार करो ॥ तब आप ब्राह्मन कौ

सरूप धरकैं ॥ मागवेकौं गए ॥ एक दाना हाथ
मैं लैकैं ॥ महादुर्वल होकैं ॥ वाके द्वारपर जाकैं ठा
ढे भए ॥ तहां ठाढे होकें याकहीकें हेल छमी ॥ ह
म कों कछू दछ्यनादेउ ॥ तव व ब्राह्मनीनें गा
री देकें एक माटीकौ डैमचलायो ॥ जो परमेस्व
रजीसें नाभ्याउनदें तौं माथेमें लगें ॥ तवपर
मेस्वरजीनें कहीकें ॥ याबुडीनिर्दैनहें याकछु
देहैं नहीं ॥ औरपथरनसों मारतहे ॥ याप्रकार
के वचन कहकें वेकुंठकौं जात भए ॥ तव कछू
क दिन वितीत भए ॥ तव वह ब्राह्मनी काल प्रा
पत भई ॥ सो ब्रह्मलोककौं गई ॥ तव तहां उ
त्तिम धाम पायो ॥ परंत तहां कछू खावेंकौंन
हीं ॥ जो मत्य लोक मे दान न दियो होई ॥ तौ वा जा
गा प्रापत न होई ॥ सो वा ब्राह्मनीनें ॥ दानपुन्यतो
कछूकरोनहतो ॥ तासतापसें कछू वस्तकी प्रा
पत नहीं ॥ परंत ब्रतके प्रतापसें ॥ ब्रह्मलोकपा
वत भई ॥ तासैं जो ब्रत करनौं तौ कछु दान
भी देनौं ॥ अपनी सक्त मूजव दान देनौं ॥ तव ब्र

न करे कौं प्र लहो त हैं॥ सो या प्र का र की कथा श्री
कृस्नजी॥ राजा युधिष्ठिर सौं कहत हैं॥ सो एका
दसी की कथा जे प्रानी कहत हैं॥ अरु सुनत हैं
तिनके अनेक जन्म के पाप दूर होत हैं॥ यामें क
छु संदेह नाही॥ इति श्री पद्मपुराणे एकादशी
माहात्मने श्री कृस्न युधिष्ठिर संवादे माघ के
कृस्नपक्ष की एकादसी षट्तिला नाम पंचमो
ध्याय॥ ५॥ युधिष्ठिर उवाच॥ तब राजा यु
धिष्ठिर पूछत हैं॥ अहो श्री त्रिभुवनाथजी॥ प्रथी
की उतपत्ति तुमनें तीन प्रकार कही हैं॥ कै चार प्र
कार की कही हैं॥ सो हमसों कहिये॥ श्री कृस्न
उवाच॥ तब श्री कृस्न कहत हैं॥ कै अहो राजा यु
धिष्ठिर॥ अंडज। उद्भिज। स्वेदज। या कहि कै।
॥ आपने घर कें पिछवारे जाइ ठाढे भए॥ तब श्री
से से श्री परमेस्वरजी आनंद कंद॥ तहां यह कहत
भए कै तुम आपनें घर जाउ॥ तेरे देषवे कौं
देवतान की अस्त्री आवत हैं॥ जब यह घर के
भीतर गई तब वा घर के किवार लगि गए॥ सो दे

वृतानकी अस्त्रीनें अनेक जतन करे परबि
वारनसुले ॥ तव नारदकी अस्त्रीनें माघकी षट
तिलनाम एकादसी ताको फल दयौ ॥ तव वे विमा
र आपसेंसु लगए ॥ अरु जे वासन नवा घरमें री
ते हते सो भर गए मेवानसों ॥ वा षटतिल एका
दसीके प्रतापसें ॥ सो नारदकी अस्त्रीनें तिल
नकौ दान दियो हतौ ॥ तास तापसें वा ब्राह्मनी
अनेक प्रकारके भोग करती भई ॥ अरु अने
क धनकी प्राप्त भई ॥ षटतिल एकादसीकौ ऐ
सौ प्रताप है ॥ जो याके व्रत के करसें अरु दान
दएसें ॥ प्रानी मुक्त मुक्त पावत हैं ॥ जो कोई सब
प्रवान व्रत करकें दक्षनादेई ॥ अरु स्वेदजकी
उत्पत्त पसीनासें होयवें ॥ अरु उद्भुदकी उप
ज जलसें उतपत्त होयवें ॥ तव राजा युधिष्टिर
पूछत हैं ॥ के अहो भगवाइन कोतुमहीं उपजा
वत हौं तीनोंकों ॥ अरु तुमहीं पालत हैं ॥ अरु
तुमहीं सिंघारत हैं ॥ सो तुमारी गत कौन पैं जा
नी जाय ॥ तासें माहके सुकलपक्ष की एकाद

सी कों कहा नाम है ॥ अरु कहा फल है ॥ अरु कौं
न देवता की पूजा करें सो हम सों विधपूर्वक क
हिये ॥ तब श्री कृष्णजी कहत हैं ॥ कें हे राजा जुधि
ष्ठिर ॥ यह अर्थ धर्म काम मोक्ष को दाता है ॥ अ
रु जदि पै ब्रह्मदोष लगो होइ ॥ और या ब्रत कों क
रें ॥ तौं ब्रह्मदोष निवृत्त होइ ॥ अरु जाके पित्र कों
प्रेतगत भई होइ ॥ तौ या ब्रत के प्रताप सें प्रेत जो
न छूटि कें सुभगति पावै सो या ब्रत की महिमा
पुरानन में कहि है ॥ ताकी कथा सुनो ॥ एक समें
इंद्र सब देवतन कों साथ लेकें ॥ नंदनवन में जा
इ कें बैठे ॥ तहां अमृत फलन कों भोजन करत भए
॥ तहां गंधर्व अपछरन सहित नृत्य करत हते
॥ अरु बहुत अपछरा नाना प्रकार के वस्त्र आ
भूषन पहिरें हैं ॥ महा विराजमान देषत भये
या प्रकार कौ जो अपछरा सो आन कें नृत्य क
रत भई ॥ तिनमें पोहप नाम एक गंधर्व हतो
सो महा विचित्र हतो ॥ अरु सब गुनन कौ जा
नन हारा हतो ॥ ताकी अस्त्री कौ मालनी नाम ह

तो। सोवाकों पुत्र महागुणी हतो। अरुसहारू
पवंतहतो। वाकों नामहामानी हातो। सोजवब
हसभामेंआयो। तववाकों देषकें एक अवछरा।
मालवंतीहती सो मोहतभई। ताकों कामकेबान
सलगे। सोवाकों कैसें ही धीरजनहोइ। अैसीव्या
कुलहोगई। सो वहमाल्यवंत अैसो रूपवंतहतो
॥ अरु काननमें कुंडल पहिरेंहें। दिव्यजाकों स्व
रूपहें। जेसें सदरिनकें विषें चंद्रमासो भादेतहें
जेंसें तारागणनिकें विषें चंद्रमासो भादेतहें। ता
ही भांत गांधर्वनकी सभामें देषियतुहें। अरुवा
अवछराके समान औरअवछरा नहीं। सो
अवछरासिंगारसहित। मोहता गतहोईकें
कामवसभई। सकलसभाकेदेषत। सोवाके
गरेमें हाथउरतभई। सोअैसी लगें मनो काम
की फांसी आई। सो वे दोनो। कामवसहोकें वेसु
द्ध होगए। जिनकों कछुसुधनहीं। सोअैसेंहो
गएजेंसें रनके विषें सूरवीरघावमें पूरनहोकें
॥ वेसुधहोजाय। याभांत कामवसहोगए। त

ग्या० ॥ वयागतईदूनैंदोनोंकीदषीतवउनकोंश्रापदीनो
॥ ८४ ॥ ॥ अरुयाभांतकहतभएकेंहमारीलज्जानकीनी
तुमनें ॥ तासेंतुमराक्षसकीदेहहूजौं ॥ हेमाचल
पर्वतकेंविषेंजाउ ॥ तववेराक्षसकीदेहधरकें
हेमाचलपर्वतकौंजातभए ॥ तहांवनकेजीवजं
तंभक्षनकरतरहें ॥ परंतउनकीक्षुधात्रप्तनहो
इ ॥ तहांवस्त्रकरकेंरहितनग्नरहवूकरें ॥ तवसी
तवहुतव्यापनलगों ॥ तवसीतकरवहुतदुषि
तभए ॥ सोयाभांतरहतेहिकौंइकदिपीछेंमा
घमासकेंशुकलपक्षकी ॥ एकादशीहोतभईसो
तादिनकछुजीवभक्षनकौंनमिलें ॥ सोवादिन
भूषेरहें ॥ अरुरात्रीकोंपवनवहुतचली ॥ तासें
सीतकरवहुतदुषपावतभए ॥ तासेंएकपीपर
केवृक्षकेनीचेंवचारोंकरकेंवेंठरहें ॥ सोसवरा
त्रजागरनभयो ॥ वापीपरकेवृक्षकेनीचें ॥ सो
जागरनपरमेस्वरजीनेंभक्तकरकेंमानों ॥ त
षउननेंप्रानहोतव्रतकौंफलपायो ॥ सोएकाद
सीकेजागरनसेंतथाव्रतकेप्रतापसें ॥ उनकी

राक्षसीदेह छूटत भई ॥ तदिव्यहोदेह होगई ॥
जाभांत आगें हती ताही भांत होत भई ॥ अरु जैं
सें प्रथम वस्त्र पैहरे हते ॥ तैंसे ही आभूषन पैहें
रकें ॥ दिव्यविवांन पर चढाई कें इंद्र लोकमैं लेग
ए ॥ तहां इंद्र की सभा में प्राप्त भए ॥ तव इंद्र कौं वडो
आश्चर्ज भयो ॥ तव इंद्र नें पूछी कें तुम नें कोंन पुन्य
कियो हैं ॥ तासैं दिव्य देह पाई ॥ सो तुम हम सों कहो
॥ गंधर्व उवाच ॥ तव उन कही अहो प्रभुजी ॥ हम
पर श्रीवासुदेवजी प्रसन्न भये अव तुम्हारी कृपा भई
तव हम उत्तम देह पाई ॥ सो अव तुम्हारी सेवा में
आनके प्राप्त भये ॥ तव इंद्र नें कही के तुम एका
दशी के प्रताप सें तुम्हारी सुगत भई है ॥ सो देषो जा
पर श्रीपरमेश्वरजी कृपा करत हैं ॥ ता पर हम हू द
या करत हैं ॥ सो अव तुम यही भांत रहवू करो ॥ अ
रु श्रीपरमेश्वरजी की भक्ति अपनें चित्त सें मत विसा
रो ॥ तव श्रीकृष्णजी राजा युधिष्ठिर सों कहत हैं ॥
के या व्रत कों ऐसो प्रताप हैं ॥ जे प्रानी या व्रत कों
नीकी वीध सों करत हैं ॥ ते प्रानी जमराज की फां

ए०
८५

सीमेंनांहीपरत॥ जोफलजग्यकरेसेहोतहैं॥ अ
रुजेफलतपस्याकरेसेहोतहैं॥ अरुजेप्रानीभक्त
रूपहोकेंयाव्रतकोंकरेंहें॥ सोप्रानीएकव्रतकेक
रेसेंईतनौंफलपावतहें॥ सोप्रानीदेवलोककोप्रा
प्तहोतहैं॥ अरुजेप्रानीसर्धासहितकथाकहत
हें॥ अरुसुनतहें तेप्रांनीअग्नहोत्रजग्यकरेकों॥
फलपावतहें॥ तिनप्रानिनकोंधनसंतानकीव्रध
होतहे॥ ईतिश्रीपद्मपुराणेएकादशीमहा
त्मनेंश्रीलक्ष्मनुपिस्लसंवादेमाघकेसुकल
पक्षकीएकादशीतिलोक्षनीनाम॥ पंचमोध्या
य॥ ॥६॥ युधिष्टिरउवाच॥ तवराजाजुधिष्टर
पूछ्तहेंके अहोश्रीलक्ष्मजीफागनकेकृष्नपक्ष
कीएकादशीकोंकहानांमहें॥ अरुकहांफलहें
सोहमसोंकहियें॥ तवश्रीपरमेंश्वरजीकहतहे
केनारदमुनीनेंएकसमेब्रंम्हाजीसेंपूछीथीः॥
सोहमतुमसेंकहतहें॥ सुनहोराजायहएकाद
शीराजानकोंभलीहें॥ अरुयाकोंविजयानांम
हें॥ सोजवश्रीरामचंद्रजी॥ वारेवरसतांईवनों

वास ॥ सीताजीसहित ॥ अरुलक्ष्मणजीसहितः
पांचवटीजाईरहेथें ॥ तहांसेरावणसीताजीकों ह
रलेगयोथों ॥ ॥ तवश्रीरामचंद्रजीवहुतदुषितभ
ए ॥ मनुषदेहकरकें तवतहांमारगमैंदेषैतोंगी
धपरोहैं ॥ विनाजटनकों ॥ तववासैं षवरपूछन
लगें ॥ तववानेंसवसमाचारविधएवंकहैं ॥ औ
र अपनेंजुधकीवार्ताकहीं ॥ जाप्रकाररावणसों
जुधभयोथों ॥ तवरामजीवाकोंपरमभक्तजानकें
प्रसन्नभए ॥ कैयाकीदेहमेरे अर्थआई ॥ तासैं
वाकोमुक्तदई ॥ सोअंतकालसमैंवाकेमुषमेंसे
जोतिकढी ॥ सोश्रीपरमेंस्वरमें समाउगई ॥ तव
श्रीरामचंद्रजीसमुद्रकौंबांधसवसेन्यासहित
पारभएसमुद्रके ॥ तहांलंकाकोंदेषकेंश्रीरामचं
द्रजीकोंपिकरभई ॥ कैंलंकागढकोंनमकाररलइजें
हैं ॥ तहांलक्ष्मनजीकहतहैं ॥ हेमहाराजतुमतौं
पूरनपुरषहैं ॥ हमतुमसैंकहाकहैं ॥ इहांसेंपाव
कोसपरवाकनालभीरषीस्वरहैं ॥ तहउनके
आश्रममेंचलियेंवेंकछुउपदेसवतावेंगें ॥

॥ ग्पा० ॥ तव श्री रामचंद्रजी अरु लछमनजी ॥ वाकता
॥ ८६ ॥ लभीर षीस्वर के आश्रम गए हैं ॥ तहां जाइ कें उन
कौं नमस्कार कियौ हैं ॥ ग्रालिपत्य हो कें मिले हैं
॥ तव रषीस्वर नें इन कें लक्षण आकार देषकें
॥ मन मैं जानी कैं ये तौ कोई अवतारी पुरष हैं ॥
इन नें देवतान कें अर्थ मनुष्य देह धारन कि-
यौ है ॥ तव यह जानकें रषीस्वर नें प्रीत करकें ॥
॥ उन कौं वैठारे ॥ अरु यह पूछी कें तुम कौंन अर्थ
आए हौं ॥ सो हम सौं कहियें ॥ अरु तुमहारे दरस
नौं सें हमारी तपस्या पूरन भई ॥ जा के काज ह
म यह तपस्या करी थी ॥ सो तपस्या तुम्हारे दर
सन पाए सें पूरी भई ॥ अव हमारो वडो भाग हैं ॥
तव श्री रामचंद्रजी नें यह कही कें ॥ अहो मुनि-
स्वरजी ॥ हम लंका गयौ चाहत हैं ॥ ता सें हमारी
सैन्या समस्त समुद्र के पार होई ॥ सो उपदेस ह
म कौं वताईयें ॥ तव वाकताल भीरषीस्वर नें क
ही ॥ कैं तुम फागुन के कृस्न पक्ष की एकादसी कौं
व्रत करौं ॥ जा कौं विजिया नाम हैं ॥ ता कौ विधतु

महमपरसुनैं ॥ ताप्रकारसोंव्रतकरै ॥ एकघट
सुवर्णकौं ॥ केरूपकौ ॥ केतामेंकौ ॥ केपीतरकौ ॥ तथा
इतनोमेंनमिलै ॥ तौमाटीकोघटसुद्धजलसैंधो
इकैंजलसैंभरनों ॥ तामेंआमकेपत्रधरनैं ॥ ता
घटकौंपुष्पपनकीमालपहरावनौं ॥ ताउपररे
समीवस्त्रधरकें ॥ श्रीपरमेस्वरजीकीप्रतमावि
ठारविस्तारनैं ॥ तिनकोसपराकेरेसमीवस्त्रप
रधरनैं ॥ ताप्रतमाकीपूजाकरनौ ॥ चंदनअक्ष
तःपुष्प·धूप·दीप·नैवेद·आचमन·॥ फलअ
र्घ·तांवूल·मुद्रामुषवास·आरतीउतारनैं ॥ या
प्रकारकरकें ॥ श्रीपरमेस्वरजीकौंपूजनकरनैं
॥ तापीछेंसवरात्रजागरनकरनैं ॥ कथाश्रवन
करनैं ॥ कीर्तनकहनैं ॥ याप्रकारसैंरात्रीजागर
नकरनैं ॥ प्रातकालद्वादसीकेदिन ॥ वाघटकौं
जल ॥ नदीमेंडारनैं ॥ सोवोंजक्षलगंगामेंमिलकें
॥ समुद्रमेंजामिलतहें ॥ अरुवहप्रतमाअरुघ
टब्राह्मनकौंदीजें ॥ तापीछेंपारनौंकरनैं ॥ ब्राह्म
नकौंअंनदानपुस्कलदेकें ॥ पीछेंपारनोंकरनैं ॥
याप्रकारयाव्रतकौंविधसौंकरैं ॥ देवतातथाम
नुष ॥ ताकीजीतहोईजुद्धकेसमैं ॥ औरसंपूर्णपा

॥ग्या०॥ प दूर होई॥ अरु मनोर्थ पूरन होई॥ तब या प्रकार
॥८७॥ के वचन सुनकें॥ श्रीरामचंद्रजी नैं॥ व्रत कियो है॥ ता
प्रताप से समुद्र पार भए॥ सैन्या सहित॥ तहां लंक
पत कौं मार कें लंक विजै करी॥ तब सीता कौं लाए
हैं॥ ता समे सेत बांध्यो है॥ तहां सेत बंध रामेस्वर
जी स्थापत किये हैं॥ ता पीछें अजोध्या नग्री मे आ
ए हैं॥ तहां बड़ो आनंद भयो है॥ सो या व्रत को ऐसो
प्रभाव है॥ जो या व्रत कौं करत हैं॥ तिनके सकल का
मना पूरन होत हैं॥ अरु धर्म की वृद्ध होत है॥ अरु
जे प्रानी या कथा कहत हैं॥ अरु सुनत हैं तिनकों
विस्नु भगत उपजत हैं॥ कुबुद्ध नहीं उपजै॥ सा या व्र
त के करे से सकल कामना पूरन होत हैं॥ इति श्री
पद्मपुराणे एकादसी माहात्म्ये श्रीकृस्न जुधिष्ठि
र संवादे फागुन के कृस्न पक्ष की एकादसी विजि
या नाम सप्तमो ध्याय॥ ७॥ जुधिष्ठिर उवाच
॥ तब राजा युधिष्ठिर पूछत हैं कें॥ अहो श्री कृ
स्न जी॥ जो मांधाता नैं श्री परमेस्वर जी सो पूछी
थी॥ अरु रिषि कों पूछी हती॥ सो हम तुम कों पूछ
त हैं॥ कें फागुन के सुकल पछ की एकादसी को क
हा नाम है॥ अरु कहा फल है॥ सो हम सों कहिये॥

तब श्री कृस्न जी कहत हैं कैं ॥ या एकादसी कौ नाम म-
श्रा बल्या है ॥ ताकी वार्ता सुनौं ॥ बे दूसी नाम एक न
ग्री हती ॥ तहां के राजा कौं दस हजार हाथी कौ बल हु-
तौं ॥ अरु ताकै राज मै कोई दुखित न हतौं ॥ ता नग्र मैं
चारौं बरन अपनैं अपनें ॥ धर्म मै सावधान हते ॥
कोई वा नग्र मैं कमी न हतौं ॥ सो राजा विस्नु भक्त हतौ
॥ अरु एकादसी कौ व्रत सधौ सौ करत थौ ॥ जब फा-
गुन के सुक्ल पक्ष की एकादसी भई ॥ ता दिन सब न-
ग्र के लोगन कौं ॥ नदी के तीर लै गए ॥ तहां राजा कैं ए-
क घट भर धर्यौ ॥ ता पर एक वस्त्र धर्यौ ॥ ता व-
स्त्र पें पंचरत्न धरे ॥ ता पर श्री परमेस्वर जी की प्रत-
मा विस्तारी ॥ तहां समस्त पुरवासी ॥ राजा कौं आ-
दि दै कै समस्त प्रजा नैं पूजा करी ॥ तहां एक भील
आन कैं वैठौ ॥ सो वाकैं अवार होगई ॥ तब भील
नैं कही कैं ॥ अब मैं कहुं न डौं हौं ॥ ये वचन मन मैं उ-
पजा कैं रह्यौ ॥ ताकौ रहवौ श्री परमेस्वर जी नैं व्र-
त समान मान लीनौं ॥ तब प्रभात भयौ ॥ सब नग्र
के लोग अपनें अपने घर कौं जात भए ॥ तिन नैं जा
कैं पारनौं करे ॥ तहां वह भील काल प्राप्त भयौ ॥
सो भील मर कैं जैंन तीन ग्री मैं जा कैं राजा के घर

एका०
८८

जन्म लेत भयौ ताकौं विद्यारथ नाम भयौ विद्यात हतौ। ताके घर जन्म लीनौं तहां चित्ररथ नाम धरौ। ताकै संपदा बहुत भई सो वोंदसहजार गाव कौ राजा भयौं। अरु एकादसी के व्रत कौं करत भयो विधरू सौं। तब एक समैं राजा कौ पुत्र सिकार कौं जात भयौ। तहां एक म्रग मिलौ। सो वा म्रग के पाछें जात भयौं। सो उद्यान बन में जाइ कैं प्रापत भयौ। तहां म्रग तौ जात रह्यौ। अरु वो राजा कौ कुवर बन विषैं भूलगयौं। तहां जे ठमास के सीलपटेंचलत हतौ। तहां चोरौं हाररगयौ। ता घोरे कौं ए क्ष की उरसौं बाधौं अरु आप छाया मैं बैठ गयौं। तहां नींद आगई। तहां वाके घोडे कौं एक राक्षस आवत भयौ। तहां राक्षस नें घोरे कौ देष कुवर कौ देषौ। तहां वा कुवर के घोडे कौं नगीच आवत भयौं। तहां एकादसी देह धर कैं वा राक्षस कौं मारौ। वह कुवर सोवु करौं वानें कछु जानी नहीं तब कुवर सोवत सें जगौं। तहां देषें तौ राक्षस मरौ परौ परौ है। तहां हा कुवर के मन कौं बडौ अचरज भयौं। के यां राक्षस कौं नें मारौ है। सो कुवर सो कुवर एकादसी के व्रत कौं करत हतौं। सो व्रत के प्रताप से एकादसी नें रक्षा करी। सो या व्रत कौं ऐसौ प्रभाव

हैं ॥ अरु जे प्रानी ॥ यह एकादसी की कथा कहत हैं ॥ अ
रु जे प्रानी सुनत हैं ॥ ते प्रानी मनवांछित फल पावत हैं
॥ यामैं कछू संसो नही ॥ इति श्री पद्मपुराणे एकादसी
महात्मे ने फागुन के सुकलपक्ष की एकादसी आव
ल्या नाम अष्टमोध्याय ॥ ८ ॥ युधिष्टिर उवाच
॥ तब राजा युधिष्टिर पूछत हैं ॥ के अहो श्री कृस्न
जी ॥ चैत्र के कृस्न पक्ष की एकादसी को कहा नाम है
॥ अरु कहा फल है ॥ सो हमसौं कहियें ॥ श्री कृस्न उवा
च ॥ ❁ ॥ तब श्री कृस्नजी कहत हैं ॥ के चित्र रथ ना
म है एक पर्वत हतो ॥ तहा महा उद्यान हैं ॥ जब बसंत
रितु कौं आगम भयौ ॥ तब तहा के वृक्ष जो हैं ॥ सो नाना
प्रकार कें फूल लागत भए ॥ तिन वृक्षन के फूलन की
सुगंध पे भवर गुंजारत हैं ॥ औ र नाना प्रकार के प
क्षी क्रीडा करत हैं ॥ सो वा बन की सोभा देषकें इंद्र अ
रु गंधर्व ॥ अपछरान सहित क्रीडा करत भए सो
वा वन में मेघवि नाम रिषीस्वर तपस्या करत थे ॥ त
हा मंजघोषा नाम एक अपछरा ॥ वा रषीस्वर षों
मोहत भई ॥ सो कैसी है वह अपछरा ॥ जु नाना भात
कें वस्त्र पहिरें हैं ॥ अरु नाना प्रकार के आभूषन प
हिरें हैं ॥ या भांत सोवत हैं ॥ सो सब अंग अंग स्वरूप

॥ग्वा०॥ धारकैं ॥ रषीस्वर के पास आई ॥ वह रिषीश्वरजी कौं
॥८९॥ उपासिक हतौं ॥ तब वा काम कौं बडो आनंद भयो ॥ कै
मेरो सरीर या सें न लगो हतौं ॥ सो अब में याहे छीलो ॥
सो वाकौं ऐसो काम को बान लगो ॥ सो सब सुध भूल
गई ॥ तब वाके देषत वा मुनीस्वर की देह सिथल हो
गई ॥ तब वह अपछरा नें कांधे पर बीन धर कें ॥ महा
मधुर सुर सौं बजावती भई ॥ और गावन भई ॥ सो या
भांत गावती बजावती ॥ वा रषीस्वर के गरे में भुजा
मेलती भई ॥ तब वाको गाईवो और बजाइवो सुन कें
॥ तहां वाको स्वरूप देषकें ॥ ऐसो वस भयो ॥ सो वा र
षीस्वर कौं अपनी तपस्या की षबर न रही ॥ सो सु
ख होइ कें वाके साथ गावन लग्यो ॥ और जो कछु अ
पछरा कहे सोई आप कहन लग्यो ॥ सो या भांत प
चवन बरसें और सात महिना ॥ और सात दिना
जात न जानें ॥ महा सुष पाए परंत वा रषीस्वर की
कामना त्रपत न भई ॥ ता पीछें वा अपछरा नें बिदा
मागी ॥ कै अब मे अपनें अस्थान कौं जेहों ॥ तासें मो
कौं बिदा कीजें ॥ तब रषीस्वर नें कही ॥ कछू क दिना
पीछें तुम्हारी बिदा करेंगें ॥ तब वाने प्रवान करी ॥
ता पीछें बहुत दिन बीते ॥ तब वहु अपछरानें पिर

कहीकें। अबहमारीविदाकीजे। अरुजोतुममो-
कोंविदानदेहौ। तोमेंतोजेंहो अबनाहहीं। याभां
त अबछराकेवचनसुनकें। वहरषीस्वरक्रोधवं-
तभयो। सोमहादुषपाइकेंकहनलग्यो। कें। अरी
अधर्मनी मेंनेंमहाकष्टसौंतपस्याकरीहती। सो
तूंनेंमेरीतपस्याषंडतकरी। सो अबमेंतोकोंश्राप
देतहों। सोतू अबजाइकेंराक्षसनीहूजे। अरुतो-
कोंधिक्कालहै। तब अपछरानेंकहीकें अहोरषी
स्वरजू। फिरमेरोंउद्धारकबहूहे। यावातसुनकेंर-
षीस्वरदयावानहोकेंबोलतभए। केचेत्रकेकृष्णप
क्षकीएकादसी। पापमोक्षनीहैताकोंव्रत। सधसि
करहो तवतुम्हारीश्रापदूरहूहै। तवतेरीमुगतहूहै
। याप्रकारकेवचनकहिकेंरषीस्वरतपस्याकोंजात
भए। तवयेरषीस्वरकीवार्त्तासमस्तइनकेगुरुहते
तिननेंसुनीसों इनकेपासआवतभए। तिनकोंनो
मच्विमुनोरिषहतो। तिनसोंसर्ववार्त्ताजोभईथी।
सो सवकही। तवमुनीस्वरनेंयहउपदेसवतायौं
। केंतुमपुनचैत्रकेकृष्णपक्षकीएकादसीपापमो-
क्षनीनामहै। ताकोंव्रतकरौ। तासेंतुमसुद्धहूहो। त
हाअवछरानें अरुरषीस्वरनें। दोनोंनेंएकादसी

ग्या० ८० कैंव्रत कियौं॥ तब दोनों कौ सुध गतन भई॥ याव्रतके
प्रतापसैं जेसैं प्रथम हते॥ तैसेही भएतब सुध होई
कैं॥ अपनें अपनें लोककौं गए॥ सोजे प्रानी या व्रतकों
करें हैं॥ तिनके सातजन्म के पाप दूर हू हैं॥ अरु जे प्रानी
यह कै पाक है हैं॥ अरु जे सर्धासौं सुने हैं॥ ते प्रानी ह
जार गऊ दंए को फल पावत हैं॥ अरु जें प्रानी ब्रह्म दो
षी हैं॥ अरु गुरु द्रोही हैं॥ अरु सुरापान के करैया हैं॥
अरु माहा पापी जीव हैं॥ ते पुन या व्रतके करैसैं॥ अ
रु याकथा के कहे सें अरु सुनें सें तिनकी भी मुक्त हू
हैं॥ यामैं संसो न हैं॥ इति श्री पद्मपुराणे एकाद
शी महात्मने श्री कृस्न युधिष्टिर संवादे चैत्र के क्र
स्न पक्ष की एकादशी पापमोक्षनी नाम न मोध्याय॥
२८॥ युधिष्टिर उवाच॥ तापीछैं श्री वासुदेव जीकौं
नमस्कार करकैं॥ राजा युधिष्टिर पूछत है॥ कै अ
हो देवाधिदेव जू॥ चैत्र कें सुकल पक्ष की एकादसी कौ
कहा नाम है॥ अरु कहा फल है सो हमसें कहियें॥
तब श्री कृस्न जू कहत हैं॥ कें यह कथा वसिष्ट जी सों
राजा दलीप नें पूछी हती॥ सो कथा हम तुमसों कहत
हैं॥ याकौ नाम कांमदा है॥ ताकी कथा हम तुम सों
कहत हैं॥ सो तुम सुनौं॥ नागपुर नांम एक नग्र हतो

वा राजा के गांधर्व अरु अपछरा क्रीडा करयौ करत हैं ॥ तहां विषियाललिता नाम एक अपछरा हती ताके पुरष कौ ललित नाम हतौ ॥ सो वो रात दिन कबहू विछरें नहीं ॥ सो एक दिन वह राजा सभा जोर कै वैठो हतौ ॥ तहां आंन कै गांधर्व नैं अरु अपछरा नैं राजा सैं आंन कै मुजरा करौ ॥ तिन अपछरन मैं ललिता न हती ॥ ललित हतौ सो वाकी तांन वा ललिता विन सुध नें गावैं ॥ आलापैं कछू अरु गावैं कछू ॥ तब राजा नैं दुष पाई कैं वाकों श्राप दई ॥ कै तु जाइ कैं वडो राक्षस हौं ॥ अरु वडी दीर्घ देरी देह होई ॥ अरु महाभयानक तेरो मुष होय ॥ जैसें वडे परवत की कंदरा होत हैं ॥ ता श्राप सैं वैसी देह भई वाही भांत कौ मुष भयौ ॥ सो पुरान मैं याकी देह आठ जोजन कौं वरनौ है ॥ सो राजा की श्राप सें ऐसी गत भई ॥ तब वा श्राप कौ षवर ललिता नैं पाई ॥ तब वा कैं साथ उद्यान मैं रहन लगी राक्षस की नाहीं ॥ वा वन मैं जनावर अरु मानस मार कैं षाय ॥ पर त्रपत न होई सो या भांत रहत कछुक दिन वीतैं ॥ तब एक दिन विंध्याचल परवत पर चढ गए ॥ तहां एक रषीस्वर देषौं ॥ तब ललित वाके पाव परो ॥ अरु सब वा

ग्या० ६१ कही॥ अरुयहकहीकैं अहौमुनीसरुज॥ अवहम॥
कौंउपदेसदीजै॥ तासैंहमारीसुधगतहोइ॥ तवरिषी
स्वरनैंकहीं॥ कैंचैत्रकेंसुकलपक्षकीएकादसीकों॥
व्रतकरौं॥ तवललितसौंकहीकैंतुमव्रतकरकैं॥ द्वा
दसीकौंफलइनकौदीजै॥ तवयाकीसुधगतहूहैता
पीछैंअपनैंलोककौजैहौ॥ तवललितानैंयहव्रतक
रकैंद्वादसीकेदिनअस्नानकरकैं॥ व्रतकौंफलदयौं
तवराक्षसकीदेहछूटकैंसुद्धभयो॥ दिव्यदेहभई॥
जैसीपैंहलैंहती॥ तहांविमांनपैंचढकैंइंद्रलोककौ
पहुचैं॥ सोयाव्रतकौंअैसोप्रतापहैं॥ जेप्रांनीयाक
थाकहैंहैं॥ अरुसुनैंहैंतिनकौंवाजपेयंजग्यकरकौंफ
लपावतहैं॥ इतिश्रीपद्मपुराणेएकादशीमाहात्मनें
श्रीकृष्णयुधिष्ठिरसंवादेचैत्रकेसुक्लपक्षकीएका
दसीकांमदानांमदशमोध्यायः॥ युधिष्ठिरउवाच॥
१०॥ तवफिरराजायुधिष्ठलपूछतहैंकैंअहोंश्रीदेवा
धिदेवजू॥ वैसाखकेंकृष्णपक्षकीएकादशीकौंकहां
नांमहैं॥ अरुकहांफलहैंसोहमसैंकहियें॥ तवश्री
कृष्णजीकहतहैं॥ कैसुनहोंराजायाएकादशीकौंनांम
वारुथनीनामहैं॥ यहलोउलोकमैंसहाईकरताहैं॥
यहभुक्तमुक्तकीदाताहैं॥ अरुजास्त्रीकेगर्भनारहैं

सो अस्त्री याव्रत के करेसें अवस करि कें गर्भ रहें ॥ अरु याव्रत के प्रताप सें प्रानी भ्रमें नहीं ॥ अरु याव्रत के प्रताप सें राजा मांधाता वैकुंठ में प्राप्त भए ॥ जो फल दस हजार वर्ष तपस्या करे सें होत हैं ॥ सो फल याएकादसी कें व्रत करे सें होत हैं ॥ अरु जो फल कुरुक्षेत्र गए सें होत हैं ॥ अरु जे फल सूर्यपर्भी सें होत हैं ॥ ओ फल एक भार सुवर्ण दए सें होत हैं ॥ सोई तनौं फल एकएकादसी कें करे सें होत हैं ॥ अरु याव्रत के करे सें पवित्र होत हैं ॥ अरु जे प्रानी कंन्या के धन कों आसरो करत हैं ॥ ते प्रानी नर्कगामी होत हैं ॥ तासें कंन्या कों धन कभी नलीजें ॥ जो पूजें सोई देनौं ॥ अरु हाथ जोरनौं ता समां न पुन्य नहीं ॥ जो अपनों भलो चाहें तो कंन्या कें धन सें वचौ रहें ॥ ताकों वडो फल हैं ॥ ता फल सें सिवाई याएकादसी कें व्रत कौ फल हैं ॥ तासें जे ग्यानी नर हैं ते प्रानी अवस कें याव्रत कों करत हैं ॥ अरु याव्रत कें करे सें श्री परमेस्वर जी वस होत हैं ॥ जो फल हजार गऊ दए सें होत हैं ॥ अरु जे फल अनेक तीर्थ गए सें होत हैं ॥ जे फल गया गए से होत हैं ॥ इतनौं फल याव्रत कें करे सें तथा याकथा कें कहे सें तथा सुनने सें इतनो फल एकएकादसी करे को होत हैं ॥ जे प्रानी याव्रत कों करें विधसों

ग्या॰ ६२

सोंप्रानी सदां वैकुंठवासपावतहैं ॥ इतिश्रीपद्मपुरा
णेएकादसीमहात्मनेश्रीकृष्णजुधिष्ठिरसंवादे ॥
वैसाषके कृष्णपक्षकीएकादसीवरथनीनामएका
दसोध्याय ॥ ११ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ फिरराजाजुधिष्ठिर
पूछतहैं ॥ कैंअहोश्रीनारायणजु ॥ वैसाषकेसुक्लपक्ष
कीएकादसीकोंकहांनामहैं ॥ अरुकहाफलहैं ॥ सोहम
सोंकहिये ॥ तवश्रीकृष्णजुकहतहैं ॥ वासिष्ठजीकोंश्रीरा
मचंद्रजीपूछतहैं ॥ सोहमतुमसोंकहतहैंकेंश्रीरामचंद्र
जूसैंअरुसीताजीसैं ॥ वियोगभयोहतो सोकौंनभांतसं
योगभयों ॥ सोहमसौंकहियें ॥ तववसीष्ठजीनैंकही
अहौदीनवंधजू ॥ तुम्हारेनावलएसें अधर्मीजिहै ॥
तेपुनतिरजातहैं ॥ तासें आपएकादशीकोंव्रतकरे ॥
ताकोंनाममोहनीहें ॥ याव्रतकेंकरेसैं ॥ महापापसेंछू
टतहैं ॥ पापनकीहरनहारीहैं ॥ ताकीएककथाहमतुम
सोंकहतहैं ॥ तवतुमारेमनमैंप्रतीतआवेंगी ॥ सरस्व
तीनदीकेतीर ॥ एकभद्रावतीनामनग्रीहती ॥ तहांकेरा
जाकोसोमवंसनामहतो ॥ सोराजावडोपुन्यवांनहतो ॥
ताराजानैंहरनसिधपाईकेंमहाधर्मकरतभयो ॥ कूप
अरुतालअरुवागवनवावतभयो ॥ तवराजाकेपांचपुत्र
होतभयो ॥ तिनकेंनामकहतहैं ॥ वडेपुत्रकोंनामसु

मन॥ दूसरेकौनाममानइत॥ तीसरेकौंनाममेघवाजभ
यौं॥ चौथेकौनामसुवलभयौ॥ पांचमैंपुत्रकौंनामधिस॥
बुधहतौं॥ सोमहाअधर्मीहतौ॥ अरुविभचारीहतौ॥ अ
रुज्वारीहतौं॥ अरुषजअषजषानलगौं॥ अरुकाहूकौ
कछुदेईनहीं॥ नेकभीपरमेस्वरजीकीपूजाकरै॥ अरु
अपनैंमातापितासैंडरायनहीं॥ अरुनिरभयहोयकैं
मदरापानकरै॥ अरुविस्यागमनकरै॥ राजाकीआ
ग्यानमानैं॥ तवराजानैंजानीकैंयहवडोअधर्मीहै॥
यहजांनकैंवाकौंदेसनिकारौंदयौं॥ तासैंअैसोकांमकौ
ईनकरै॥ जदिपपुत्रहतौंताकौकाननकरी॥ तदिपऔ
रकौकानकैसेकरेगौं॥ याभांतप्रजाकौंभयभयौ॥ सो॥
अपनेधर्मसैंसवचलैं॥ तववहपुत्रउद्यानमैंजाईरह्यौ
जहाजववाकौंभूषलगैंतवअन्नतौंमिलैनहीं॥ तववन
कैजनावरमारकेंषाऐ॥ मोरचकोरषरहामारषांनल
गौं॥ याभांतमहाउद्यानवनमैंनिर्भयहोकेरहनलग्यौं॥
सोय्याभांतवनहीवनमैंफिरतवहुतदिनवीतैं॥ एकसमैं
महाउद्यानमैंपहुचैं॥ तहांएकरषीस्वरकौंआश्रमहतौं
तहांउनकेदरसनभयेतिनकेदरसनसैंकुंवरकौंसुबुद्धहोत
भई॥ तवरषीस्वरकौंदंडवतनमस्कारकरीअरुपावपरे॥ अरु॥
अपनीसववार्त्ताकही॥ अरुकहीकैंहेमुनीस्वरजी॥ अवतुमह
मकौंउपदेसवतावो॥ तासैंहमारीसुगतहोई॥ तवरषीस्वरप्रसं

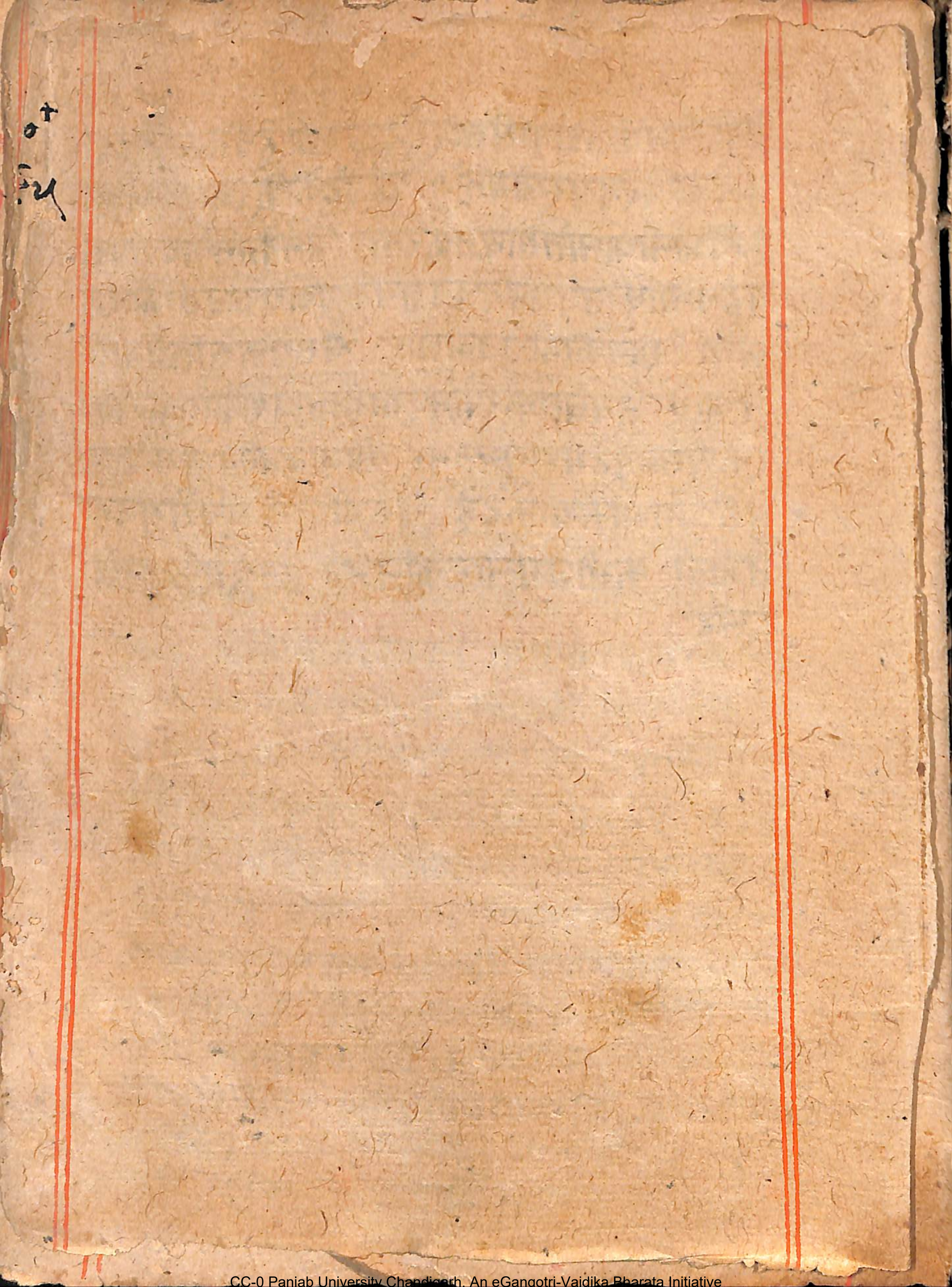
ए० ८३ नहोइ केंकहीं॥ कैवैसाषकें सुल्कपक्षकी एकादसीमोहनी
नामहैंजाकोंव्रतकरेंतु मजाईकें॥ ताप्रतापसेंजोसुमेरपर्व
तसमांनपापकियेंहोईगे॥ सोसवइरहूहें॥ याव्रतकेंप्रताप
सें॥ याबातसुनकेंकुवरनें एकादसीकोंव्रतकरो॥ ताव्रतके
प्रतापसेंसुगतभई॥ तवकुवरकोंदिव्यविवांनआए तव
वैकुंठकोंजातभयों॥ सोयाव्रतकों असोंप्रतापहैं॥ सोवैकुंठ
धांमपायो॥ अनेकतीर्थकरेकोंपुंन्यहोतहैं॥ अरुजगपक
रेकोंपुन्यहोतहैं॥ सोफलयाएकादसीकेकरेकोहोतहैं॥ सो
फलजेप्रानीयाएकादसीकेकरेसेंहोतहैं॥ जेप्रानी॥ याकथा
कहतअरुसुनतहैं॥ तेप्रानीकोंयोंफलसिवाय॥ हजारगउद
येकोपुंन्यहोयें॥०॥ इतिश्रीपद्मपुराणे एकादसीमहा
त्मनेंश्रीकृष्णजुधिष्ठिलसंवादे वैसाषकेंसुल्कपक्षकी
एकादसीमोहनीनाम॥ द्वादसोध्याय:॥१२॥ जुधिष्ट
रउवाच॥ तवराजायुधिष्टरपूछतहैं॥ अहोश्रीकृष्णजी
जेठकेकृष्णपक्षकीएकादसीकोकहांनामहैं॥ अरुकहा
फलहैं॥ सोहमसोंकहिये॥ तवश्रीकृष्णजीकहतहैं॥ केयाए
कादसीकोंअपरानामहैं॥ अरुसकलकामनाकीदाताहैं
जोकदापिगेब्राह्मणकोंदोषीहोई॥ अरुजेकूठीसाषवोल
तहैं॥ अरुजेवेदपुराननकीनिंदाकरतहैं॥ तेनरनरकगा
मीहोतहैं॥ अरुजेछत्रीरनसेंस्वामीकोंछोडकेंभगेंहें॥ अरु
जेप्रानी आपनेंगुरुकींनिंदाकरतहैं॥ इतनेंपापकेकरता

जे प्रानी है॥ ते प्रानी या एकादसी के व्रत कौं करत हैं तिन के पा
प छुटत हैं॥ अरु जो फल गया गए से होत है॥ अरु पुष्कर॥
जी गए से होत है॥ अरु जो फल गोदावरी तथा सिंधु गए सें
होत है॥ अरु जे फल मकर पर्भी कों प्रयाग न्हाए सें होत
है॥ अरु जे फल कासी जात्रा करे सें होत है॥ अरु जे फल कु
रुछेत्र सूर्यपर्व गए सें होत है॥ जे फल षुरयानी गउ दए
सें होत है॥ अरु जो फल सुवर्ण की भूमदए सें होत है॥ इ
तनौ फल एक ऐकादसी को व्रत करे सें होत है॥ अरु जें
प्रानी महापापी है॥ तिन के पाप हरबे कौं यह व्रत अग्नरूपी है
संपूर्ण जो पाप है तिन कौं जराकें भसम करे है॥ अरु जे पा
पी अंधकूल है॥ तिन कों यह व्रत सूर्य के समान है॥ जे पाप
रू यह स्तीसमान है॥ ताको यह व्रत सिंहरूपी है॥ अरु जे
व्रत के दिनां श्रीकृस्न जी की भक्त सों सामग्री लाई के॥ पूजा
करे हर्ष सों॥ जो प्रानी या व्रत को सरधा सो पूजा करेगे
तिन के संपूर्ण जो पाप है अनेक जन्म के सो सब भसम होइंगे
या में कछु संसो नाही॥ अरु या व्रत कों करनवारो निश्चै क
र कें विस्नुलोक कों जे है॥ तिन प्रानी पर श्रीगोविंद जू दया कर
हैं॥ अरु जे प्रानी यह कथा कहै हें अरु सुनें हैं॥ ते प्रानी फेरि ज
मलोक कोंन जे इसस करकें॥ इति श्री पद्मपुराणे एकाद
सी महात्मने श्री कृस्न जुधिष्ठल संवादे जेठ के कृस्न प
क्ष की एकादसी अपरा नाम नौ त्रिदशो ध्याय:॥२३॥
जुधिष्ठिर उवाच॥ ०॥

ऐ०
९४

तवराजाजुधिष्ठिलपूछत है॥ कैं अहो श्रीकृस्नजी॥ जेठ के सु
कलपक्ष की एकादसी कौं कहा नाम है॥ अरु कहा फल है
सो हमसौं कहियैं॥ तव श्रीकृस्नजी कहत हैं॥ के सुन हो रा
जा॥ यह कथा भीमसेंननें॥ श्रीव्यासजी सें पूछी ही तौ कें
अहो व्यासजी॥ मैं अपनौ सो बहुत करौ हों॥ परमो पै भू
षन ही साधी जाय॥ अव दस दिना मैं महापुनीत दिन
होई॥ सो हमकौं वताईयें॥ तव व्यासजी कहत हैं॥ कें सु
नो हो भीमसेंन॥ अव तुम जेठ के सुकल पक्ष की एका
दसी विधसौं जाइ कें करौ॥ ताकौं नाम निर्जला है॥ सो यह
एकादसी और व्रतन सैं वडो व्रत है॥ जो लौ देह मैं सक्त
होई॥ तो लो निर्जल व्रत करै॥ ता समान फल और न ही
सो या एकादसी समान और फल नही॥ जो प्रांनी नीकी वि
ध सो या एकादसी कौं व्रत करेगें॥ तिनकौं जमकी त्रास कैं
सें हीन होई गी या एकादसी के रहे से सुष सें देह छूटत हैं॥
और विमान मैं वैठार कें पीतांमर उढाई कें वैकुंठ लोक कौ
ले जात है॥ जे प्रानी वारे मास एकादसी कै व्रत कौं करै है
ता समांन पुन्यवांन और न ही॥ अव निर्जला एकादसी॥
की विध सुनौं॥ घीव की अरु षाड की धेन वनावै॥ अरु घ
त षांड की ना वनावे तौं॥ सजीव रमगा लेई॥ ताकौं विधसौं
ब्राह्मण कौ देई॥ ता दिन विधसौं हरि की पूजा करै॥ चंदन॥
अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद फल अर्घ तांवूल सुगंध मुष
वास॥ या विधसौ पूजन करें॥ पूजन करकैं अस्तुत करें श्री

देवादेवरिषीकेशवसिंसारनवतारका। हेवंतकंकुंम्हदा
तादेवाधिदेवपरमागतं॥१॥ यहपटकैफिरब्राम्हणकौदे
ई जो प्रानीयाभांतसौंव्रतकरतहैं। तिनकेनिकटपापक
बहूंनआवै॥ तवयहवचनसुनकैंएकएकादसीकौंव्रत
लयौं॥ सोनेकीझारीउठालाऐ॥ अरुएकरूपेकीझारी
लेंआऐ॥ तवव्रतकरकेंवहझारीब्राम्हणकौंसंकल्पक
रकेंथसोछूटेमहासुगतभई॥ सोयाव्रतकौंअैसौंप्रता
प हैं॥ जोयाकथाकहेहैं॥ अरुजोप्रांनीरुचसैंसुनेंह
तंप्रानी॥ कभीजमलोककौंनजेहें॥ याव्रतकोअैसो
फलहें॥ इतिश्रीपद्मपुराणेएकादशीमहात्मनेंश्री
कृष्णजुधिष्टिरसंवादेजेठकेसुकलपक्षकीएकाद
शीनिर्जलानामचतुर्दशोध्यायः॥ १४॥



॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ बहुरि श्रीराजा पूछत हैं ॥ कि अहो देवाधिदेव प्रसाद के अष्ट पक्षिकी एकादसी कौन है नाम है ॥ अरु कहा फल है ॥ सो हमसों कहिये ॥ हमारे सुनिवेकी बहुत इच्छा है ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ तब श्रीकृष्ण कहत है ॥ कै सुनो हो राजा याके सुनैते बड़ो धर्म है ॥ सब पापिनते छूटत है ॥ अरु भक्ती मुक्ती की दाता है ॥ अरु याको नाम जोगिनी है ॥ ताकी तुम कथा सुनो ॥ अलकापुरी नाम एक नगर हतो ॥ तहां को राजा श्रीमहादेव को उपासी कुबेर हतो ॥ अरु वा राजा के पुत्र हतो ॥ ता को नाम हेममाली हतो ॥ ताकी महारूपवंत अस्त्री हती ॥ ताके अस्त्रेह सो पंग्यो रहे ॥ ता अस्त्री को नाम विसाला छी हतो ॥ वा के रसवसी भयो ॥ सु कुवर को राजा की सेवा भूलि गई ॥ अरु और सकल काज बिसारि के ॥ वाही सो जीउ बांध्यो ॥ सो वा राजा को नाम कुवेरु हतो ॥ सो भरि दुपहर श्रीमहादेव की पूजा को गयो ॥ अरु वा राजा को बेटा अरु वा राजा को बेटा न जाई ॥ पुहप्यो ऊहां न पुहच्यो ॥ तब वा राजा ने छरीदार पठायो ॥ कुवर के लिवाइवे को ॥ पुनि छरीदार के साथ जाई षबर करी ॥ तब कुवर वह अपने भीतर मगन भयो ॥ को ठाकुर तभयो ॥ तब वा छरीदार के साथ सपरे ॥ वा राजा लषा जाई प

ग्या०॥ ह्वैयो॥ तब राजा दुष पाइ कै स्राप दई॥ अरु कही कै
८५॥ तुम राछस होउ॥ अरु तेरी देह बिगरि जाउ॥ तुम हम
मारी आग्या कबहु न मानी॥ तब यह सुनत ही कुबे
र सुराछित होइ गिरि परो॥ तब गिरत ही वह राछस
की देह भयो॥ तब न तो वाको घामु सुहाइ॥ अरु ना
छाह रोसु हाइ॥ अरु वा की नींद भूष सब गइ पै व
हु परमेस्वर को भरातु आइ॥ सो वहु सुमिरनु भजनु
अपने मन मह करिबो करै॥ तब वहु भरमतु॥ मारकंडे
वु रषी स्वर के आस्रम हि गयो सु वे मारकंडेवु के से है
जु॥ जु ब लगि ब्राह्मा के आठ दिन है है॥ तब लगु उनकी
आर्बल है है॥ दृरि भये नमस्कारे करै॥ तब यह कुबर
देषि कै॥ श्री मारकंडे जी को दया भई॥ तब पूछो कै
तुम को हो॥ तब कुबर कही कै॥ मै राजा को चाकर हों
अरु मेरो नाम माली है॥ तब अपनो स्राप को ब्यो
रो कह्यो॥ अरु यह कही कै मेरो भाग्य उदै भयो॥
जो तुम्हारो दरसनु भयो॥ ताते जेव उहै परा उप
गार करत है॥ सो अब हम कहु उपदेसु बतावो॥ जा
ते हमारी सुध गति होइ॥ श्री मारकंडे उवाच॥ तब
मारकंडेवजु कहत है॥ कै तुम असाढ की कृस्न प
ष की॥ एकादसी जोगिनी नाम ताको तुम उपास

करो॥ विधिसों या व्रतके करेतें तुम्हारी सुष्प गतिहू है॥ सो कुंवर जवही यह व्रत करो। तव ही दिवि देहिभ ई॥ तव अपने घरहि सुषु पाईके आयो॥ या व्रतके प्रताप ते घरही आयो॥ तव तें अपने पिताकी सेवा में रहेन लग्यो॥ सो या व्रत को औसो प्रताप है॥ सो य ह कथा श्री कृष्ण जू राजा जुधिष्ठिर सों कहत है॥ के सु नों हो राजा जे प्रानी यह कथा के है सुनें है॥ तिनिको व्र तके करके को फलहू है॥ यामें कछु संसो नाही॥ इति श्री पद्मपुराने एकादसी महात्म्ये श्रीकृष्ण जुधिष्ठि र संवादे पंचदसमो अध्याय॥ १५॥ श्री युधिष्ठि र उवाच॥ तव राजा जुधिष्ठिर पूछत है॥ कि अहो श्री गोविंद जु असाढ के सुक्लपक्ष की एकादसा को कहा नाम है॥ अरु कहा फल है॥ अरु कौन भांति व्र त की विधि है॥ सो हम सों कहिजे॥ तव श्री गोविंद जू कहत है॥ के याको नाम कामदा है॥ सो सकल कामना की दाता है॥ अरु जो पातिक होत है॥ ते या व्रत के करेते देहमें नाही रहत है॥ ताते मोक्ष को दा ता है॥ औसो और व्रत नाही है॥ अरु ब्रह्महत्या आ दि दैजे पातिक होत है॥ ते या व्रत के करें नाही रहत है॥ तव राजा पूछत है॥ के अहो कृष्ण जू एकु हमें वडो

ग्वा० ॥ संसो है ॥ सो आपुहमारी निसा करि कहिं जे ॥ क्रिचा-
९९ ॥ रिमासराजा बलि के द्वार जाई रहत हो ॥ सो तुमकहकौ
नउं पाई जो ततभए हे ॥ अरु तुमचारिमासपाताल
लोकजाइ रहत हो ॥ तव संसारके प्रानी कौनको ध्या
नकरै हे ॥ अरु कौनकी पूजाकरत हैं ॥ श्रीभगवानोवा
च ॥ तव श्रीकृश्नजू कहत है ॥ के सुनों हो राजा ॥ एक पुरा-
तनम कथा हमतुमसौं कहत हो ॥ जाते तुमकौं कछु
संसौं ना रहे सो तुमसुनहु ॥ त्रेता युगविषे एक ऐसो
राजा वलि भयो तिहि ऐसो जग्य करो के मैं इंद्र लोक
लेउं ॥ तव ऐसो जग्य करन लागो ॥ जो मेरो आसनु
टरन लागो तव हम विचारु करो ॥ के इंद्र को हमारो
दयो राजु आई ॥ तिहि कौ वलि लयो चाहत हैं ॥ तव ह
म वावन ॥ रूप धरिके वलि सौं तीन पेंउ धरती मागी
॥ सो जब ही पेंउ संकल्पि तुके ॥ तव हमारो देह व-
ढे ॥ सु ऐसो देह बढी जु ॥ धरती में हमारे पाव रहे ॥
अरु भुवलोक मैं मारी जाघे लागी ॥ अरु सुर्गलो
कमें करि हा भयो ॥ अरु पेटम हादेवके लोक लो भ
भयो ॥ अरु जमके लोक लो हिरदौ भयो ॥ अरु त
पके लोक लगि कंठ भयो ॥ अरु सात ऐ लोक लगी
मुष भयो ॥ सो ओर लोक सब नीचे भए ॥ तव सव म

यो अढाई पैड भई॥ तब आधे पैड कौं राजा बलि अ
पनी पीठ दई॥ तब हम राजा बलि पर प्रसंन भए॥ पुनि
नि पाताल लोक कौं राज दियो॥ पुनि हम यह कही
के बर दान मागियो सो हम देहें॥ श्री राजा बलि उवा
च॥ तब राजा बलि कहि के अहो भगति बछल जु
तुम हम सौं प्रसंन भए हौ॥ तौ च्यारि महिना चातुर
मास हमारे माये पर रहौ॥ ताते सुनौ हो राजा जुधि
ष्टिर यह बर दान ते पाताल रहत है॥ अरु हमारे हि
वे कि कथा सुनहो॥ आसाढ के सुक्ल पक्ष की एकाद
सी ते॥ एक कला धरि के॥ राजा बलि ल घार हत है॥ अ
रु एक कला छीर समुद्र मे रहत हे॥ जौ लगि कार्तिक
की एकादसी कौ दिन आवत है॥ ताते जे पुनीत नर है
॥ ते या ब्रत कौ नाही छाउत है॥ सो पापन के हरि बेक
हा॥ यह ब्रत ते और ब्रतु नाही॥ अब पूजा की विधि सं
षचक्र गदा पदम सहित॥ श्री परमेश्वर जी की प्रति
मा पूजे॥ पुनि राति के जागरनु करे॥ अरु बहुत स
धा सों पूजे॥ तिनि प्रानननि सो श्री गोविंद जु महा सं
तुष्ट होत है॥ अरु तिनि कह भगति मुकति सा हेगई
होत है॥ सो या ब्रत को असो प्रतापु है॥ अरु असो फ
ल है॥ अरु जे प्रानी या कथा नी की करि के कहै अरु
सुनै है॥ तिन के कुल कौ अंतु नाही॥ अरु या महिमा

ग्या० ॥ कौंन पर कहि जाती हे ॥ ताते जेप्रानी चेतनिहै ॥ ते
९७ ॥ याह कथा को कहिवो सुनिवो नाही छाडतहे ॥ ति निते
वुँठो ओरना ही ॥ ईतिश्री पद्मपुराणे एकादसी महा
त्म्ये श्री कृस्नराजा युधिष्ठिर संवादे आसाढ के शुक्ल
पछ की एकादशी देवसतनी नाम षोडसमो अध्या
य ॥ १६ ॥ ॥ ❂ ॥ राजा युधिष्ठिर उवाच ॥ तब राजा पू
छतहैं कै अहो श्री गोविंद जू ॥ सावन के कृस्न पछि की
एकादसी को कहा नाम है ॥ अरु कहा फलहे ॥ सो सब ह
म सो कहियै ॥ श्री भगवानउवाच ॥ तब श्री भगवा
न जी कहतहे ॥ कै सुनो हो राजा यह कथा नारदजी ब्र
ह्माजी को ह पूछी थी सो हम तुम सो कहत है ॥ जा ते
कष्ट संसैा नरे है ॥ या को कामिका नाम है ॥ अरु सं
षचक्र गदा पद्म सहित श्री परमेस्वर जू की प्रति मां हो
ई ॥ ता का पूजा सरधा करिकरे ॥ अब ता को फलु कहत है
॥ सुना ता ते सकल पाति क दुरि होत है ॥ अब ब्रत के फ
लु कहत है ॥ अरु जो फलु गया पिंड करे ते होत है ॥
॥ अरु जो फलु पुस्कर आचमन करे ते होत है ॥ अरु
जो फलु कुरुक्षेत्र के सूर्ज परबि के दान के दयै सो होत
है ॥ अरु जो फलु गोदावरी सिंधस्त के करे फलु होतु है
अरु जो फलु विती पुत्त के दान दये होतु है ॥ औ र फल
सकल दया करते होतु है ॥ अरु जो फलु गायै अरु सो

सो गौदयेहोतुहै॥ सो फल एक एकादसीकेकरे होतुहै॥ व्रतकीविधिसुनहु॥ तुलसीकीमंजरीचढावै वराबरि॥ नवजागुरनकरै॥ तिनिकीदेहकहूजमकेदूतनजीकनाहीआवत॥ अरु फेरिकेउनमवासअवतारपावै॥ जेतुलसीकेदलश्रीगोविंदजुकोंचढावतहैं तिनिकेनजीकपापनआवैहै॥ जैसैपुरइनिपानीमेंरहतिहै॥ अरुपानीसोलिपतनाहीं॥ तैसेव्रतकेमैतुलसीके ८ दलचढावतहै॥ तिनिकोंपापभिदतनहिंहै॥ अरुजोफूलएकभारसोंनोसेहुहै॥ अरुचारिभारिरूपोदयेहोतुहै॥ सोफलतुलसीकेपत्रचढायेहोतुहै॥ जेभावकरितुलसीकीमंजरीचढावतहै॥ तिनिकेबहुतजनमकेपापदूरिहोतहै॥ अरुजेदयाधरतहै॥ तिनिकेपित्रबहुतदिनसुर्गलोकरहतहै॥ अरुजेब्रह्मदोषआदिदेजेबडेबडेदोषहै॥ तेयाव्रततैविलायजातहै॥ इहिभांतिश्रीगोविंदजूराजासोंकहतहैं॥ केजेप्रानीयहकथाकेहैसुनिहै॥ तिनकोंअनेगदानकोफलुहुहै॥ इतिश्रीपद्मपुराणेएकादसीमाहात्म्येश्रीकृष्नराजायुधिष्ठिरसंवादेसावनकेकृष्नपक्षकीएकादसीकामिनीनामसप्तदसमोअध्याय॥ १७॥ युधिष्ठिरउ॰

॥ग्या०॥ वाच॥ बहुरि राजा युधिष्ठिर पूछत है॥ कि अहो दे
॥१८॥ वाधिदेव जू॥ सावन के सुकल पक्ष की एकादसी
को कहा नाम है॥ अरु: कहा फल है॥ सो कृपा करह
म सो कहिये॥ तब श्री परमेस्वर जू कहत है॥ के सुनो
हो राजा एक कथा हम पाछिली है मैं तुम सो कह
त है॥ सो तुम चित्त सो सुनो॥ द्वापर की आदि विषै म
हिष्मती नाम पुरी जो तहतो॥ सो बहु राजा अपनी
प्रजै भली भाति सो पालतु है॥ अरु वाके पुत्र कोसि
हु न होतु है॥ अरु जे अनेग उपाई है॥ ते राजा सब क
रे पै सब निर्फल भए॥ तब राजा अपनी प्रजा बुला
ई के सब सो कही॥ कि मै तो संसार मै आइ कै कछू
पाप ना ही करौ॥ अरु अधर्म नहि करौ॥ अरु ब्राह्मण
को अंस नहीं लीनो॥ अरु चक्री को धान नहीं ली
नो॥ अरु मै अपनै जान कबहु काहू दुष न दीयो
॥ अरु मै काहू को मान षंड ना नाही करी॥ अरु जो
गुनी लोग है॥ अरु: जो गुनी लोग है तिनि की मै प
जा करी है॥ अरु जिन दषी होते तिनि पाछि देषो॥ तो मा
हि दंड लगावो॥ तब यह बात कहि के राज मंत्रिनि
सौपि के आपुनु तपस्या करन गए॥ तहा जाई के ए
क बडो ऋषी स्वरु देष्यो॥ जाके तप को तेज सूर्ज के स

तापके समान है ॥ ताके निकट राजा गए ॥ सो महात्म
रितु आनंद बुजो इंदेष्यो ॥ सोई इंद्रादिक आदि दैके सु
अवलंभु नाहीं करतु ॥ तिनि हि अपनी इंद्री बसि क
रीहै ॥ आपुनु इंद्रीनि के बस नाहीं ॥ अरु क्रोधु अहं
कार काम मोह छांडे हे ॥ अरु सर्वेस्वर मनि को ॥ तत
हु जानतु है ॥ अरु याकी आवलिवु ऊहती ॥ ता कहं
राजा गना मस्कार तन भए ॥ जब राक कल्प भरिहा तु है
॥ तब वाकौ रोम एक टूटि आतहै ॥ अरु वार मोख
र कौ लोमस नाम है ॥ तहा वाकी प्रेम कुटी विराज
मान है ॥ तब राजा दंडवत करि ॥ हाथ जोरि के आगे
जाई ठाढे भए ॥ तब वा रखी स्वर पूछी कि तुम कोहो
॥ कौन कार्ज कौ आए हौ सो कहौ ॥ तब राजा ने नमः
स्कार करकें कही हो मुनी स्वर जी मेरे संतान न हीं है
॥ ता मिमित्त मैं ने राज छोड दीनो है ॥ अब मै वन वि
षैं आयो सो तुम्हारे दरसन पाए ॥ तुम बडे हो ॥ ता
सैं तुम्हारे बचन करकें मेरो मनोरथ पूर्ण होइगो ॥
तासे कृपा करकें हम कौं उपदेस दीजै ॥ तासे हमा
रौ मनोरथ पूरन होई ॥ अरु हमारे पुत्र होइ ॥ तब लो
मस रिषी कहत है कै तुम पूर्व जन्म के महाजन हो ॥
जब तुम दूते चोर गाव भटकैके वंजब पार करकें लाव

।पा०। तथेतव वालगोपालोंकों अंनमिलतहतौं ।। सो एक
९९ ।। दिन अैंसौं भयौं जुजेठ के सुकलपक्ष की एकादसी ह
ती ।। सो उहां गाव के गेउ उँकु वाहतौं ।। तहां तु मनें गठिया
उतारी अरु पानी पीवन लगे ।। जब पाणी पानी पी लि
यौं तहां एक कुंउ लल सौं भरौं हयौं गउके पीवेकों ज
लभरौयौं ।। सो तुमनें उलीच डारौं ।। ताही समें एक गा
उ तुरत की ब्यानी हती ।। सो वा आवन भई जल की आ
स्याकरकैं ।। ताके देषत पानी उलीचकें डारदीनों ।।
सो वा गेया जल के निमित्त आई हती ।। सो वा आन
कें देषें तौं कुंउ रीतौ परौं है ।। तब वाकी आस्या छूट
गई ।। ताही समैं गेया वछा होई मरगए ।। सो वा दोष
करकैं राजा तेरें पुत्र नहि होत हैं ।। अरु तुमनें जो राज
पायो है सो तीसरे जन्म की तपस्या सें पायो है ।। ताकों
अव यह उपदेस हैं कें ।। जब आवन के शुकल पक्ष
की एकादसी आवें ।। ताकों व्रत तुम विधसों करो ।। ता
कों नाम पुत्रदा है ।। पुत्रकी देनहारी है ।। या व्रत के करे
सें कछु दोष नाही रहत है ।। तव यह व्रत रषीस्वर
नें वताया ।। कें सुनौ हो राजा या व्रत के करसें तुम्हा
रैं पुत्र होयगों ।। यह सत्त करकें जानियों ।। तब राजा
यह बात सुनके अपनें घर आयौं ।। तव द्वादसी के

द्रिनासवमजा अस्नानकरकेसवनैंमिलकैं व्रत
कौंफलराजाकौंदीनौं॥ सोयाव्रतकेप्रतापसेंराजाकैं
पुत्रभयौ॥ तासेंयाकौंनामपुत्रदेनीहै॥ सोयौफल
लोमसनामरषीस्वरनेंकह्योहैं॥ तासेंजोयाव्रतकें
करहैंतिनकोंवउोफलहोतहै॥ अरुजोयाकथाकह
तहैंअरुसुनतहैं॥ तिनकोंव्रतकेरकौंफलहूहैं॥ इति
श्रीपद्मपुराणेएकादशीमहात्म्येश्रीकृस्नयुधिष्टि
रसंवादेश्रावनकेसुकलपक्षकीएकादसीपुत्रदाना
म अष्टादशोध्याय॥ १८॥ फिरराजाजुधिष्टिरपूछ
तहैं॥ अहोश्रीकृस्नजी॥ भादोंकेकृस्नपक्षकीएका
दसीकोकहानामहै॥ अरुकहाफलहैं॥ सोहमसों
कहियें॥ तवश्रीकृस्नजूकहतहैंकेसुनौहोराजा॥
याएकादसीकौंअजयानामहै॥ अरुयाव्रतकेदि
नश्रामोदरजीकीपूजाकरतहैं॥ याव्रतकेकरसेंदेह
मेंकेपापदूरहोतहैं॥ ताकीकथातुमहमपरसुनौ॥ प्र
थमराजाहरिचंदभए॥ तिनकेराजमेंकोईदुषीद
लिद्रीनहतौ॥ ऐसोचक्रवेंराजाहुतौ॥ तिनकोंदईवक
हुनयौ॥ तवराजाकौंएकदिनसपनौंभएा॥ सोदे
गासेंरघआसपासआएतिननेंअवानकआई
केंसहरमारौं॥ अरुबंदकरी॥ तवराजाअकेलौंअप
नोंवरनाछिपाईकेंभगौं॥ सोतुरकआनपरे॥ सोग

ष्पा० उवे ल्लैगए ॥ तिननुरक न परसैं वस होके छुदें कें रा-
१०० नी कों ल्लै गयो महाजनन ॥ सो वा महाजनन कों टहल क
रवावैं ॥ सो राजा अरु रानी एक ही नग्रीमें रहवू करें
॥ सो यह न जानें के कों न हां रहत हे ॥ तव राजा वस हो रा
नी सैं कही कें ॥ जव कोउ मुरदा जरन आवें ॥ सो वासों
नें कोट का लैंनों तव जरा वन दैं नौ ॥ तव वास हो रा-
नी कों राजानें उहां राखें ॥ तव एक दिना राजा हरच
द कों वेटा मरों ॥ तव राजा हरचंद की रानी मरें पुत्र
कों ल्लेंकें मृतक घाटपैं तहां राजा के दरसन भए ॥ त
व परस्पर अपनें अपनें रहिवे की षवर कहे है ॥ ता
पीछें वा कुवर की क्रिया करन लगी ॥ तव राजानें का-
हि या कौ कर दे यगी तव या की क्रिया करेगी तव रा
नीनें कही कें महाराज मेरे पास तो कछु देवें कों न
हिं ॥ तव रानी नें अपनें पहरवे कौ चीर आधौ फार-
दीनों ॥ तव कुवर की क्रीया करी ॥ तहां राजा सें अरु
रानी सें करार भयों थो ॥ सो स्वामकारज कों धर्म पा
लों ॥ तासैं अपनी अस्त्री सों कर लीनों ॥ तव अ
स्त्री की विदा कर दीनी सो अपनें ठीकानें पहुची
॥ अरु राजा चार पर वेठ के सोग करन लगों ॥ ता
समें गोतम नाम रषीस्वर अस्तान कों आए थे ॥
तिननें राजा हरचंद देषों ॥ तव राजानें गोतम रिषी

सौं नमस्कार कियौ ॥ अरु अपनी सब बार्त्ता कही ॥ तब
गोतम नाम रिषनैं कही राजासौं ॥ कैं तुम्हारे बडे भाग्य हैं
जो हमसौं भेंट भई ॥ तासैं अब तुम भादौं के कृस्नपक्ष
की एकादसी जाइ कैं करौ ॥ जाकौं अजया नाम है ॥ ताकौ
व्रत तुम करौ ॥ तौ तुम्हारे संपूर्ण जो दुष हैं सो सब नास
होइ ॥ तब राजानैं कही कैं एकादसी कब है ॥ तब रषीस्व
र कही कैं एकादसी कैं सात दिन हैं ॥ यह उपदेस बता
ई कैं गोतम रिषी अपनें आश्रमकौं जात भए ॥ तब
राजानैं एकादसीकौ व्रत कियौ ॥ ता व्रत के प्रताप सें ब
हुउमकौं दया उपजी ॥ कैं राजा हरिचंद बडो धर्मात्मा
है ॥ अब याकौं यही नग्रीकौ राज दीजै ॥ तब रानीकौं रा
जासें मिलाप कराइ कैं लैं आए ॥ तासमैं उत्तम च
री साध कैं सैंन साथ लैं कैं राजाकौं राज पै बैठारे ॥
सो या व्रतकौ ऐसो प्रताप है ॥ सो या व्रतके प्रताप सें
राजा सब नग्र समेत बैकुंठ लोककौं जात भए ॥ जो
प्रानी या व्रतकौ करेंगे तिनकौं या भांत फल होय
गो ॥ अरु जे प्रानी या कथा कहे हैं अरु जे सुनें हैं ॥ ते
प्रानी मनवांछत फल पावेंगे ॥ इति श्रीपद्मपुराणे
एकादसी माहात्म्ये श्रीकृस्न जुधिष्ठिर संवादे भा
दों के कृस्नपक्ष की एकादसी अजया नाम एको नविं ॥

ग्या०
१०१

सोध्यायः॥ २४॥ फिर राजा युधिष्ठिर पूछत हैं। अहो श्री
कृष्णजी भादों के सुक्लपक्ष की एकादसी कौ कहां नाम है
अरु कहा फल है सो हमसों कहियें॥ तब श्री कृष्णजी॥
कहत हैं के सुनौं हो राजा॥ यह कथा नारद मुनी नै ब्रह्मा
जी कौं पूछी हती॥ सो हम तुमसौं कहत हैं के या एकादसी
कौं पद्मनि नाम हैं॥ जे भाषी श्री परमेस्वरजी नें अर्थ र
हत हैं॥ ताकी कथा तुम सुनौं तैसी कथा पाछे भई है॥ मा
नधाता नाम एक राजा हतौ॥ सो महा सुधर्मी हतौ तासे
॥राज में कोउ दुषि न हतौ॥ अरु काहू पें अधर्म कौ दंड न
लेत हतौ॥ अरु वा के राज में प्रजा कौं काहू भांत दुष न द
त हतौ सो ता राजा के देस में तीन वरस लौं मेह न वरसौ
सो राजा नें अनेक जतन करें॥ अरु सर्व प्रजा सें कही के
तुम पुन कछु उपाव करौं॥ तासे देस में मेंह वरसै॥ तब
राजा नें कहि कें मेनें काहू प्रजा कौं दुष न दीयौ॥ पर
॥यह कहां कारन है॥ जो हमारे देस में मेह नहीं वरसे॥
या प्रकार कौं वचन कहि कें राजा उद्यान में जात भयो॥ त
हां जाइ कें देषतौ॥ आंगिरिष के दरसन भए॥ तब राजा
नें दंडवत नमस्कार कर कें ठाढे भए॥ तब रषीस्वर नें रा
जा कौं वैठार कें पूछी॥ तुम कौन अर्थ आए हो तब
राजा नें कही कें अहो मुनीस्वरजी॥ मैंनें अपनी सुरत

मैंकभीकछुधर्मनहिकरो सोअवतीनवरससैंहमारेदे
समैंमेहनहिवरसैं सोमेरीप्रजावहुतदुषीहैं तासेंअ
वहमकौंउपदेसदीजें जाउपदेससैंहमारेदेसमैंमेह
वरसे तवरषीस्वरनैंध्यानधरकेंकही हेराजाकोई
कसहुजोहैंसोव्राह्मनकौंरूपधरकेंतपस्याकरतहैं ता
कौंजाईकैंतुममारौं तवतुम्हारेदेसमैंमेहवरसैगो।
तवराजानैंकहीकें अहोमुनीस्वरजी मोपैतोगलच
लौजातकोउमारोनजैहैं अरुवातपस्याकरतहैं ता
समैंवाकोंकेसेमारौं तासेहंमुनीस्वरजीअवयाउपदे
सदीजें तासेंकोउमारौनजाई अरुमेघवरसैं तासों
उपदेसदीजें तवआंगिरिषऋषिकहिकें अवतुमजाई
कैंभादोंकैंसुकलपक्षकीएकादसीकौंपद्मनीनामहै
ताकौव्रततुमजाईकेंकरौ तौतुम्हारेदेसमैंमेघवरसै
गौं यासेऔरउपावनही तवयावातसुनकेंवहुतसु
षपायौं तवरषीस्वरसैंदंडवतकरकें राजाअप
नेघरआवतभए तहांआईकेंसंजमसौंव्रतकरत
भए तवयाव्रतकेंप्रतापसैंमेघवरसौं सवदेसमैंव
डोआनंदभयौं सोदेषौंराजायाव्रतकौंऐसोंप्रताप
हैं अरुजेंप्रानीयाकथाकहेहैं अरुसुनेंहैं तिनकौं
भीवहुतपुन्यहोतहैं इतिश्रीपद्मपुराणेएकादशी

पा० ॥ महात्मने श्रीकृष्णजुधिष्ठिरसंवादे भादौके सुकलपक्ष
२०२ ॥ की एकादसी पद्मनी नाम बीसमोध्यायः ॥ २० ॥ युधि
ष्ठिरउवाच ॥ तब फिर राजा जुधिष्ठिर पूछत हैं ॥ कें
अहो श्रीकृष्णजी आश्विन कें कृष्णपक्ष की एकादसी
कौं कहां नाम है ॥ अरु कहा फल है ॥ सो हमसों कहियें ॥
अरु कौन सं देवता की पूजा करत हैं ॥ सो हमसौं कृपा ॥
करकै कहियें ॥ तब श्रीकृष्णचंद्र कहत हैं ॥ कें सुनौं हौं
राजा या एकादसी कौं इंद्रा नाम है ॥ या बडे अधर्मी जीव
जो हैं सो या व्रत के करें सें ॥ तिनकी भी सुगत होत है ॥
या सुगत की देन हारी है ॥ ताकी कथा हम तुमसौं कह
त हैं सो तुम सुनौं ॥ महिषावती नाम एक नग्री हती ॥
तहां के राजा कौं नाम इंद्रसेन नाम हतौ सो पुत्र क
लित्र सहित पूरौं हतौ ॥ अरु विष्णु भक्त पुरौं हतौ ॥ सो
एक समें यह अपने महल भीतर हतो ॥ तहां नारद
मुनि आनके प्राप्त भए ॥ तब राजा ने हाथ जोर के दं
डवत करी ॥ अरु चरन धोवे उत्तम आसन पै बैठारे
॥ अरु धूपदीप सें हित नारद मुनी की पूजा करी ॥ त
ब मुनि तहां इकेबे दे ॥ तब नारदमुनी ने कही ॥ कें हम
तुमकौं एक उपदेस सुनावे कौं आये हैं ॥ सो तुम सुनौं
॥ हम एक समें ब्रह्मलोक गए थे ॥ तहां जमलोक सैं ग

ए॥ तहा तुम्हारे पितासों दरसन भए॥ तिनें हम सों कही कैं तुम हमारे पुत्रसों कहियों॥ कैं तुम्हारे पिता जमदूतों कें हाथ परे हैं॥ सो हमारी कुगत भई हैं॥ सो तुम जातही कहियों॥ कैं तुम और धर्म सब छाड़ कें॥ आसन के कृष्न पक्ष की एकादसी कौ व्रत करौं॥ सो वो एकादसी को व्रत करकें॥ ताकौ फल हम कों दीजौं तब हमारी सुगत्त हूहै॥ या एकादसी कौ इंद्रा नाम है॥ या भांत तुम्हारे पिता नें मोसों समाचार कहे हैं॥ तब राजा ने कही कें जैसो व्रत बतायो हैं तेसी विध व्रत की बताइयें॥ तब व्रत की विध मुनीस्वर बतावत हैं कैं प्रथम दसमी के दिना अस्नान करें॥ अरु एकेवार भोजन करैं॥ और एकादसी कें दिन नदी पर अस्नान करें॥ ता दिनो दातौंन सें दांतन घिसें॥ निराहर व्रत करें अरु रात्र कौं सालग्राम विस्तारें॥ तहां पिंडदान करें॥ तहां गऊ दान विधसों करें॥ अरु रात्र कौ जागरन करें॥ फिर द्वादसी के दिन अस्नान करें॥ तब एकादसी कौ फल पित्रन कौं देई॥ तापीछें आप भोजन करें॥ या प्रकार की बातें कहि कें नारद मुनि अपनें लोक कौं जात भए॥ ताही समें राजा नें नगर में कही कें॥ सब नगर कें जीव मात्र दस

ग्या० ॥ मीकों संजम करकें ॥ एकादसी कों व्रत करों ॥ सो स
१०३ ॥ वु नगर के वासी येतिननें विधसों व्रत कियों ॥ नाव
त कों फल दुदसी के दिन राजा कें दियों ॥ तव राजा
के पिता की सुगत भई ॥ दिव्य विमान पर वैठार कें
वेंकुंठ लोक कों लेगए ॥ तव देवतोनें आगें होकें
लीनें ॥ तहा फूलोंकी वर्षा भई राजा पर ॥ तव या
धर्म के प्रताप सें राजा नें वहुत दिन राज करों ॥ ता
पीछें राजा नें पुत्र कों राज दियों ॥ आप देहांत होकें
वेकुंठ लोक कों गए ॥ सो या व्रत कों ऐसो प्रताप
हैं ॥ जो या व्रत कों करें हैं ॥ सो भुक्त मुक्त पावें हैं ॥ औ
रू जो या कथा कहें है ॥ औरू सुनें हें ॥ ते प्राणी अव
स कें मुक्त पाई हैं ॥ या में संसों नाहीं ॥ इति श्री प
द्मपुराणे एकादसी माहात्म्ये श्रीकृष्ण जुधिष्टि
र संवादे कुवार कें कृष्न पक्ष की एकादसी इंदिरा
नाम इकईसमो अध्याय ॥ २१ ॥ फिर राजा जुधि
ष्ठिर पूछत हैं कें अहो श्री कृष्ण जी ॥ कुवार के सु
कल पक्ष की एकादसी कों कहा नाम हें ॥ औरू क
हा फल हें ॥ सो हम सों कहिये ॥ तव श्री कृष्ण जी क
हत हें ॥ कें [illegible] राजा या एकादसी कों नाम अं
कुस हें ॥ औरू [illegible] व्रत कें दिन ॥ श्री पद्मनाभ जो भ
गवान हें तिन की पूजा करत हें ॥ जो फल नहु नार वर

सी तपस्या करैं सें होत है ॥ अरु जे अन्नछादन कौं आद
दैं जे संपूर्ण होय है ॥ ते या व्रत के प्रताप सें सब नास
पावैं हैं ॥ अरु जैं फल अनेक तीर्थ करें सें होत है ॥ अ
रु या व्रत कर्त्ता कौं जम के दूतों की त्रास नहीं होत ॥ अ
रु जे निंदा के करनवारे हैं ते पुन या व्रत के करें सें
पातक सें छूटैं हैं ॥ सो या व्रत समान त्रैलोक मैं औ
र व्रत नाहीं ॥ अरु या व्रत के करें सें हजार जग्य करें
कौं फल होत है ॥ अरु जो फल गया गोदावरी गए सें
होत है ॥ सो फल या व्रत के करें सैं होत है ॥ अरु दस
पिढी माता पक्ष की अरु दस पिता पक्ष कौं ॥ अरु
दस अस्त्री पक्ष कौं ॥ अरु दस पुरषा देस के राजा
के ॥ इतनैं जन या व्रत के प्रताप सें तिरत हैं ॥ इतनें
कौ सुगत होत है ॥ अरु या व्रत के करनें जब देह छू
टत है ॥ तब चतुर्भुज धरकें श्री कृष्ण के सी देह पाइ
कैं ॥ दिव्य विमान पर बैठ कें वैकुंठ कौं जात है ॥ सो
या व्रत कौं ऐसो प्रताप है ॥ अरु या व्रत के दिन जि
तनो सक्त होइ नितनो दान करें ॥ भूमि दान देइ तिल
दान देइ वस्त्र दान देइ ॥ इतनें दान कहैं तामें अप
नो सक्त मूजब देई ॥ अरु जे प्र[illegible] पापांकुसा
कौ व्रत करो है ॥ तिन कौं औरक[illegible]रनों नहीं है ॥
तासैं जे प्रानी या व्रत कौं करैं है ते वैकुंठ कौं प्राप्त है

एका०॥ तहैं॥ अरु जे या व्रतकौ महिमा जानत हैं॥ ते प्रानी
१०४॥ याकौं करत है॥ अरु जे प्रानी याकथा कहै है अरु सुनें
है॥ तौ प्रांनी रत कौ फल पावैगें॥ इति श्री पद्मपुराणे
एकादसी महात्म नें श्रीकृष्णयुधिष्ठिर संवादे कुवा
र के सुक्लपक्ष की एकादसी अंकुसा नाम बाईसमों
ध्याय:॥ २२॥ युधिष्ठिर उवाच॥ फिर राजा जुधिष्ठिर
पूछत हैं॥ अहो श्रीकृष्णचंदजी तुम्हारे जो मधुर बच
न हैं॥ तिनकौं सुनकें हमारो मन त्रपत नाहीं हो
यै॥ हम कैं तुम्हारे बचन सुनवे की बडी इच्छा है॥ सो
कातक के कृष्णपक्ष की एकादसी कौ कहा नाम
हैं अरु कहा फल हैं॥ सो हमसें कहियें॥ तब श्री
कृष्णचंद कहत हैं॥ हे राजा युधिष्ठिर यह एका
दसी कौ व्रत सकल प्रजा सहित॥ राजा मुच
कुंद नें कियो थौ॥ तहां व्रत के दिना राजा कौ स
गौ राजा के पास आयौ॥ सो वो जब डेरा कौं ग
यौ तब अपनी अस्त्री सौं कही कें॥ सो पर भूष
न साधी जै हैं॥ सो हम कौ न भात व्रत करेंगें॥
याहि भात बो व्रत करो वानें॥ सो वा कौ भूषन
सधी सो [illegible] न हो कें॥ द्वादसी कें दिन प्रान
मुकत भए॥ तब वाकौं विमान परबैठार कर
लै गए॥ तहां देवपुरी कौ राजा दियो॥ सो वो महा

सुषसौं रहन लग्यौ ॥ तहां जराव सहित कंचन कें
मंदिर हैं ॥ अनेक नग लगे हैं सो दीपक समान दमकें
हैं ॥ नाना प्रकार के नग लगे हैं ॥ तहां सुवर्ण के सिं
घासन रतनौं सैं जरे तहैं ॥ तहां राजा कौं वैठारे
॥ अरु नाना प्रकार के आभूषन वस्त्र ॥ अरु माथे
पर मुकट अरु कानन सैं मकराक्रत कुंडल विरा
जत हैं ॥ तहां गण गंधर्व अपछरानि नृत्य करत हैं
॥ सो अैसें मैं सो सुसनाम ब्राह्मन वाकौ सुसरा
र कौं हतौ ॥ सो भ्रमन भ्रमत वहां जाइ पहुंचौ ॥ त
हां वह ब्राह्मन कौं राजा नैं चीन्हौ ॥ अरु जब ब्राह्म
न नैं वा राजा कौं पहिचानौ ॥ तब अपने मन मैं
आश्चर्ज मान्यौ ॥ अरु मन मैं कही कै हमारी
भगनी कै राजा कौ सगौ है यह ॥ तब राजा नैं वा ब्राह्म
न कौं अपनैं पास वैठारे नयौं सतकार कर कें ॥
बडौ आनंद मानौ ॥ तहां मोति हीरा लाल भरकें
एक थार दीनौ ॥ वा ब्राह्मन कौं दछना दीनी ॥ अ
रु अपनें मित्र कौ ॥ तब वाकी अस्त्रीनें जनम
पाइकैं एकादसी कौं व्रत करौं यौ ॥ सो फल सब
अपनें पुरष कौं दयौं ॥ तब व[illegible]ह या व्रत के प्र
ताप सैं ॥ ध्रुव के समान कौं रा[illegible] करत भयौ ॥ सो
या व्रत कौ असौ प्रताप है ॥ अरु जे प्रानी या कौ

ग्या० ॥ याकूं कहै है ॥ अरु सुनै है ॥ ते प्रानी वैकुंठमें प्राप्त हूं है ॥ यामें
॥१०५॥ संसौ नाहीं ॥ इतिश्री पद्मपुराणे एकादसी महात्म्ये श्री
कृस्न संवादे युधिष्ठिर संवादे कातक के कृस्नपक्ष की
एकादसी ---- तेईसमोध्याय: ॥२३॥ फिर रा
जा युधिष्ठिर पूछत है कै अहो श्रीकृस्न जी ॥ कातक
के सुक्ल पक्ष की एकादसी को कहा नाम है ॥ अरु क
हा फल है ॥ सो हमसों कहिये ॥ तब श्रीकृस्न जी कह
त है ॥ या एकादसी को प्रबोधनी नाम है ॥ या व्रत के
करैसें सकल पाप दूर होत है ॥ सो याके समान और
व्रत नहीं ॥ यो व्रत भुक्ति मुक्ति को दाता है ॥ जैसें साग
र जो समुद्र कों आदि दै के सकल तीर्थ है ॥ तिन के
करैसें जितनो फल होत है ॥ अरु जे फल सहस्र
अश्वमेध जग्य करैसें होत है ॥ अरु जो फल राज
सी जग्य करैसें होत है ॥ जो फल अनेक वरस तप
स्या करैसें होत है ॥ सो इतनो फल एक एकादसी
के करैसें होत है ॥ अरु जे प्रानी व्रत करकै जागर
न करत है ॥ अरु अपनी सक्ति प्रवान दान करत है
॥ तिन के समान और प्रानी नहीं ॥ जे प्रानी विद्या
करकैं हीन [illegible] पकौं दुष देत है ॥ जे प्रानी गुरु सौं वा
द करत है ॥ [illegible] के संचत अरु संपत कभी न होई
॥ जो फल संपूर्ण पृथ्वी दान करैसें होत है ॥ सो इतनो

फल एक एकादसी के ब्रत करेसें होत हैं॥ जे प्रा
नी अपुनें मन में प्रीत करकें यह ब्रत कों करे हैं॥
अरु जे प्रानी श्री परमेस्वर जी कों ध्यान धरत
हैं॥ मनसा वाचा कर्मना करकें॥ तिन की महिमा
कों पे बरनी जाइ हैं॥ अरु जे प्रानी या कथा नी
की प्रकार सों कहत हैं॥ अरु सुनत हैं॥ ते संपूर्ण
म एकादसी कों फल पावत हैं॥ ते प्रानी मुक्त रूपी
हैं या में संसौं नहीं॥ इति श्री पद्मपुराणे एका
दसी महात्मे श्री कृस्न युधिष्ठिर संवादे का
र्तिक के सुक्लपक्ष की एकादसी प्रबोधनी ना
म चौबीसमो अध्याया:॥ २४॥ श्री जी य
द क्षर पद भ्रष्टं मात्रा हीनं तु यद् भवेत्॥ तत्सर्वं
क्षम्यतां देवी प्रसीद परमेस्वरं॥ १॥ मीती: का
र्तिक कृस्न पक्ष त्रतिया:॥ ३॥ रोजे सनीवार
संमद॥ १८२२॥ लिषि भेलसा मध्ये:॥ श्री रा
चंद्र जी के मंदिर में॥ हस्ताक्षर भीमसेन ब्रा
ह्मण॥ सनाढ वसीष्ट गोत्र:॥ पठनार्थं बा
बा सालग्राम दास को श्री [illegible] के सन
मुष फल पूर्वक: प्रमार्थ कर्तृ [illegible] बी:॥ श्री
भगवान साहाय करें॥ श्री रामजी:॥ :०: ॥

॥श्रीगणेशायनमः॥ अथअनंतव्रतकथालि
ष्यते॥ ॥ चौपई॥ गुरगनपतकेवंदौंपाई॥ सरस्व
तीदेवीसिरनांई॥ ध्यांनभवानीकोउरधरौं॥ कथा
अनंतदेवकीकरौं॥ १॥ जवपंडौवनवासहिगए॥
तहांदुषितततवहीतैंभए॥ जहांकृस्नकोसुमरनकी
यो॥ ताहीछिनप्रभुदरसनदियो॥ युधिष्ठिर उ
वाच॥ हमसवभैयनसहितदुषारे॥ दुषसमुद्रमा
झगहिडारे॥ काविधितिनतैंछूटनहोई॥ हमकों
कृस्नवतौसोई॥ श्रीभगवानुवाच॥ तुमअनंतव्र
तकरहौजवही॥ सवहीदुषतेंछुटौगेतबही॥ त्रिया
पुरषसिंसारजोहोई॥ सकलकांमनापूजैसोई॥
यहव्रतकौतुमकरहौजवहीं॥ तवदुषतैंछुटो
गेंतवही॥ रायजुधिष्टिरहरिसौंकहैं॥ कौंअनं
तहमकिहिविधिलहैं॥ परमात्मगविष्णुहैजोई
कैंधौंब्रंहसमुद्रकहुतौंही॥ कहैंअनंतदेवहम
आई॥ तिनकौंअंतनपायौजाई॥ रवितैंवारसा
तवरनए॥ तेसवहिहमहीनिरमए॥ दिनअरु
रातप्रमा[illegible]आई॥ तेहमहीसवरचेवनाई॥ प्र
थमीआ[illegible]रजवहोई॥ तवहमभारउतारेंसो
ई॥ धरअवतारदैत्यहममारे॥ सवदेवनकेका

जसवारे ॥ अनंतविष्णुकृष्णहसोई ॥ तेहमहीकों
जानतलोई ॥ ब्रंम्हरूपहोईअरूजरनैं ॥ करप्रतिपा
लविष्णुहोसनैं ॥ विश्वरूपमेरोहीआई ॥ राजासें
कहियोसमुझाई ॥ कालरूपमेरोहिमहा ॥ होतसिंघा
रतासतेंजहां ॥ हमहीब्रंम्हहमहीइंद्र ॥ अरुहमहि
हीसूरजचंद ॥ हमहीआइसप्तरिषिदेव ॥ समस
मुद्रबनस्पतिदेवा ॥ पर्वतनदीग्रछादिकछत्र ॥
अरुआकासआकासचरित्र ॥ जबअर्जुनकीनो
संदेह ॥ विश्वरूपतधरियोदेव ॥ राजाउवाच ॥
व्रतकीविधितुमदेउबताई ॥ कौंनभांतउपवास
कराई ॥ कौंनभांतरहियतुहेताहि ॥ कैसोफलउ
पवासहिआई ॥ अरुव्रतप्रकटकौनतेभयो ॥ रा
जाकृष्णदेवसुंपुछयो ॥ कहियेकथासहितविस्ता
रा ॥ जातेंजानेंसबसिंसारा ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥
हस्तनापुरनग्रबरनयों ॥ सुमंतनामब्राम्हणत
हांभयो ॥ वंसवसिष्टभयोधोसोई ॥ भ्रगुकंन्या
आहियोसोई ॥ दिक्षानामतासकोआई ॥ सेवा
पतकीकरेबनाई ॥ पुनवहगर्भहुतेंसोभई ॥ नाम
सुशीलाकन्याभई ॥ दिक्षाजबहाड़ोंहोगई ॥ तिहि
गजाईकालवसभई ॥ तबसुमंतफिरिकीनोब्याह

अनं०
१०७

विप्रसुताकौंल्यायौंताहूं॥ सोअतिकलहडुषकौंमू
ल॥ देइविप्रकाजं अतिसरल॥ धर्मटहलसुसीला
करैं॥ चौकचतेवररंगकेधरैं॥ कारेषीरेलालवनाइ
याविधषेलेंचित्तलगाइ॥ वडीभईतवदेषीवापता
कौंव्याहरचौंतवतात॥ सोसुकमांडिलरिषिकौंदइ
तहादेवविधभावरभइ॥ भावरहोइचुकीसोजवही:
त्रि,याविप्रतवपूछीतवही॥ ईनकौंकहांदाइजौदी
यौं॥ जामेंधर्महोइसोकियौं॥ कलहामंडफडारे
टोर॥ गईविप्रकौंहाथमरोर॥ देकिवारघरमेंपरर
हीं॥ पियसोंवातकछुनहींकही॥ तवहिसुमागपि
ताधनरयो॥ याविधविराकरतसोभयो॥ तवर॥
थऊपरलईचढाइ॥ एकनदीपरपहुचैंजाइ॥ त
हांडुफेरिवेराभइ॥ न्हानकाजजलनिकटसुगई
तहांरुंडनारिनकौंदेषौं॥ गईसुसीलातहांविसे॥
ष॥ पतिकीअग्यालैंसोआइ॥ जाईत्रियनमेंठाडी
भई॥ पूजाकरतदेषियौंतहैं॥ वातसुसीलाउरमींस॥
ही॥ यहव्रतकहैंकौंनकौंआई॥ काकीपूजाकर
तवनाइ [illegible] फलउपवासेंहोइ॥ हमकौंविध
समझावो [illegible]॥ अपछरा उवाच ॥०॥ चौदहत॥
गाजौडोराहोइ॥ गांठेचौदहदीजेंसोइ॥ ताकौंध्याप

पटापर धरियौ ॥ सब विधि कर तुम पूजा करियौं ॥ धूप दी
प कर चंदन लीजै ॥ नैवेद अरु बीरा दीजै ॥ तिन कौ वस्त
र स्वेत चढाई ॥ चौदह पुआ वनाय चढाई ॥ तिन मै आधे
विप्रन देई ॥ आधे वचै सो आपुन लेई ॥ निर्मल जल अ
स्नान कराई ॥ नदी तीर पूजौं मन लाई ॥ तब वेगडा लेत
है तहां ॥ वांये कर त्रिय वांधे तहां ॥ पुरष दाहनै कर सौं
धरैं ॥ बीते वरष तवै व्रत करैं ॥ ऐसी विधि पुन वोहर वनावै
सो नर कभी दुष न हि पावैं ॥ तव ही सुशीला कों व्रत दियौं
ताके हाथ गडा वांधियौं ॥ नैवेद ताकौं पुन दई ॥ लिये सु
सीला पति पै गई ॥ सपरषा रत्न यौ सामरु षाई ॥ अपने
नग्र यहु चेंजाई ॥ व्रत प्रताप तव लछमी भई ॥ सो तौ जा
ति का परवरनई ॥ गाइ भैंस लक्ष्मी जु अपार ॥ सोनैं
रूप भरे भंडार ॥ अंन्न धन लक्ष्मी बहु भई ॥ वरनी कहीं
कौं न पैं जाई ॥ आभषन ताकौं वनवाये ॥ वहुत भांत
वरनौं तें गारे ॥ सुष संजोग भोग अति करैं ॥ अति आनं
द सहित यौ परे ॥ एक दिना दधि भावत तहां ॥ पुरिष
सुसीला देषी जही ॥ गंडा वधौ कर देषौं जवें ॥ महारोष
अति कीनौं तवैं ॥ त्रिय मन होत त्रस्ना अति षरी ॥ इतनै
गहनै त्रयतन भई ॥ सो नौं वृत [illegible] नैं दयौं ॥ डोरा
तउ हाथ वांधयौं ॥ रिस कर डार [illegible] ग आई ॥ दीनौं
वाहर अग्निम हि नाई ॥ तव ही सुसीला दुष वाहु कियो

अन॰ इथबुगाई आपसोपियौ ॥ ताकेदोषजोघरघरभयो ॥ सो
१०८ सबपलकमांरु उडगयो ॥ गाईभैसजोहतीअपार ॥ तेस
बटुढलईतिहिवार ॥ अंनधनजबकछुनरहो ॥ तबही
त्रियासौंब्राह्मनकहौ ॥ ईस्त्री कहाभयोयोकाम ॥ तब
त्रियकहोरुठियोराम ॥ तुमअनंतकोंकीनौंद्रोह ॥ तातें
तुमकौंउपजौंछोह ॥ जिनकीदईलछमीभई ॥ तिनके
द्रोहसबेयहगई ॥ दोहा ॥ यहतोगंडाअनंतकोंइंद्रा ॥
नीमोहिदीन ॥ सोतुमकरतैंछोडकैंअग्निमांझगहि
दीन ॥ चौपई ॥ तबहीरषीसरबोल्यौंतहां ॥ मैंजैहौं ॥
अनंतजंतहां ॥ कैंमैंतिनकौंदरसनकरौं ॥ केंउधा
नप्रानपरिहरौं ॥ तबबहगयोंमहाउधान ॥ मानसस
बतुमसुनियोकांन ॥ तहां आमतरूदेषोजाई ॥ ता
कैंफलकोइनहिषाई ॥ फूलोंफलोंमहांअधिकाई
कीरायरेफलनमैंजाई ॥ तबहीं आमतरूबिप्रसो
कही ॥ कौनकाजआऐतुमइतिही ॥ तबब्राह्मनक
हियोंसमुझाइ ॥ हमअनंतजूकेंढिगजाइ ॥ आमक
हीतुमकहियोंजाइ ॥ मेरेफलकोउनहिषाइ ॥ आ
गेंदोउतलेंषेआई ॥ तेजलभरीमहाअधिकाई ॥
तिनपनक... ...पनोभेव ॥ जलनहिपीवेंकोउदेव
बहुतजीव... ...थेपरें ॥ ताकेंजलकेसेंआचरें ॥
अबतुमपूछआईयोसोई ॥ जासेंसुगतहमारीहोई ॥

फेरविप्रजबआगेंगऐं। पापीअजगरदरसनदऐ॥
आधौतौबामीमेंरहैं। आधौअंगबाहरौरहैं। तबही
विप्रदेषियौनेन॥ फेरतासौं यौंबोलेबेंन। तुमअ
नंतदेवपरजात। तहांपूछियौंमेरीबात। फेरवि
प्रआगेंगऐजहां। वछासहितगाइ हुती हां। तासौं
विप्रपूछियौंवेंन। कहुंअनंतदेषियौनेंन। गा
इविप्रसौंनांहीकरैं। तबहिविप्रआगेंपगधरैं। गद
हु अरु हाथी देषियो। तिनहुसौंपुनिकहिलेषि
यौं। तिनदेषैंकीनांहीकरी। तबमनसाआगें
कौंधरी॥ घोरहिकेफेरउद्यांन। वनौसाजसब
सहितपलांना॥ कोउद्यांननबांधेताहीं। दृनौंघा
सकहांतेंषाई॥ तहांअतिश्रमब्राह्मणकोंभयौ
ब्रह्मविप्रहोइदरसनदयौं। पूछीआईविप्रसौंबात
कहांविप्रतुमवनमैंजात। तबरिषकहियौंबा
ततुरंत। देषोंचाहतदेवअनंत। जोमोकोदरसन
नहिंहोई। तोमेंप्रांनछांडहौंसोई। जबनिअकुर
जानतभऐ। तबप्रतक्षहोइदरसनदऐ। चारभु
जासबआवधसाथ। संषचक्रपीतांबरसाथ॥
गदगदबानीबोलेबेंन। माथें... मलदल
नयन। तबब्रांह्मनसौंतालेंजाई... नेअस्थान
दिषायोसोई॥ प्रेंमसहितब्राह्मणउच्चरई॥

अं० १०९

गद्गदवांनीताकीभई ॥ मैपापीअतिहतोंअपारा: तुमयुनीतकीनौंकरतारा ॥ जन्मसुफलमेरौभयो आज ॥ सबसुभभएहमारेकाज ॥ ताकौंतीनरहैबर दांन ॥ निश्चैहूहैं पूरनकांम ॥ तकबहूंनदरिद्रीहोई ॥ धर्मदसाविसरैनहितोहि ॥ पुनयहदेवछांडहैंजही उतिमलोकपावहैंतबही ॥ ब्राह्मनपाईचकौवरदा नां ॥ सबकीसुधभईताथांना ॥ गाईबैलघोरेकोआ ई ॥ पोकरहाथीआमसुनाई ॥ कौंनगधाकोअजग रभयौं ॥ अनंतउवाच ॥०॥ आमरूपनअतही सोभयो ॥ अपनौदर्भनकाहूदयौं ॥ गाईआईम्र थीसुनसोई ॥ गिलेंबीजउपजैंनहिकोई ॥ हाथी न्रपतअधर्मीआई ॥ गदहाप्रोहतदयौवताई ॥ जोकछुधर्मन्रपतसोकरै ॥ अपनेंघरलेप्रोहत धरैं ॥ पोषरदोउसहिनेकरी आपुसमाफदया नहीभई आपुसमेंनवाईनोदयो तातेंजन्मपो षरकौभयों अजगरवडोपंडितभयौं अपनौं गुनकाहूनाहिदयों घोरोस्वामीरनमैंडार आ यौभागगुसाईमार अवजोसमाधांनजोकीजै सबहीकौंअ[illegible]रथीजौं तबसबहीकौंहूहेका जा तुमकौं[illegible]वडोफलआजा चौदहवर्षजेवत तकरहौं तवतुमसबवातननिस्तरहौं मनोका

मनातुम्हरीपूजें यातेनहीऔरव्रतइजै जोया
कथासुनेंकरध्यानां वाढैतिनकोधनसंताना॥
अरुजेंकहैंचित्तधरसोई सकलकामनापूरन
होई इतीसंसकृतसुनियोंकांन भाषीमेघर
जेपरधानां फिरब्राह्मणताकेंढिगआयौं करो
जतनजौहरिसमुझायौं सवहीकोउद्धारजोभयौ
तवब्राह्मणअपनेंघरगयौ तहालछमीदेषीध
नी प्रथमहिसदेषीअतिघनी भरौभंडारदेषि
यौजाई सुषसलितादेषीन समाई जैसैं रंकम
हानिधपावें गयौरत्नफिरहाथैआवें जोसुष
पावतचंद्रचकोर सोसुषपावतगिरवरमोर:
ईतनोसुषविप्रकौंभयौ वरननमेघराजनेंका
ताकीनारगर्भतवठयो दिनपूरेंसवालकभयो
तासअनंतनामतिनधरो महासुलछनवह
अवतरो वालविनोदकरैअतिमहा कहेतोन
शिवातैतहा सोसुषप्रथमीमेवरनयो सोसव
मानविप्रनेलयो जोसुषचलआयौसिंसार ते
सवभुगतेसवपरिवार परवीकुष्ट परेजव आई
तहाधर्मअतिकरैवनाई द[illegible] अतिकरैसं
जोई द्वारविमुषजाइनेंहिकां[illegible] विप्रआवलओ
यौअंत तवपहुचौवोलोक अनंत अवयहक
यासमगलभई मेघराजकविभाषाकही ॥७॥

इति अनंतव्रतकथा संपूर्णं समाप्तः॥ शुभं भवतु मंगलं॥ संवत १९२२

[illegible]



ॐ नमो कालेस्वरी मवंम्मदे भुरि
तामोदुं घ्र जामोहं सव्रुप्रि ठ मोहे मरव
ह्रीयफ ले स्वहा ॐ हल्लं मं ताव लवं तावु घ
वृ तानगरवै टमाज करंता जोम्प्रावैं मार
मरकरंता सोननर जायपावृपरंता

ॐ श्रीगणेशाय नमः

श्री राम चन्द्र भगवान् जि की जै मैय्या सीता जी
की जै हनुमान की जै शत्रुघ्न भरत की जै लक्ष्मण
जती की जै आज मिती आश्विन सुदी १०
विजयदशमी शुक्र वार संवत १९८०
को भगवान राम चन्द्र जी की पूजा की

किशोरी लाल शर्मा
पटिया (ला)





गो०

॥श्रीगणेशायनमः॥श्रीसूतोवाच॥पुरातुजान्हवीतीरे ... र्मोधर्मपरात्कमः

॥जरासंधवधार्थायराजसूयंसमाचरेत॥१॥कस्तेनलहधर्मोसोभीमा

र्जुनसमन्वितः॥यज्ञसालांप्रकुर्वीतनानारत्नोपशोभितां॥२॥मुक्ताफल

समायुक्तांमहेंद्रालयसंन्निभां॥यज्ञार्थेभूपतीन्सर्वान्समाहूयप्रय

त्नतः॥३॥गांधारीतनयोराजासर्वैःसान्नपसूदनः॥दुर्योधनस्तुविख्यातो

समागत्यमखालयं॥४॥दुर्योधनस्तुन्नपतेःमागतोजलमोदृशं॥उर्ध्व

कंचुकमापन्नोगछन्गछन्शनैःशनैः॥५॥ततोगछन्महीपालोजलंम

ध्येपपातह पुनः सर्वेन्नपाश्चैव स्ययस्चतपोधनाः॥६॥स्मितमकाशि

ताःसर्वेद्रौपद्यादिवरांगनाः॥द्रौपद्यादिस्त्रियःसर्वास्मितवक्त्रासुलो

चनाः॥७॥महाराजाधिराजोसोमनःक्रोधसमन्वितः॥निवारितास्वकं

राज्यंमातुलेनाव्रतोन्नपः॥८॥तस्मिन्कालेतुशकुनिःप्रोवाचमधुरंवचः कथा०

१

